झीनी-झीनी बीनी चदरिया

काहे कै ताना काहे कै भरनी,
कौन तार से बीनी चदरिया।

इड़ा पिङ्गला ताना भरनी,
सुखमन तार से बीनी चदरिया।

आठ कँवल दल चरखा डोलै,
पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया।

साँ को सियत मास दस लागे,
ठोंक ठोंक कै बीनी चदरिया।

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी,
ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।

दास कबीर जतन करि ओढ़ी,
ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया।

—कबीरदास

Printed By : ANANG PRAKASHAN # 9540176542

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

उहल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ■ वार्षिक पत्रिका, अंक-2, सितंबर 2023

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

उहल

वार्षिक पत्रिका, अंक-2, सितंबर 2023

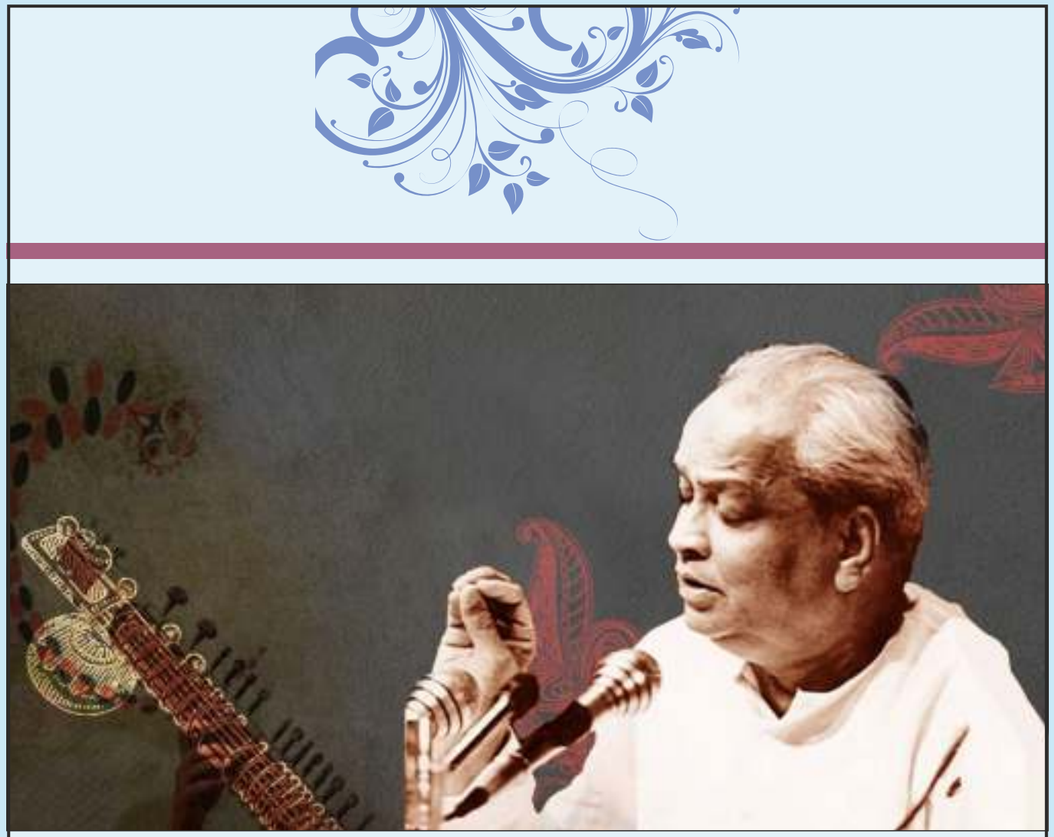

कुमार गंधर्व

(8 अप्रैल 1924 – 12 जनवरी 1992)

आधुनिक युग में कबीर के पदों को अपना विलक्षण स्वर देने वाले पंडित कुमार गंधर्व, जिन्होंने कबीरियत को अपने गायन के ज़रिए पुनः आविष्कृत किया, उनकी स्मृति में 'उहल' का यह अंक प्रणामपूर्वक निवेदित है।

नियम–निर्देश

- उहल के आगामी अंक हेतु अपनी मौलिक रचनाएँ भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएँ यथा संभव टाइप हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया चित्र तथा आंकड़ों से संबन्धित आरेख स्पष्ट होना चाहिए।
- अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान के हिन्दी प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- उहल में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा हिन्दी प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाओं में प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिन्दी भाषा में हों।

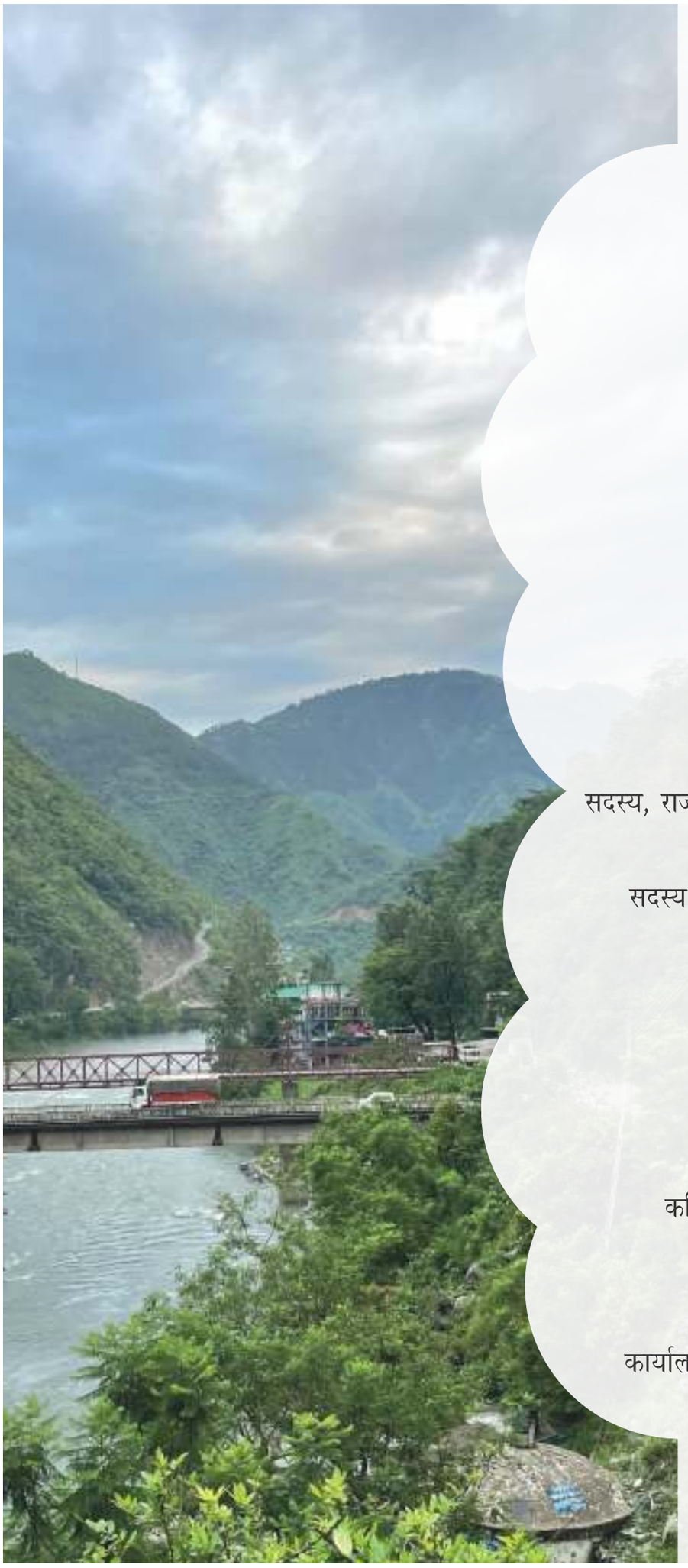

साभार

संपादक - मंडल

उहल परिवार

संरक्षक

प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा

निदेशक, भा.प्रौ.सं. मंडी

मार्गदर्शन

प्रोफेसर सतिन्द्र कुमार शर्मा

प्रभारी-कुलसचिव, भा.प्रौ.सं. मंडी

परामर्श मण्डल

डॉ. सुमन एवं डॉ. अतुल धर

सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति भा.प्रौ.सं. मंडी

डॉ. नेहा कौशिक एवं श्री सुरेश रोहिल्ला

सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति भा.प्रौ.सं. मंडी

मुख्य संपादक

डॉ. सौम्य मालवीय

प्रभारी- हिन्दी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. मंडी

संपादक एवं अनुवाद

श्री नितिन सिंह तोमर

कनिष्ठ अधीक्षक-राजभाषा, भा. प्रौ.सं. मंडी

संपादन सहयोग

श्रीमती लावण्य प्रभा

कार्यालय सहायक-हिन्दी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. मंडी

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक 5

कुलसचिव 7

संपादकीय

मुख्य संपादक 8

रिपोर्ट 9

साक्षात्कार

डॉ. निथी वडक्कन अलेक्जेंडर एवं डॉ. तीर्थंकर चक्रवर्ती 28

शोधार्थी मुस्कान धांधी 30

साहित्यिक यात्रा

जिस्मानी ताल्लुकों का रूहानी शायर - जॉन एलिया - अनुग्रह रावत 32

वो लौट आए हैं - अनुराग रावत 34

अ लेटर टू माय लॉन्ग डिस्टेंस गर्लफ्रेंड - नितिन सिंह तोमर 37

सूफी कविता : प्रेम और दर्शन - कुमार अभिनव मिश्रा 41

समाज में तार्किक सोच की आवश्यकता - डॉ. निधि शर्मा 42

हिमाचल प्रदेश की लाहौल जनजाति - वंदना 43

भवजाल - तेजेन्द्र शर्मा 47

नशा निवारण - सुभाषिनी 50

मेरी प्यारी बिटिया 'आन्या' - सुनील चौहान 51

नदी गायब है - एस. आर. हरनोट 52

राष्ट्रीयता - गणेश शंकर विद्यार्थी 57

कविताएँ

मौन - अनुज कुमार शुक्ला 59

ग़ज़ल - अमित मेंदौला 60

हिंदी की जीवन यात्रा - आशीष श्रीवास्तव 61
बिटिया - आशू 62
मातृभाषा, मात्र एक भाषा - तिलक राज 63
बचपन बीत गया - देवाश्रिता रॉय चौधरी 64
कर्त्तव्य - नेहा जसवाल 65
अंतिम मुलाकात - बंसी 66
भूल चुकी है वो - मिन्नी कौर 67
जोशीमठ - डॉ. सौम्य मालवीय 68
पिता की सीख - सुदामा बाबू सिंघल 72
आन-बान और शान - हेमन्त लाटा 73
दो ग़ज़ल - हिमाशु पंत 74
किस्सा चाय का - भूपेन्द्र सिंह 75
बढ़े चलो - संदीप सैनी 76
हाय सरकार! - सतीश कुमार 77
मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको - अदम गोंडवी 78

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों!!

हिमाचल प्रदेश की शांत, सुरम्य मनोरम वादियों के मध्य मंडी जनपद के कमांद में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी स्थित है, जो इन वादियों के बीचों-बीच नवाचार और शिक्षा का प्रतीक है। अपनी सांस्कृतिक जड़ों को अपनाते हुए और हिंदी के विकास को बढ़ावा देते हुए, संस्थान गर्व से हिंदी पत्रिका 'उहल' का यह नया अंक प्रस्तुत करता है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी की 'उहल' पत्रिका एक ऐसा संगम है, जहाँ ज्ञान, संस्कृति और समाज का समागम होता है। हिमालय के सुरम्य परिदृश्य में स्थित, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी प्रकृति की शांति के साथ आधुनिक शिक्षा के मिश्रण का एक प्रमाण है। वर्ष 2009 में स्थापित, संस्थान तेजी से तकनीकी उन्नति के केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता पर बल्कि समग्र विकास पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

यह सर्वत्र विदित है कि हिमाचल प्रदेश राज्य समृद्ध संस्कृति और परंपराओं से परिपूर्ण है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी, हिमाचल प्रदेश राज्य की इस सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के महत्त्व को पहचानता है। 'उहल' पत्रिका के माध्यम से, संस्थान अपने पाठकों में अपनेपन और गर्व की भावना को बढ़ावा देते हुए, हिमाचल प्रदेश की जीवंत परंपराओं, त्यौहारों और कला रूपों को प्रदर्शित करने में प्रयासरत है।

भारतीय तथा वैश्विक संदर्भ में हिंदी भाषा के महत्त्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। आपको जानकर हैरानी होगी कि हिंदी भाषा, चीन देश की मंडारिन के बाद, विश्व में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। दुनिया भर में कुल मिलाकर लगभग 585.5 मिलियन लोग हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। यह एक ऐसी भाषा है, जो भौगोलिक और भाषाई बाधाओं को पार करते हुए एक संपूर्ण भारत को एक साथ बांधती है। यही एक प्रेरणादायक बात है कि राजभाषा के रूप में हिंदी को

बढ़ावा देने की भारत सरकार की नीति विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा देने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

'उहल' पत्रिका केवल एक पत्रिका नहीं बल्कि संस्थान में आपसी संबंधों को भी बढ़ावा देती है - अतीत और वर्तमान के बीच, शिक्षा जगत और संस्कृति के बीच, ज्ञान प्राप्त करने वालों और ज्ञान देने वालों के बीच। यह हिन्दी पत्रिका एक जीवंत पुल है, जिससे विचार अलग-अलग ज्ञान क्षेत्रों के बीच निर्बाध रूप से प्रवाहित होते हैं।

जिस तरह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी बेहतर कल के लिए युवा सोच को तैयार करता है, उसी तरह 'उहल' पत्रिका भाषाई और सांस्कृतिक संबंधों का पोषण करती है। हिंदी भाषा और इसकी सांस्कृतिक समृद्धि का जश्न मनाते हुए, यह पत्रिका अगली पीढ़ी के लिए उभरती दुनिया को अपनाने के साथ-साथ अपनी जड़ों को संजोने के लिए प्रेरणा है।

मैं पुनः इस बात पर बल देना चाहूँगा कि 'उहल' केवल एक पत्रिका नहीं है, यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के मूल्यों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है। यह विविधता के बीच एकता के आदर्शों, परंपरा और प्रगति के मिश्रण और एक एकीकृत शक्ति के रूप में भाषा की सुंदरता को बढ़ावा देती है। जैसे-जैसे 'उहल' पत्रिका का विकास जारी है, यह निःसंदेह एक संबंध बनाए रखेगी और अपने पाठकों के हृदय में अपनेपन की भावना को बढ़ावा देगी और हम सभी को स्मरण करवाएगी कि जैसे-जैसे हम नवाचार की दुनिया में आगे बढ़ते हैं, हमारी जड़ें हमारी यात्रा का एक अनिवार्य हिस्सा बनी रहती हैं।

इस हिंदी पत्रिका के निर्माण में शामिल सभी लोगों के साथ-साथ प्रत्येक पाठक को मेरी मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

–प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा

निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों!!

'उहल' पत्रिका के इस दूसरे अंक की प्रस्तुति के साथ, मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। यह संस्करण हिमाचल प्रदेश की समृद्ध संस्कृति, यहां के लोगों की गहन अंतर्दृष्टि और हमारे संस्थान की वैज्ञानिक, तकनीकी और नवीन प्रगति पर प्रकाश डालता है। 'उहल' का मुख्य उद्देश्य अपने लेखों के संकलन के माध्यम से राजभाषा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना है। हमारे संस्थान के भीतर हिंदी का उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है और अब, तकनीकी क्षेत्रों में भी इसकी उपस्थिति का विस्तार करने के लिए एक ठोस प्रयास चल रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी इस प्रयास में तत्परता से आगे बढ़ रहा है।

समकालीन दुनिया में, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीन खोजों में वृद्धि देखी जा रही है। बढ़ी हुई दक्षता के साथ कार्यों को निष्पादित करने के लिए विविध सॉफ्टवेयर समाधान तैयार किए जा रहे हैं। उन्नत राष्ट्र इन 'सॉफ्टवेयर' को अपनी मूल भाषाओं में बना रहे हैं, जिससे वैश्विक सूचना क्रांति को बढ़ावा मिल रहा है। विशेष रूप से, भारत भी इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रहा है, हमारे वैज्ञानिक लगातार अपनी उल्लेखनीय प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके अथक समर्पण के माध्यम से, 'परम' सुपरकंप्यूटर जैसी परियोजनाओं को साकार करना संभव हो गया है। इस संदर्भ में, राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास को बढ़ावा देना और इसके उपयोग को डिजिटल प्लेटफार्मों पर बढ़ाना अनिवार्य है। विभिन्न सॉफ्टवेयर उपकरण हिंदी-आधारित कार्य को पूरा करते हैं, यहां तक कि शुरुआती लोगों को भी प्रबोध स्तर तक भाषा सीखने में सक्षम बनाते हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में कंप्यूटर उपयोग में निपुणता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए समर्पित है। किसी भी राष्ट्र का तकनीकी विकास उसकी भाषा से गहराई से जुड़ा होता है। प्रौद्योगिकी, विकास और भाषा की तिकड़ी आपस में जुड़ी हुई है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के लोकतंत्रीकरण के लिए, जनता के बीच प्रतिध्वनित होने वाली भाषा महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती है सभी राष्ट्रों को इससे संबद्ध तकनीकी शब्दावली को समाहित करने के लिए नवीन अभिव्यक्तियाँ तैयार करनी चाहिए। कहना न होगा कि हम भा. प्रौ. सं. मंडी में इस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं।

"उहल" हिमाचल प्रदेश राज्य की संस्कृति, प्रौद्योगिकी, विकास और भाषा के सामंजस्य में हिंदी की अपरिहार्यता को रेखांकित करती है। साथ ही सरस साहित्य के माध्यम से हिन्दी के एक सजग पाठक वर्ग को लक्ष्य भी करती है। हमें आशा है कि इस प्रयास का संस्थान में और इसके इतर भी भरपूर स्वागत होगा। हार्दिक शुभेच्छा सहित...

–प्रोफेसर सतिन्द्र कुमार शर्मा
प्रभारी-कुलसचिव, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से...

प्रिय साथियों,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी की सांस्थानिक पत्रिका 'उहल' को हम आपके हाथों में सौंपते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। इस पत्रिका को संस्थान के शिक्षक, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं की रचनाएँ तो सुशोभित कर ही रही हैं, इसमें मंडी और हिमाचल के स्थानीय लेखकों ने भी अपना रचनात्मक योगदान दिया है। इसके अलावा हम धरोहर स्वरूप हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं विचारकों को भी इन पृष्ठों में पढ़ सकते हैं। संसाधनों और रचनाओं की उपलब्धता की सीमा देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि इसके बावजूद यह अंक सार्थकता और सौष्ठवता का आभास देगा। आप पाठकों की प्रतिक्रियाएँ और बेहतर तथा गंभीर अंक निकालने में हमारे लिए मददगार साबित होंगी और क्या पता आप में से ही कुछ सुधीजन अगले अंक के लिए रचनाएँ भेजने को प्रेरित हो जाएँ। इसी से इस पत्रिका के प्रति आपका अपनापन बढ़ेगा और यह संस्थान का श्रेष्ठ ढंग से प्रतिध्वनित्व कर सकेगी। हम भविष्य में आपसे अधिक गहरी और सक्रिय हिस्सेदारी की अपेक्षा रखते हैं।

भाषा का प्रश्न एक संवेदनशील मुद्दा होता है। अक्सर हम इसे अस्मिता के एक संकीर्ण पक्ष की तरह देखते हुए मिथ्या गौरव और अभिमान धारण कर लेते हैं। ऐसे में भाषा जोड़ने का नहीं तोड़ने का जरिया बन जाती है। इससे सबसे अधिक नुक्सान भाषा का ही होता है। भाषा के सलिल प्रवाह पर बाँध बना कर हम उसके जीवनदायी स्रोत सुखा देते हैं और वह जकड़ी हुई और भावनाहीन बन जाती है। भाषा तो दरअसल तब पुष्पित-पल्लवित होती है जब वह सहज इस्तेमाल में बनी रहे और अपनी ग्रहणशीलता को बनाये रखे। 'उहल' का प्रयास भाषा के इसी सरस स्वरूप को आप तक पहुँचाना है न कि किसी थोथी अस्मिता का आडम्बर धारण करना। हमें आशा है कि 'उहल' संस्थान में और उससे बाहर संवाद के नये पुल बनाएगी एवं अनुवाद इत्यादि के जरिये अन्य भाषाओं के आलोक से भी अभिसिंचित होती रहेगी।

हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं जब सार्वजनिक जीवन में भाषा का गहरा अवमूल्यन हुआ है। मीडिया और अखबार की भाषा हो, राजनीति या आपसी बोलचाल की, सम्प्रेषण क्षीण हुआ है और भटकाव एवं हिंसा बढ़ी है। एक प्रौद्योगिकी संस्थान में, अपने छोटे से स्तर पर ही सही, हम भाषा की गरिमा एवं उसके समावेशी स्वभाव की अहमियत को रेखांकित करने का महत्त्व समझते हैं। विज्ञान और तकनीक के विषय अक्सर शुष्क और भाषामुक्त सत्यों का भ्रम पैदा करते हैं एवं समता और सौहार्द जैसे नैतिक मुद्दों से असम्बद्ध जान पड़ते हैं। पर ऐसा नहीं है। भाषा हमारा पर्यावास होती है एवं हमारे हर उद्यम में अभिन्नता से रची-बसी होती है। हम भाषा की व्यावहारिक एवं नैतिक चेतना के पुनर्वास को लेकर प्रतिबद्ध हैं और साथ ही यह भी जानते हैं कि यह तब तक नहीं हो सकता जब तक आचार-व्यवहार में एक आलोचनात्मक सजगता का विकास न हो।

'उहल' इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास भर है पर हमें उम्मीद है कि इससे एक लकीर तो खिंचेगी ही। हम इसके निरंतर अग्रसर होते जाने की कामना करते हैं। अभी इतना ही...

–डॉ सौम्य मालवीय
प्रभारी हिन्दी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. मंडी

प्रतिभा के 10 वर्ष : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने 462 छात्रों को स्नातक की उपाधि के साथ 10 वां दीक्षांत समारोह मनाया

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी (भा.प्रौ.सं. मंडी) ने अपने 10वें दीक्षांत समारोह की मेजबानी करते हुए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाया। इस कार्यक्रम में 5 दिसंबर, 2022 के शुभ दिन पर 348 छात्र और 114 छात्राओं सहित 462 छात्रों को स्नातक की उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर भा.प्रौ.सं. मंडी की शैक्षणिक यात्रा में एक नई उपलब्धि स्थापित करते हुए रिकॉर्ड तोड़ 64 पीएचडी उपाधियाँ प्रदान की गईं।

आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों ने समारोह की भव्यता बढ़ाई। इसमें अमेरिका के एरिजोना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्टुअर्ट आर हैमरॉफ ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनके साथ प्रतिष्ठित हस्तियाँ थीं— विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (एसईआरबी), नई दिल्ली के सचिव डॉ. अखिलेश गुप्ता, हिताची इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु के निदेशक डॉ. किंगशुक बनर्जी और कोइका इंडिया, नई दिल्ली के निदेशक श्री वूचन चांग, जिन्होंने सम्मानित अतिथि की भूमिका निभाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईआईटी मंडी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम व्रत द्वारा की गई।

10वें दीक्षांत समारोह में उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए, प्रोफेसर स्टुअर्ट आर हैमरॉफ ने कहा कि चेतना ब्रह्माण्ड की एक मूलभूत संपत्ति है। क्वांटम मस्तिष्क जीव विज्ञान में एक 'आंतरिक पदानुक्रम' भारतीय ज्ञान प्रणालियों (जैसे 5 कोष) के अनुरूप है। क्वांटम अवस्था में कमी मस्तिष्क पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों पर हो सकती है— 'आत्मान से ब्रह्म'। गहरे आंतरिक स्तरों पर, चेतना जीव विज्ञान से स्वतंत्र अंतरिक्ष-समय ज्यामिति में मौजूद हो सकती है। जबकि दर्द रहित, सुरक्षित और सुखद मस्तिष्क अल्ट्रासाउंड के साथ सूक्ष्मनलिका अनुनाद उदाहरण के उद्देश्य से उपचार मानसिक और संज्ञानात्मक विकारों का इलाज कर सकते हैं।"

अपने संबोधन के समापन शब्दों में, प्रोफेसर हैमरॉफ ने छात्रों को भविष्य में क्वांटम कंप्यूटिंग और क्वांटम बायोलॉजी पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

प्रो. स्टुअर्ट आर. हैमरॉफ, एम.डी., टक्सन के एरिजोना में एरिजोना विश्वविद्यालय में चेतना अध्ययन केंद्र के निदेशक हैं। इन्होंने सौ से अधिक विद्वतापूर्ण लेखों और पुस्तक अध्यायों के भंडार के साथ, अपने ज्ञानवर्धक व्याख्यानों से वैश्विक दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है। साथ ही, अपने शैक्षणिक कौशल से परे, प्रोफेसर हैमरॉफ ने चेतना के विज्ञान पर एक प्रभावशाली पाठ्यक्रम संचालित किया, जिससे आईआईटी मंडी में विद्वान दिमागों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान पहल को बढ़ावा मिला।

इस 10वें दीक्षांत समारोह में उल्लेखनीय रूप से, आईआईटी मंडी में विभिन्न विषयों में महिला स्नातकों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2022 के स्नातक कार्यक्रम में कुल 33 महिला छात्र हैं; स्नातकोत्तर और परास्नातक कार्यक्रमों में 49, पीएच.डी. में 28 और आई-पीएचडी कार्यक्रम में 04 ने पिछले वर्षों की तुलना में आईआईटी मंडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईआईटी मंडी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम व्रत ने अपने संबोधन में कहा कि आईआईटी मंडी ने छात्रों को अच्छा इंसान और सफल पेशेवर बनने के लिए अच्छे दृष्टिकोण, ज्ञान और कौशल से सुसज्जित किया है। अब 'गुरु दक्षिणा' का समय है। आईआईटी और उन शिक्षकों से मिली सीख के साथ अपना शेष जीवन जीने से बेहतर कुछ भी नहीं, इससे अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं, जिन्होंने समावेशी और सतत विकास के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित और मदद की है। अपने संबोधन के समापन शब्दों में, प्रोफेसर प्रेम व्रत ने कहा कि जीवन भर विद्यार्थी बने रहें, खुला दिमाग रखें और जीवनभर सीखते रहें।

10वें दीक्षांत समारोह में नवीन स्नातक छात्रों को बधाई देते हुए, आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा ने कहा कि मैं अपने सभी स्नातक छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। वे संस्थान के पथप्रदर्शक बनेंगे। मुझे यकीन है कि उनकी पेशेवर दक्षताएं और समझौता न करने वाला चरित्र उन्हें विभिन्न तरीकों से समाज का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाएगा। उनकी सफलता आईआईटी मंडी की भी सफलता होगी। अपने संबोधन में प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा ने आगे कहा कि आने वाले वर्षों में, मेरा ध्यान संकाय सदस्यों और अनुसंधान विद्वानों को ऐसे प्रभावशाली शोध कार्यों को प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करने पर होगा, जो दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के बराबर हों। हमें अपने आस-पास की वास्तविक समस्याओं का समाधान करना चाहिए, जो आसपास के लोगों के जीवन को प्रभावित करेंगी। अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करने के लिए, हमने संकाय सदस्यों के लिए सीड ग्रांट को 5 लाख से बढ़ाकर 15 लाख कर दिया है।

10वें दीक्षांत समारोह के समापन पर इस वर्ष के वेलेडिक्टोरियन भाषण को प्रस्तुत करते हुए, श्री आशीष आनंद, इंस्टीट्यूट सिल्वर मेडल, बी.टेक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, 2022 बैच के छात्र ने कहा कि आईआईटी मंडी में शामिल होने के बाद, हमने जीवन के उस हिस्से से गुजरना शुरू किया, जो हम पिछले 4 वर्षों से जी रहे थे, यानी व्याख्यान, प्रयोगशाला, असाइनमेंट, क्विज और अंतिम सेमेस्टर परीक्षाएं और इंटरकॉलेज कार्यक्रमों में भागीदारी। इन शैक्षणिक व्यस्तताओं के समानांतर, हम यादें भी बना रहे थे– चाहे वह व्याख्यान या कैंपस टूर के बाद कॉमन रूम में टेबल टेनिस खेलना हो या आधी रात को जन्मदिन मनाना हो या ट्रेक और यात्राओं पर जाना हो या त्यौहार मनाना हो। मैं इन अंतहीन यादों के लिए भा.प्रौ.सं. मंडी समुदाय और हमें अत्यंत जुनून के साथ पढ़ाने के लिए संकाय सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूं।

स्वर्ण पदक विजेता

भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक

श्री पीयूष गोयल

बी.टेक, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, 2022 बैच

आईआईटी मंडी के निदेशक का स्वर्ण पदक

श्री भुमन्यु गोयल

बी.टेक, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, 2022 बैच

संकाय सदस्यों को उत्कृष्टता सम्मान के साथ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने अपना 14वां स्थापना दिवस मनाया

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने 1 मार्च 2022 को अपना 14वां स्थापना दिवस मनाया। इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के अध्यक्ष प्रोफेसर टी.जी. सीताराम और विशिष्ट अतिथि के रूप में टाटा केमिकल्स के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी श्री वेंकटाद्री के.आर. की विशिष्ट उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में संकाय, कर्मचारी, छात्र और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया। साथ ही, आईआईटी मंडी के बोर्ड ऑफ गवर्नर के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम व्रत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

स्थापना दिवस पर, स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज की डॉ. गरिमा अग्रवाल और स्कूल ऑफ मैकेनिकल एंड मटेरियल इंजीनियरिंग के डॉ. सनी जफर को इस साल का यंग अचीवर्स अवॉर्ड मिला, जबकि स्कूल ऑफ कंप्यूटिंग एंड इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के डॉ. हितेश श्रीमाली, डॉ. अतुल धर, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, डॉ. अमित जयसवाल, स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोइंजीनियरिंग, स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेज की डॉ. नीतू कुमारी और स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज की डॉ. श्यामश्री दास गुप्ता को यंग फैकल्टी फेलो 2023 प्राप्त हुआ।

डॉ. गरिमा अग्रवाल को NASI-यंग साइंटिस्ट प्लैटिनम जुबली अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है। यह वार्षिक वैज्ञानिक पुरस्कार क्षेत्र में डॉ. गरिमा अग्रवाल को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए 'रासायनिक विज्ञान' श्रेणी में दिया गया है। इसी के साथ, स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड

बायोइंजीनियरिंग के डॉ. बास्कर बक्थावचालू को ईएमबीओ ग्लोबल इन्वेस्टिगेटर नेटवर्क में शामिल होने के लिए एक नए सदस्य के रूप में चुना गया है।

स्थापना दिवस के अवसर पर एआईसीटीई के अध्यक्ष, प्रोफेसर टी.जी. सीताराम ने संस्थान को संबोधित करते हुए कहा, "आईआईटी मंडी अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति के निर्माण में प्रशंसनीय काम कर रहा है। हम चैटजीपीटी युग में हैं, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी दुनिया पर कब्जा कर रही है। हम विघटनकारी नवाचार के युग में हैं। तकनीकी शिक्षा में 'विश्व गुरु' बनने के लिए हमें अपने संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता को और बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम अपने देश और दुनिया में बड़ा बदलाव ला सकते हैं।"

इस अवसर पर अपने संबोधन में, आईआईटी मंडी के निदेशक प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा ने कहा, "पिछले वर्ष में, आईआईटी मंडी ने अनुसंधान, शिक्षा और कौशल विकास में अग्रणी बने रहने के लिए कई पहल की हैं। हमने हाल ही में, बिग डेटा एनालिटिक्स के संदर्भ में उद्योग की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए डेटा साइंस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में एक अद्वितीय दो-वर्षीय एमबीए डिग्री प्रोग्राम लॉन्च किया है। भारत सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप, संस्थान ने व्यापक स्तर पर अनुसंधान, कौशल विकास और सहयोगात्मक गतिविधियों के विकास और अनुवाद को सक्षम करने के लिए एक अत्याधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स (सीएआईआर) केंद्र की स्थापना की है। रोबोटिक्स, ड्रोन टेक्नोलॉजी, इंटेलिजेंट सिस्टम, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र।"

अपने सबोधन में प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा ने आगे कहा, "विशेष रूप से वंचितों और गरीबों के बीच मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में तेज वृद्धि को संबोधित करने के लिए, संस्थान ने भारतीय ज्ञान प्रणाली और मानसिक स्वास्थ्य अनुप्रयोग (आईकेएसएमएचए) केंद्र की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य एक विश्व नेता और भारतीय ज्ञान प्रणालियों और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अनुसंधान, कौशल विकास, अनुवाद और सहयोगी गतिविधियों के माध्यम से भारतीय समाज की सेवा करना है।"

छात्रों के बीच रचनात्मक, नवीन और प्रबंधकीय कौशल को विकसित करने के लिए आईआईटी मंडी ने अपने डिजाइन प्रैक्टिकम को फिर से डिजाइन किया है और छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए फाउंडेशन ऑफ डिजाइन प्रैक्टिकम (एफडीपी) नामक एक प्रयोगशाला-आधारित पाठ्यक्रम शुरू किया है। इसमें फ्यूजन 360 सीएडी डिजाइन सॉफ्टवेयर, 3-डी प्रिंटिंग, पीसीबी फैब्रिकेशन, सेंसर, प्रोग्रामिंग ऑन-बोर्ड कंप्यूटर और संचार शामिल हैं। संस्थान ने बीआर्क कार्यक्रम के अलावा, सामग्री विज्ञान और इंजीनियरिंग और सामान्य इंजीनियरिंग में नए बी.टेक. कार्यक्रम बनाए हैं। इसके अलावा, रसायन विज्ञान और अर्थशास्त्र में बीएस कार्यक्रम पाइपलाइन में हैं। यह सब छात्रों को समग्र शिक्षण और अनुसंधान अनुभव प्रदान करने के लिए संस्थान के दृष्टिकोण को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ एकीकृत करते हुए किया जा रहा है।

छात्रों को संबोधित करते हुए, सम्मानित अतिथि, टाटा केमिकल्स के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी, श्री वेंकटाद्रि के. आर. ने कहा, "आप सभी एक प्रमुख संस्थान में शामिल होने के लिए धन्य और विशेषाधिकार प्राप्त हैं। आपका संस्थान विश्व स्तरीय प्रयोगशालाएं प्रदान कर रहा है जो आपको इस महान वातावरण में सीखने का अवसर मिलता है। सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील विश्व स्तर पर जुड़ा हुआ समाज समय की मांग है। जैसा कि मैं अगले 5 वर्षों में देखता हूं, हम बड़े तकनीकी परिवर्तन देखने जा रहे हैं। स्वचालन और डिजिटल के साथ, काम और जीवन रूपांतरित होने जा रहा है। इसके लिए हम सभी को निरंतर सीखने की यात्रा पर रहने की आवश्यकता होगी।"

स्थापना दिवस समारोह के दौरान, आईआईटी मंडी के बोर्ड ऑफ गवर्नर के अध्यक्ष, प्रोफेसर प्रेम व्रत ने कहा, "पिछले वर्ष की संस्थान की उपलब्धियों को देखते हुए, मुझे लगता है कि यात्रा लगातार सुधारों में से एक रही है। आईआईटी मंडी ने इस सुदूर स्थान में भी एक अच्छा शैक्षणिक माहौल स्थापित किया है। प्रोफेसर बेहेरा के नेतृत्व में, संस्थान के विविधीकरण के साथ-साथ अन्य संस्थानों, उद्योग के साथ समझौता ज्ञापन स्थापित किए गए।"

प्लेसमेंट के हिसाब से, आईआईटी मंडी के छात्रों को इस साल 119 कंपनियों से 285 जॉब ऑफर मिले हैं। इनमें से 19 अंतरराष्ट्रीय ऑफर हैं। इस वर्ष बी.टेक. छात्रों के लिए उच्चतम वेतन 62.87 लाख रुपये और औसत वेतन 27.99 लाख रुपये

मिला है। इसके साथ ही, संस्थान आने वाले वर्ष में मजबूत प्लेसमेंट की उम्मीद कर रहा है।

संस्थान को 'इंजीनियरिंग' श्रेणी में : 20वां, एन.आई.आर. एफ. 2022 में 'शोध' श्रेणी में : 39वां, और 'समग्र' श्रेणी में : 43वां स्थान प्राप्त हुआ है।

पिछले वर्ष में प्रमुख सहयोग और नवाचार

आईआईटी मंडी कैटलिस्ट ने भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम के हितधारकों को एक साथ लाने के उद्देश्य से एचएसटी स्टार्टअप ग्रैंड चैलेंज 2022 का आयोजन किया और युवा उद्यमियों को इनक्यूबेशन समर्थन और धन उगाहने के लिए अपने विचारों को पेश करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

— ईडब्ल्यूओके और आईआईटी मंडी नाबार्ड के सहयोग से आसपास के क्षेत्रों में किसानों को किसान उत्पादक कंपनियों (एफपीसी) में संगठित कर रहे हैं।

— आईआईटी मंडी ने 100 स्कूली छात्रों के लिए एआई और रोबोटिक्स पर एक ग्रीष्मकालीन शिविर 'प्रयास1.0' की मेजबानी की।

— आईआईटी मंडी ने हिताची इंडिया प्राईवेट लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। लिमिटेड विभिन्न क्षेत्रों में एआई के क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान करेगा।

— आईआईटी मंडी आईहब और एचसीआई फाउंडेशन ने संज्ञानात्मक मॉडलिंग पर विंटर स्कूल के चौथे संस्करण का आयोजन किया।

— आईआईटी मंडी के शोधकर्त्ताओं ने इस्केमिक स्ट्रोक का पता लगाने के लिए एक सरल और पोर्टेबल उपकरण विकसित किया है।

— आईआईटी मंडी के शोधकर्त्ताओं ने फैटी लीवर रोग और टाइप 2 मधुमेह के बीच एक जैव रासायनिक लिंक की खोज की है।

— आईआईटी मंडी टीम उचित अपशिष्ट जल प्रबंधन विधि का चयन करने के लिए एआई-संवर्धित ऑपरेशन रिसर्च एल्गोरिदम का उपयोग करती है।

— आईआईटी मंडी ने अपने सतत शिक्षा केंद्र (सीसीई) के माध्यम से, हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम (एचपीकेवीएन) की मदद से हिमाचली युवाओं के कौशल को विकसित करने के लिए पांच छोटे विभिन्न पाठ्यक्रम शुरू किए।

— आईआईटी मंडी के पहले छात्र-संकाय इनक्यूबेटेड स्टार्टअप ने सर्वश्रेष्ठ उद्यमिता पुरस्कार 2022 का तीसरा पुरस्कार जीता।

संस्थान का इतिहास

24 फरवरी, 2009 को आईआईटी मंडी के स्थायी परिसर स्थल कमांद में आधारशिला रखी गई। प्रोफेसर तियोथी ए गोंसेल्वज भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के संस्थापक निदेशक थे। अगस्त 2009 में, वल्लभ गवर्नमेंट कॉलेज, मंडी को आईआईटी मंडी के लिए एक पारगमन परिसर के रूप में विकसित किया गया था। यह उल्लेखनीय है कि छात्रों के पहले बैच को जुलाई 2009 में प्रवेश दिया गया और उनकी कक्षाएं 27 जुलाई 2009 को शुरू हुईं। छात्रों का पहला बैच सितंबर 2012 में कमांद परिसर में स्थानांतरित हो गया।

भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान मंडी ने की G20-S20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने 21 से 30 जून 2023 तक G20-S20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इसका उद्देश्य विभिन्न विषयों पर चर्चा के साथ योग्य अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रमुख हितधारकों और विशेषज्ञों को एक साथ लाना था, जो समावेशी और सतत विकास प्राप्त करने की दिशा में प्रगति कर सकें। इस विशाल कार्यक्रम में दुनिया भर से कई गणमान्य व्यक्तियों/प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम ने नवीन विचारों और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के साथ-साथ कार्यक्रम के विषयों से संबंधित महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक मंच प्रदान किया। आईआईटी मंडी द्वारा आयोजित G20-S20 शिखर सम्मेलन 2023 पर अपने विचार साझा करते हुए, भा.प्रो.सं. मंडी के निदेशक प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा ने कहा था, "भा.प्रो.सं. मंडी सतत विकास, जलवायु-नियंत्रित कृषि जैसे क्षेत्रों में कुशल जनशक्ति के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स, ड्रोन प्रौद्योगिकी, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर-भौतिक प्रणाली, विनिर्माण और स्वचालन शामिल है। हमारा मानना है कि ये प्रयास 'मेक-इन-इंडिया' पहल जैसे राष्ट्रीय मिशन को बढ़ावा देंगे और भारत को दुनिया की कौशल राजधानी बनाने के हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सपने को पूरा करेंगे।"

G20-S20 शिखर सम्मेलन के कुछ प्रमुख वक्ताओं में आमंत्रित थे–

- श्री शिव प्रताप शुक्ला, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश
- श्री सुखविंदर सिंह सुक्खु, माननीय मुख्यमंत्री (हि.प्र)
- श्री मुकेश अग्निहोत्री, उपमुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश
- श्री हर्षवर्धन चौहान, माननीय उद्योग मंत्री (हि.प्र)
- प्रो. आशुतोष शर्मा, सह-अध्यक्ष S20 और पूर्व विज्ञान और प्रौद्योगिकी सचिव
- पद्मश्री सतीश कुमार, अध्यक्ष, ARB
- पद्मश्री हेमा मालिनी
- प्रो. के के पंत, निदेशक, आईआईटी रुड़की
- प्रो. मनोज एस गौर, आईआईटी जम्मू

- डॉ. सतबीर सिंह खालसा, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, यूएसए
- प्रो. बलदेव सेतिया, निदेशक, पीईसी चंडीगढ़
- पद्मश्री डॉ. मिस्टर्स जनक पालता मैकगिलियन, संस्थापक और निदेशक, सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट।
- डॉ. किंशुक बनर्जी, निदेशक, हिताची इंडिया।
- डॉ. विकास कुमार, अध्यक्ष, एआर ऐंड डीबी।

G20-S20 शिखर सम्मेलन में प्रत्येक दिन का कार्यक्रम इस प्रकार था–

- पहला दिन 1 (21 जून) - अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : योग के माध्यम से शारीरिक और मानसिक लाभों का जश्न मनाना।
- दूसरा दिन (23 जून) : पूरी तंतु : स्वास्थ्य और भलाई के लिए पूरी दृष्टिकोण की खोज करना।
- तीसरा दिन (25 जून) - स्किल इंडिया : समावेशी विकास के लिए कौशल विकास के महत्व को परिसंघटित करना।
- चौथा दिन (27 जून) - रक्षा के लिए प्रौद्योगिकी : रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी में उन्नतियों की चर्चा करना।
- पाँचवाँ दिन (29 जून) - समाज के लिए प्रौद्योगिकी : प्रौद्योगिकी की भूमिका को सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उजागर करना
- छठा दिन (30 जून) - नवीकरणीय ऊर्जा : स्थायी ऊर्जा समाधानों पर केंद्रित होकर उनके विकास पर प्रभाव डालना।

इस G20-S20 शिखर सम्मेलन का आरंभ 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के साथ शुरू हुआ, जहां संस्थान के शोधकर्ताओं ने समग्र स्वास्थ्य के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकी-सक्षम योग और ध्यान प्रथाओं का प्रदर्शन किया, जिसमें आसन-सुधार करने वाले योग मैट, एआर-वीआर-सक्षम इमर्सिव मेडिटेशन और ऐसे कई नवीन उत्पाद शामिल थे। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम के उद्घाटन दिवस में वक्ता सत्र, पैनल चर्चा और प्रौद्योगिकी प्रदर्शन शामिल थे, जिन्होंने योग के शारीरिक और मानसिक लाभों का जश्न मनाया।

आईआईटी मंडी और आईआईटी धनबाद के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम व्रत की सम्मानजनक उपस्थिति ने इस आयोजन की प्रतिष्ठा बढ़ाई। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, "आईआईटी मंडी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के साथ G20-S20 शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करना संस्थान द्वारा एक अच्छी पहल है। योग भारत की सबसे पुरानी विरासत है जिसे अब दुनिया पहचान रही है। यह विश्व को सबसे गौरवशाली भारतीय योगदान है। यह हमारे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। आईआईटी मंडी में आज के कार्यक्रम में कई वक्ता शामिल होंगे जो योग के महत्व पर अंतर्दृष्टि साझा करेंगे।

आईआईटी मंडी में G20-S20 शिखर सम्मेलन में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए, भा.प्रौ.सं. मंडी के निदेशक प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा ने कहा, "मैं भा.प्रौ.सं. मंडी में G20-S20 शिखर सम्मेलन में आप सभी का स्वागत करता हूं। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों की मेजबानी करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इस मेगा इवेंट की थीम राज्य और देश के लिए तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की गई है। प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा अपने संबोधन में, योगः कर्मसु कौशलमः योग- सभी कार्यों की कला' विषय पर चर्चा की, जिस पर उन्होंने कहा, "आज के कार्यक्रम में, हम योग की शक्ति और हमारे आधुनिक जीवन में इसके महत्त्व पर ध्यान केंद्रित करेंगे। जब हम स्वयं आत्मनिरीक्षण और ध्यान करते हैं, तो हमें कुछ गहरा अनुभव होता है जो किसी भी भाषा या शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। आधुनिक विज्ञान अभी भी एक ऐसे मॉडल का पता लगाने की कोशिश कर रहा है जो इस घटना को समझा सके। चेतना की कला अनोखी है। चेतना आंतरिक और बाह्य अस्तित्व की जागरूकता है। यह जटिल तंत्रों से जुड़ी आंतरिक शक्ति है। चेतना सभी में विद्यमान है। प्रत्येक व्यक्तिगत चेतन मन स्वयं को एक पौधे, एक जलीय, एक जानवर या एक मानव के रूप में व्यक्त करता है। योग कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है।"

G20-S20 शिखर सम्मेलन का पहला दिन समग्र विकास में योग के महत्त्व के इर्द-गिर्द घूमता रहा। इसमें मानसिक

स्वास्थ्य, भारतीय ज्ञान प्रणाली, आयुर्वेद और प्रौद्योगिकी के साथ उनके अंतर्संबंधों के क्षेत्र में काम करने वाले प्रतिष्ठित वक्ताओं के मुख्य सत्र शामिल थे।

इस दौरान आईआईटी खड़गपुर में आईकेएस के उत्कृष्टता केंद्र से डॉ. ऋचा चोपड़ा ने मन और मानसिक स्वास्थ्य पर पतंजलि के योग सूत्र के सार्वभौमिक विचारों पर चर्चा करते हुए कहा, "मानसिक स्वास्थ्य कल्याण की एक स्थिति है, जिसमें एक व्यक्ति को अपने बारे में पता चलता है।" बड़े पैमाने पर समाज में योगदान देने के लिए उत्पादक ढंग से काम करने की क्षमता। पतंजलि का योग सूत्र, जिसे मानसिक अनुशासन के विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है, मन और मानसिक स्वास्थ्य पर सार्वभौमिक विचारों को समाहित करता है। ये योग सूत्र मन के भीतर निहित शक्ति और ज्ञान को उजागर करके जागरूकता के ऊंचे स्तर, गहन ज्ञान और शांति की प्राकृतिक स्थिति प्राप्त करने के लिए चरण-दर-चरण पद्धति प्रदान करते हैं।

योग के बायोमेडिकल साइकोफिजियोलॉजी को संबोधित करते हुए, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में मेडिसिन के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सतबीर खालसा ने कहा, "योग एक प्राचीन व्यवहार अभ्यास है जो मन-शरीर जागरूकता या दिमागीपन और शारीरिक फिटनेस के कौशल के विकास की अनुमति देता है। शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक कामकाज पर योग अभ्यास के लाभों पर शोध तेजी से बढ़ रहा है। योग हस्तक्षेपों का अनुप्रयोग मनोवैज्ञानिक और नैदानिक परिणाम प्रदान कर रहा है जो वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा के दायरे में आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। इसीलिए, अपने बहु-घटक अभ्यासों के माध्यम से, योग मांसपेशियों के कामकाज के स्थूल स्तर से लेकर जीवन की गुणवत्ता और आध्यात्मिकता में सुधार जैसी गहरी विशेषताओं तक मानव कामकाज के व्यापक स्पेक्ट्रम में लाभ प्रदान कर रहा है।

योग के इस कार्यक्रम में निम्नलिखित सत्र भी शामिल थे–

- आर्ट ऑफ लिविंग के सरकारी कार्यक्रमों और परियोजनाओं की क्षेत्रीय निदेशक सुश्री पॉलोमी मुखर्जी द्वारा योग को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना।
- योग को आयुर्वेद का अभिन्न अंग डॉ. राजेश संद, प्रभारी सहायक निदेशक क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मंडी द्वारा बताया गया।
- मीडिया और राजनीति के वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ. सुब्रोकमल दत्ता द्वारा योग के माध्यम से सार्वभौमिक भाईचारा और प्रेम फैलाना।
- अनुभवजन्य विज्ञान के भीतर योग के लाभों पर एक पैनल चर्चा ने यह जानकारी मिली कि योग आधुनिक विश्व स्वास्थ्य प्रथाओं के साथ कैसे जुड़ा हुआ है।

इसके अलावा, इस कार्यक्रम में विभिन्न मानव-कंप्यूटर इंटरैक्शन (एचसीआई) आधारित प्रौद्योगिकियों का लाइव प्रदर्शन दिखाया गया–

- 'योगीफाई' स्मार्ट मैट - डिवाइस-एलईडी तकनीक का उपयोग करते हुए आईआईटी मंडी इनक्यूबेटेड स्टार्टअप द्वारा विकसित आसन-सुधार करने वाला एक योग मैट।
- 'स्मार्टन' - दृष्टि बाधित लोगों के लिए कंप्यूटर विजन आधारित चश्मा, सहायक तकनीक के रूप में काम कर रहा है।
- 'नुवर्स' - अनुभव प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए, फोटोप्लेथिस्मोग्राफी (पीपीजी) का उपयोग करके शरीर के महत्वपूर्ण अंगों के लिए एक अग्रणी स्वास्थ्य-तकनीक एप्लिकेशन।
- हिमाचल प्रदेश और आयुर्वेद, चिकित्सा विज्ञान और अध्यात्मवाद में इसके योगदान पर प्रकाश डालने वाली एक संवर्धित-वास्तविकता-आधारित प्रस्तुति।

इस कार्यक्रम में व्यावहारिक मुख्य भाषण, इंटरैक्टिव पैनल चर्चा, व्यावहारिक कार्यशालाएं और प्रत्येक विषय से संबंधित नेटवर्किंग सत्र शामिल थे। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के विविध और प्रभावशाली समूह ने सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान का एक अनूठा अवसर प्रदान किया।

कुल मिलाकर, G20-S20 ने समावेशी और सतत विकास को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसमें वैश्विक स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता थी।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में हिन्दी पखवाड़ा 2022 का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश के राजभाषा प्रकोष्ठ ने संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर, 2022 से दिनांक 28 सितम्बर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया। इसमें हिन्दी टंकण, हिन्दी लघु कहानी एवम् वृत्तांत (चित्र के अनुसार), हिन्दी निबन्ध, हिन्दी कविता पाठ, हिन्दी श्रुति लेखन आदि प्रतियोगिताएँ करवाई गईं। पखवाड़े के विजेताओं के लिए पुरस्कार समारोह का आयोजन दिनांक 20 अक्टूबर, 2022 को किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि, माननीय निदेशक, प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा ने हिन्दी प्रकोष्ठ के प्रभारी को आगामी वर्ष से संस्थान में मनाए जाने वाले हिन्दी पखवाड़े में संस्थान के कर्मचारियों के साथ छात्रों की भागीदारी भी सुनिश्चत करते हुए इसे बड़े स्तर पर करवाने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए। इसका विवरण निम्नलिखित है–

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	स्थान
1	श्री ललित कुमार	प्रथम
2	सुश्री ममता	द्वितीय
3	श्री पवन कुमार	तृतीय

हिन्दी लघु कहानी एवं वृतांत (चित्र के अनुसार) प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	स्थान
1	श्री आशीष श्रीवास्तव	प्रथम
2	श्रीमती विनती चन्देल	द्वितीय
3	श्री व्योमेश रावत	तृतीय
4	श्री तरुण वर्मा	सान्त्वना

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	स्थान
1	श्री आशीष श्रीवास्तव	प्रथम
2	श्री राजीव कुमार शर्मा	द्वितीय
3	श्री समीम खाँन	द्वितीय
4	श्रीमती विनती चन्देल	तृतीय
5	श्रीमती सीता देवी	तृतीय

हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	स्थान
1	श्री आशीष श्रीवास्तव	प्रथम
2	श्रीमती श्रद्धा ठाकुर	द्वितीय
3	डॉ. सुमित मुराब	तृतीय
4	श्रीमती मीना जम्वाल	सान्त्वना
5	श्रीमती आशु	सान्त्वना

हिन्दी श्रुति लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	स्थान
1	श्री आशीष श्रीवास्तव	प्रथम
2	श्रीमती विनती चन्देल	द्वितीय
3	श्री अनूप कुमार	तृतीय
4	श्रीमती श्रद्धा ठाकुर	सान्त्वना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने 200 से अधिक छात्रों और शिक्षकों की भागीदारी के साथ 'प्रयास 2.0' ग्रीष्मकालीन शिविर का समापन किया...

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी ने रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्कूल कैंप (प्रयास 2.0) के दूसरे संस्करण का सफलतापूर्वक समापन किया है। इस व्यापक आवासीय कार्यक्रम ने छात्रों को रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बुनियादी सिद्धांतों की गहरी समझ प्रदान की, जिससे वे अपने करियर की शुरुआत में पूरी तरह से स्वचालित सिस्टम बनाने में सक्षम हो सके। उत्तर प्रदेश राज्य से 3000 से अधिक छात्रों में से, एक सौ छात्रों के एक चुनिंदा समूह को इस शिविर में भाग लेने के लिए चुना गया था। इसके अतिरिक्त, शिविर में उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों के पचास शिक्षक और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के पचास प्रशिक्षक शामिल थे। इन शिक्षकों और प्रशिक्षकों को उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन (यूपीएसडीएम) के हिस्से के रूप में नामित किया गया था। शिविर का उद्देश्य रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में सीखने और नवाचार को बढ़ावा देना, छात्रों और शिक्षकों दोनों को इन अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करना है।

"प्रयास 2.0" के दूसरे संस्करण को संबोधित करते हुए, आईआईटी मंडी में सतत शिक्षा केंद्र के प्रमुख डॉ. तुषार जैन ने कहा कि, "प्रयास 1.0" के

सफल आयोजन के उपरांत हमने प्रयास 2.0 के साथ एक कदम आगे बढ़ाया है। विशेष रूप से, हमने इस शिविर के लिए शिक्षकों और प्रशिक्षकों को भी निमंत्रण दिया। यह रणनीतिक समावेशन उन्हें नए ज्ञान को अपने पाठ्यक्रम और शैक्षणिक दृष्टिकोण में एकीकृत करने की अनुमति देता है, जिससे उत्तर प्रदेश में व्यापक छात्र समुदाय के लिए जमीनी स्तर पर नवीन पहल का प्रसार होता है। इसके अलावा, "हमने इस कार्यक्रम का दायरा बढ़ाकर 200 से अधिक प्रतिभागियों को इसमें शामिल कर लिया है। "प्रयास 3.0" को देखते हुए, हम एक रोबोटिक्स प्रतियोगिता शुरू करने और इस कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का इरादा रखते हैं।"

चार सप्ताह के शिविर के दौरान, छात्र रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर केंद्रित कक्षाओं में लगे रहे। उन्होंने रोबोट बनाने के लिए विविध प्रोग्रामिंग तकनीकों, सेंसर, एक्चुएटर्स, संचार उपकरणों और बिजली घटकों की खोज की। कस्टम किट से लैस, छात्रों ने अपनी रचनाओं को जीवंत बनाने के लिए पायथन प्रोग्रामिंग का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक कई रोबोट बनाए। इस वर्ष के समर कैंप का एक अतिरिक्त आकर्षण आईआईटी मंडी में आयोजित मेगा जी20-एस20 मीट था। इस कार्यक्रम ने छात्रों को संस्थान में 'कौशल भारत' पर आयोजित एक दिवसीय कॉन्क्लेव के दौरान हिमाचल प्रदेश के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री के सामने अपनी परियोजनाओं को प्रस्तुत करने का मौका दिया। इन गतिविधियों के साथ-साथ, छात्रों ने विश्व पर्यावरण दिवस और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसे कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

शिविर में गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी, जिसमें नियमित योग और एरोबिक्स सत्र, भगवद गीता पर चर्चा, प्रेरक वृत्तचित्र, वृक्षारोपण और सफाई अभियान और टिंकरिंग प्रयोगशालाओं का दौरा शामिल था। समग्र अनुभव प्रदान करने के लिए इन विविध गतिविधियों को सोच-समझकर एकीकृत किया गया था।

प्रयास आईआईटी मंडी की एक विशिष्ट पहल है, जिसका उद्देश्य युवा मन में उत्साह जगाना और कौशल विकास को बढ़ावा देना है। यह उन्हें एक व्यापक सीखने की यात्रा प्रदान करता है जो सामाजिक, तकनीकी और मानवीय मूल्य कौशल तक फैली हुई है।

कार्यक्रम के समापन पर आईआईटी मंडी परिसर में पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित करने का एक समारोह आयोजित किया गया। अपने सीखने की निरंतरता के रूप में, युवा प्रतिभागियों को टेक होम रोबोटिक्स किट से भी सुसज्जित किया गया, जिससे उन्हें प्रौद्योगिकी के साथ आगे की खोज और प्रयोग करने में सुविधा हुई।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के शोधकर्त्ताओं ने हिमालयी क्षेत्र में भूकंप-संभावित संरचनाओं के मूल्यांकन हेतु ईजाद की सरल तकनीक

वैज्ञानिक प्रगति की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम की ओर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के शोधकर्त्ताओं ने हिमालय क्षेत्र में इमारतों की भूकंप झेलने की क्षमता का आकलन करने के लिए एक विधि विकसित की है। यह विधि काफी सरल है। इससे निर्णय-निर्माताओं को भूकंप के प्रति भवन की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले किसी भी सुदृढ़ीकरण और मुरम्मत कार्य को प्राथमिक रूप में करने में मदद मिलती है। शोधकर्त्ताओं द्वारा तैयार की गई आरवीएस तकनीक, कमजोर भवन स्टॉक की सुरक्षा के लिए व्यक्तियों या संगठनों द्वारा नियोजित की जा सकती है। इसका उद्देश्य रैनफोर्स्ड कंक्रीट (आरसी) इमारतों की ताकत का मूल्यांकन करना है। यह विधि इन संरचनाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार लोगों की सहायता के लिए तैयार है।

इस तकनीक से संबंधित शोध के निष्कर्ष बुलेटिन ऑफ अर्थक्वेक इंजीनियरिंग में प्रकाशित किए गए हैं। इस शोध का नेतृत्व डॉ. संदीप कुमार साहा, सहायक प्रोफेसर, स्कूल ऑफ सिविल एंड एनवायर्नमेंटल इंजीनियरिंग, आईआईटी मंडी द्वारा किया गया है, जिसकी सह-लेखक उनकी पीएचडी छात्रा सुश्री यति अग्रवाल हैं।

भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के बीच चल रहे टकराव के कारण हिमालय दुनिया के सबसे अधिक भूकंप-प्रवण क्षेत्रों में से एक है। समय-समय पर ऐसे भूकंप आते रहे हैं, जो इन क्षेत्रों में जीवन और संपत्ति दोनों के नुकसान के मामले में विनाशकारी रहे हैं। वर्ष 2005 के भयावह कश्मीर भूकंप में कश्मीर में 1,350 से अधिक लोग मारे गए, कम से कम 100,000 लोग घायल हुए, हजारों घर और इमारतें नष्ट हो गईं और लाखों लोग बेघर हो गए।

हालांकि, भूकंप को रोका नहीं जा सकता है, लेकिन इमारतों और अन्य बुनियादी ढांचे के डिजाइन के माध्यम से क्षति को निश्चित रूप से रोका जा सकता है जो भूकंपीय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। मौजूदा संरचनाओं की भूकंप सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पहला कदम उनकी मौजूदा कमजोरियों और ताकत का आकलन करना है। प्रत्येक भवन का विस्तृत भूकंपीय भेद्यता मूल्यांकन करना न तो भौतिक और न ही आर्थिक रूप से व्यवहार्य है। बड़े पैमाने पर इमारत की कमजोरियों का आकलन करने के लिए अक्सर इमारतों की रैपिड विजुअल स्क्रीनिंग (आरवीएस) की जाती है। आरवीएस यह तय करने के लिए दृश्य जानकारी का उपयोग करता है कि क्या किसी इमारत पर कब्जा करना सुरक्षित है या भूकंप सुरक्षा बढ़ाने के लिए तत्काल इंजीनियरिंग कार्य की आवश्यकता है।

मौजूदा आरवीएस विधियां विभिन्न देशों के डेटा पर आधारित हैं और विशेष रूप से भारत के हिमालयी क्षेत्र पर लागू नहीं होती हैं, क्योंकि कुछ विशेषताएं इस क्षेत्र की इमारतों के लिए अद्वितीय हैं। उदाहरण के लिए, हिमालय क्षेत्र (भारत के अधिकांश भाग की तरह) में कई गैर-इंजीनियर्ड संरचनाएँ हैं। स्थानीय निर्माण श्रमिकों के बीच जागरूकता की कमी और हितधारकों द्वारा खराब योजना के कारण बुनियादी ढांचे का वितरण और विकास भी अव्यवस्थित है। इसलिए क्षेत्र-विशिष्ट आरवीएस दिशा-निर्देश का उपयोग करना आवश्यक है जो स्थानीय निर्माण प्रथाओं, टाइपोलॉजी आदि जैसे कारकों पर विचार करता है।

शोध के बारे में बताते हुए, डॉ. संदीप कुमार साहा ने कहा, "हमने भारतीय हिमालयी क्षेत्र में रैनफोर्स्ड कंक्रीट (आरसी) इमारतों की स्क्रीनिंग के लिए एक प्रभावी तरीका तैयार किया है, ताकि इमारतों की स्थिति के अनुसार मुरम्मत कार्य को प्राथमिकता दी जा सके और आने वाले भूकंपों से जोखिम को कम किया जा सके।"

व्यापक क्षेत्र सर्वेक्षणों के माध्यम से, शोधकर्त्ताओं ने हिमालय के मंडी क्षेत्र में मौजूद इमारतों के प्रकार और इन इमारतों में मौजूद विशिष्ट विशेषताओं पर बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र किया है, जो उनकी भूकंप भेद्यता से जुड़े हैं। उनके आरवीएस के लिए पहाड़ी इमारतों में मंजिलों की संख्या की गणना के लिए दिशा-निर्देश स्थापित करने के लिए एक संख्यात्मक अध्ययन भी किया गया था। इसके अलावा, इमारतों में मौजूद कमजोर विशेषताओं के आधार पर, एक बेहतर आरवीएस पद्धति प्रस्तावित की गई थी।

इमारतों की स्क्रीनिंग के लिए विकसित की गई पद्धति एक सरल एकल-पृष्ठ आरवीएस फॉर्म है, जिसे भरने के लिए अधिक विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती है। यह विभिन्न भेद्यता विशेषताओं को ध्यान में रखता है जो केस स्टडी क्षेत्र की इमारतों के लिए अद्वितीय हैं।

इन अवलोकनों का उपयोग करके की गई गणना इमारतों के लिए भूकंपीय भेद्यता स्कोर उत्पन्न करती है, जो कमजोर इमारतों को अधिक मजबूत इमारतों से अलग करती है और रखरखाव और मुरम्मत के लिए बेहतर निर्णय लेने की अनुमति देती है। गणना प्रक्रिया को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह किसी भवन को स्कोर करने में मानवीय पूर्वाग्रह या मूल्यांकनकर्ता की व्यक्तिपरकता की संभावना को कम करता है।

अनुसंधान के लाभों के बारे में बात करते हुए, सुश्री यति अग्रवाल, शोधकर्त्ता, आईआईटी मंडी, ने कहा, हमने दिखाया है कि प्रस्तावित विधि पहाड़ी क्षेत्रों में प्रबलित कंक्रीट इमारतों को भूकंप की स्थिति में होने वाली क्षति के अनुसार अलग करने के लिए उपयोगी है।

हिमालयी क्षेत्र में इमारतों का मूल्यांकन न केवल क्षेत्र की सामान्य भूकंप संवेदनशीलता के कारण तत्काल और आवश्यक है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि पिछली दो शताब्दियों के "भूकंपीय अंतर" के कारण कभी भी बड़े भूकंप की आशंका है। ऐसा माना जाता है कि एक भूकंपीय अंतर (बड़े भूकंप की अनुपस्थिति) तनाव जमा होने में लगने वाले समय को दर्शाता है, जो फिर एक बड़े भूकंप में जारी होता है। अब समय आ गया है कि इन क्षेत्रों में मानव आवासों को मजबूत किया जाए ताकि वे भविष्य में आने वाले किसी भी हल्के या गंभीर भूकंप का सामना कर सकें।

युवा संगम : एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के अंतर्गत, भा.प्रौ.सं. मण्डी द्वारा गोवा के छात्र प्रतिनिधियों की मेजबानी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुरू की गई 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के अंतर्गत युवा संगम कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। इस पहल के हिस्से के रूप में, अलग-अलग राज्यों के कई उच्च शिक्षण संस्थानों (एचईआई) का आपस में एक-दूसरे के साथ परिचय करवाया जाएगा। साथ ही, प्रत्येक राज्य के छात्र प्रतिनिधि, विचारों के सांस्कृतिक, शैक्षिक और अनुभवात्मक आदान-प्रदान के लिए एक-दूसरे के संस्थानों का दौरा करेंगे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत के अलग-अलग राज्यों में लोगों के बीच मानव संबंधों को प्रोत्साहित, पोषित और वास्तविक बनाना है। साथ ही, देश के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे अलग-अलग समूहों और समुदायों की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक विरासत के बारे में सामूहिक तौर पर सीखने की भावना को विकसित करना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पांच प्रमुख क्षेत्रों को बहु-आयामी अनुभव प्रदान करना है, अर्थात्— (1) पर्यटन, (2) परंपराएं, (3) प्रगति, (4) परस्पर संपर्क और (5) प्रौद्योगिकी।

हिमाचल प्रदेश राज्य के नोडल संस्थान के रूप में भा.प्रौ.सं. मण्डी, गोवा राज्य के 45 छात्र प्रतिनिधियों की मेजबानी करेगा। इन छात्रों का नेतृत्व भा.प्रौ.सं. गोवा के संकाय और कर्मचारी सदस्य कर रहे हैं, जो गोवा राज्य के नोडल संस्थान के रूप में चयनित हैं। कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में, भा.प्रौ.सं. मण्डी ने छात्र प्रतिनिधियों को सावधानीपूर्वक तैयार किए गए पांच दिवसीय कार्यक्रम में शामिल किया, जिसमें पर्यटन, परंपराओं, प्रगति, परस्पर संपर्क और प्रौद्योगिकी के पहलुओं को शामिल किया गया है। पहले दिन, छात्रों ने परिसर के भीतर अलग-अलग प्रयोगशालाओं और अनुसंधान सुविधाओं का दौरा किया, जिसमें मैकेनिकल वर्कशॉप, बॉटनिकल लैब, टिंकरिंग लैब और ड्रोन लैब शामिल है। दूसरे दिन, छात्रों ने रेवाल्सर टाउन का दौरा किया, जो अपनी तिब्बती आबादी, संस्कृति और ज्ञान के केंद्र के रूप में जाना जाता है। इस दौरान गोवा से आए प्रतिनिधियों को शहर के लोगों की तिब्बती संस्कृति के बारे में जानने का अवसर मिला। प्रतिनिधियों ने हिमालयी शहर की सुंदर समधर्मी संस्कृति को समझने के लिए

नैना देवी मंदिर, गुरुद्वारा, पद्मसंभव गुफा, मठ और कुंतीसार झील का भी दौरा किया। इस दौरे में कार्यक्रम के पर्यटन और पारंपरिक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया है।

तीसरे दिन, प्रतिनिधियों ने आधुनिक समय के इंजीनियरिंग मर्वल, अटल सुरंग का दौरा किया। उन्हें वहाँ तैनात सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के कर्मियों से बात करने और कड़ाके की ठंड के महीनों में इतनी अधिक ऊंचाई पर सेवा करने की कठिनाइयों को समझने के अनूठे अवसर का अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बद्धता कार्यक्रम के हिस्सा के रूप में, भा.प्रौ.सं. मण्डी ने मंडी शहर के अन्य संगठनों के साथ भी समन्वय किया और गांव की यात्रा की योजना बनाई। इसमें परस्पर संपर्क के सभी महत्त्वपूर्ण तत्त्व शामिल थे। यहां प्रतिभागियों ने हिमालयी गाँवों के जीवन को समझने के लिए स्थानीय निवासियों के साथ जुड़ाव किया और भोजन, खान-पान, आजीविका के मुद्दों आदि पर करीब से नजर डाली। उन्होंने हिमाचल की शानदार सुंदरता का अनुभव करने के लिए प्राकृतिक पराशर झील का भी दौरा किया। अंतिम दिन छात्रों ने मंडी शहर का दौरा किया और शहर के विभिन्न प्राचीन मंदिरों को देखा, जो इसे "छोटा काशी" नाम देते हैं। कार्यक्रम का समापन आज एक सांस्कृतिक रात्रि के साथ हुआ जहां हिमाचली लोक-आधारित नृत्य प्रदर्शन आयोजित किए गए।

इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, भा.प्रौ.सं. मण्डी ने 45 प्रतिभागियों और संकाय समन्वयकों को गोवा भेजने में राज्य और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के विभिन्न कॉलेजों / संस्थानों के साथ समन्वय किया है। हिमाचल राज्य के कुल 35 छात्रों और लद्दाख के 10 छात्रों ने कार्यक्रम के अंतर्गत गोवा की यात्रा की है।

कार्यक्रम के दौरान गोवा के प्रतिभागियों को अपने पारंपरिक नृत्य और गीत प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया। साथ ही, कार्यक्रम ने सभी प्रतिभागियों को एक दूसरे से बातचीत करने और सीखने का अनूठा अवसर प्रदान किया है।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा संस्थान के कार्मिकों के लिए दिनांक 9 अगस्त, 2023 को दोपहर 2:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक ए-10 कंप्यूटर लैब (ग्राउंड फ्लोर) में एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई थी। यह कार्यशाला 'राजभाषा अधिनियम और संबंधित नियमों के अनुपालन' पर केंद्रित थी।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के सम्मानित प्रभारी-कुलसचिव, प्रोफेसर सतिन्द्र कुमार शर्मा मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। प्रभारी-कुलसचिव ने इस अवसर पर राजभाषा के महत्व पर बल दिया और संस्थान के कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि हिंदी में काम करना शर्मिंदगी की बात नहीं है, बल्कि एक संवैधानिक कर्त्तव्य है जिसे हमें गर्व से अपनाना चाहिए।

कार्यशाला में कुशल प्रस्तुति भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के हिंदी प्रकोष्ठ के कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा), श्री नितिन सिंह तोमर ने किया। उनकी ज्ञानवर्धक प्रस्तुति ने राजभाषा अधिनियम और इसके कार्यान्वयन के प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डाला।

यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि इस आयोजन का उद्देश्य हमारे आधिकारिक प्रयासों में हिंदी की भूमिका की गहरी समझ को बढ़ावा देना और हमारी भाषाई जिम्मेदारियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करना है। आइए हम सभी संवैधानिक आदेशों के अनुसार हिंदी के प्रचार और प्रभावी उपयोग की

दिशा में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लें।

हिन्दी प्रकोष्ठ इस कार्यशाला को सफल बनाने में आप सभी की भागीदारी और उत्साह की सराहना करता है।

हमारी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आपके निरंतर समर्थन और समर्पण के लिए धन्यवाद।

''हिन्दी तिमाही/अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट'' विषय पर दिनांक 22 मार्च, 2023 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गत बैठक में लिए गए निर्णयानुसार, दिनांक 22 मार्च 2023 को संस्थान के कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए "हिन्दी तिमाही/अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट" विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन संस्थान के उत्तरी परिसर के हॉल-बी में दोपहर 3:30 बजे से शाम 5:00 बजे तक किया गया।

कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा), श्री नितिन सिंह तोमर ने भा.प्रौ.सं. मंडी में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, डॉ. अतुल धर, सह-प्राध्यापक, एसएमएमई का हार्दिक अभिनंदन करते हुए, उन्हें कार्यशाला का शुभारंभ करने हेतु अनुरोध किया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य महोदय ने कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत व अभिनंदन करते हुए संस्थान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया तथा राजभाषा के महत्त्व पर बल देते हुए हिन्दी कार्यशालाओं की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि आजकल हिन्दी में सरलता से कार्य करने की नवीन विधियों की जानकारी संस्थान के कर्मचारी को होनी अनिवार्य है। यदि हम वर्तमान में किसी कार्यालयीन दस्तावेज पर 5 से 10 प्रतिशत कार्य भी हिन्दी में करते हैं तो उसे भी द्विभाषी माना जाता है। भविष्य में हो सकता है कि स्थिति ऐसी न रहे। उन्होंने हिन्दी के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की वेबसाइट का कार्य देख रहे स्टाफ से भी सहयोग लेने के

लिए कहा। उन्होंने पूर्व में आयोजित कार्यशालाओं से भी लाभान्वित होने के लिए प्रेरित किया। डॉ. अतुल धर ने यह भी सुझाव दिया कि सामान्य टिप्पणियों की जानकारी अधिकारियों को होनी चाहिए। उन्होंने इसके लिए हिन्दी प्रकोष्ठ को सभी अनुभागों को ई-मेल भेजने का सुझाव दिया।

आगे, कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला का संचालन करते हुए प्रस्तुति दी गई। उन्होंने भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार अपनाए जाने वाले हिन्दी तिमाही/छमाही प्रगति रिपोर्ट के प्रारूपों को सिलसिलेवार तरीके से समझाते हुए मदवार विस्तृत चर्चा भी की तथा अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति से सभी को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही, उन्होंने कहा कि हमारे संस्थान का प्रतीक चिह्न, कर्मचारियों के पहचान पत्र भी द्विभाषी होने चाहिए। इसके अनुमोदन के लिए अभिशासक मण्डल को प्रस्ताव भेजने पर भी चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त, संस्थान में हिन्दी के प्रसार को बढ़ाने के लिए प्रतिभागियों ने अपने सुझाव दिए।

कार्यशाला बहुत ही उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण रही। कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) ने कार्यशाला में भाग लेने के लिए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। अंत में, धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई। कार्यशाला के अंत में जलपान की भी व्यवस्था की गई थी।

"हिन्दी टाइपिंग" विषय पर दिनांक 3 मार्च, 2023 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान मंडी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार, दिनांक 03 मार्च 2023 को संस्थान के कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी टाइपिंग हेतु एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन संस्थान के उत्तरी परिसर की कंप्यूटर लैब में पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 1 बजे तक किया गया।

कार्यशाला आरंभ करने हेतु कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा), श्री नितिन सिंह तोमर ने भा.प्रौ.सं. मंडी के हिन्दी प्रकोष्ठ-प्रभारी डॉ. सौम्य मालवीय का हार्दिक अभिनंदन किया तथा कार्यशाला हेतु उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत

किया। हिन्दी प्रकोष्ठ के प्रभारी महोदय के वक्तव्य द्वारा कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। उन्होंने सभी का अभिनंदन करते हुए संस्थान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया तथा राजभाषा के महत्त्व पर बल देते हुए हिन्दी कार्यशालाओं की अनिवार्यतः पर प्रकाश डाला।

आगे, कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला का संचालन किया गया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति से सभी को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार अपनाए जाने वाले हिन्दी टाइपिंग टूलों की जानकारी दी और पुरानी विधियों से टाइपिंग न करके आजकल प्रचलित नवीन टूलों (इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड और इंडिक माइक्रोसॉफ्ट टूल, फोनेटिक्स, वॉइस कमांड टाइपिंग आदि) का प्रयोग करके टाइपिंग करने पर बल दिया।

अपनी प्रस्तुति के उपरांत उन्होंने एक व्यावहारिक टाइपिंग सत्र का भी आयोजन किया। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारी नए सॉफ्टवेर अपने कम्प्यूटरों में इन्स्टाल करें। यदि किसी को भी इन सॉफ्टवेयर को इन्स्टाल करने में कोई भी समस्या आए या किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो वे हिन्दी प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं। यह कार्यशाला बहुत ही उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण रही। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई। साथ ही, कार्यशाला के अंत में जलपान की भी व्यवस्था की गई थी।

हिमालय क्षेत्र के साहित्य की एक समकालीन खोज : शोधकर्त्ताओं, डॉ. नीति वडक्कन अलेक्जेंडर और डॉ. तीर्थंकर चक्रवर्ती के साथ एक साक्षात्कार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी में मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल के संकाय सदस्य डॉ. नीति वडक्कन एलेक्जेंडर और डॉ. तीर्थंकर चक्रवर्ती ने "हिमालयी क्षेत्र का साहित्य : एक समकालीन अवलोकन" नामक एक परियोजना शुरू की है। स्वाभाविक रूप से हिमालयी क्षेत्र का साहित्य काफी समृद्ध है। इस परियोजना के बारे में, संस्थान के हिन्दी प्रकोष्ठ के कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा), श्री नितिन सिंह तोमर ने दोनों संकाय सदस्यों से संक्षिप्त चर्चा की, जिसकी झलक हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

प्रश्न : हिमालय क्षेत्र के समकालीन साहित्य पर प्रकाश डालने वाली परियोजना शुरू करने के लिए बधाई। क्या आप कृपया इस परियोजना के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं?

डॉ. नीति वडक्कन अलेक्जेंडर : वर्तमान में, हमारा प्रोजेक्ट सामग्री संग्रह चरण में है। हम हिमालयी क्षेत्र से और उसके बारे में लिखी गई किताबें इकट्ठा कर रहे हैं, जिसका प्राथमिक ध्यान अंग्रेजी में लिखी गई कथाओं पर है। भविष्य में, हम ऐसे विद्वानों को शामिल करने की उम्मीद करते हैं जिनके पास अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में भी कौशल है जो हमें हिमालय क्षेत्र के बारे में/के बारे में उत्पादित साहित्य की विस्तृत श्रृंखला की जांच करने में मदद कर सकते हैं। ये व्यक्ति इस क्षेत्र की साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में भी हमारी सहायता कर सकते हैं।

प्रश्न : क्या इस परियोजना के तहत अब तक आपने कोई विशिष्ट पुस्तकें या किसी लेखक का लिखा इकट्ठा किया है?

डॉ. तीर्थंकर चक्रवर्ती : निश्चित रूप से, नागालैंड पूर्वोत्तर से एक उल्लेखनीय भारतीय लेखक ईस्टरीन किर हैं। इसके अतिरिक्त एक प्रमुख नाम नमिता गोखले का है, जिन्होंने हिमालय क्षेत्र से संबंधित कार्यों का संकलन किया है। अन्य महत्त्वपूर्ण नामों में मांग दाई, इंद्र बहादुर राय, चेतन राज श्रेष्ठ आदि शामिल हैं। इसके अलावा, हम ऐसे लेखकों की तलाश कर रहे हैं, जिन्होंने विशेष रूप से हिमालयी संस्कृति और साहित्य पर ध्यान केंद्रित किया हो। विशेष रूप से, हम न केवल क्षेत्रीय लेखकों पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय लेखकों पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिन्होंने उदाहरण के लिए हिमालय, नेपाली और चीनी लेखकों के बारे में लिखा है। यह हमें हिमालय पर्वतों पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को समझने की अनुमति देता है, चाहे वे स्थानीय या विश्व स्तर पर इस क्षेत्र से प्रेरित व्यक्तियों के हों। हिमालय क्षेत्र नेपाल, चीन, पाकिस्तान, भूटान और भारत जैसे देशों के बीच एक संपर्क कारक के रूप में कार्य करता है और यह हमारे लिए इस क्षेत्र की सांस्कृतिक प्रथाओं के समामेलन को देखने के लिए एक प्रेरक कारक रहा है।

प्रश्न : इस परियोजना को वित्त पोषण कहाँ से प्राप्त हो रहा है?

डॉ. तीर्थंकर चक्रवर्ती : हमारा संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी, सीड (SEED) अनुदान के माध्यम से इस परियोजना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है।

प्रश्न : इस परियोजना में वर्तमान में कितने लोग शामिल हैं?

डॉ. नीति वडक्कन अलेक्जेंडर : वर्तमान में, हममें से दो लोग इस परियोजना पर सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। हालाँकि, परियोजना के विभिन्न पहलुओं में योगदान देने वाले अन्य व्यक्ति भी हैं, जैसे डॉ. नीलाम्बर छेत्री, जो सामाजिक पहचान, मानव विज्ञान आदि से संबंधित पहलुओं में शामिल हैं। हमारे

पास कम से कम दो पीएच.डी. छात्र भी हैं जो परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं जो हिमालय क्षेत्र से संबंधित लेखन का कार्य देख रहे हैं।

प्रश्न : आपने बताया कि हिमालयी साहित्य में योगदान देने वाले किसी भी व्यक्ति को आपके प्रोजेक्ट में शामिल किया जाएगा। क्या इसमें किसी भाषा के कार्य शामिल हैं?

डॉ. नीति वडक्कन अलेक्जेंडर : हां, हम हिमालय क्षेत्र से संबंधित सभी भाषाओं में साहित्यिक कार्यों का स्वागत है। हमारा इरादा विभिन्न भाषाई दृष्टिकोणों से विविध प्रकार के कार्यों को इकट्ठा करना है, जो हमें हिमालय के पहाड़ों से संबंधित विभिन्न सांस्कृतिक धारणाओं और विचारधाराओं में अंतर्दृष्टि देगा। हालाँकि, शुरुआत में, हम मुख्य रूप से उन लेखकों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जिन्होंने या तो अंग्रेजी में लिखा है या जिनके कार्यों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है, हालांकि अनुवाद का यह मामला स्वयं एक ऐसा विषय होगा, जिसे हम अपने शोध के अधिक उन्नत चरण में संबोधित करने का लक्ष्य रखेंगे। साथ ही, हमारी 2024 की शुरुआत में इस विषय पर एक कार्यशाला आयोजित करने की भी योजना है। फिलहाल, यह परियोजना हिमालय क्षेत्र के समकालीन साहित्य का पता लगाने और उसका विश्लेषण करने के लिए अपने प्रारंभिक चरण में है। यह इस अद्वितीय क्षेत्र के विविध साहित्यिक परिदृश्यों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। हमें आशा है कि यह परियोजना हिमालय में रुचि रखने वाले विद्वानों, लेखकों और पाठकों के बीच सार्थक संबंधों को बढ़ावा देगी। धन्यवाद!!

शोधार्थी मुस्कान धांधी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुमन की पी-एच.डी. छात्रा सुश्री मुस्कान धांधी को वर्ष 2023-24 के लिए प्रतिष्ठित चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट रिसर्च ग्रांट से सम्मानित किया गया। इस बारे में, संस्थान के हिन्दी प्रकोष्ठ के कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) श्री नितिन सिंह तोमर ने मुस्कान धांधी से संक्षिप्त चर्चा की, जिसकी झलक हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

प्रश्न : इस रिसर्च ग्रांट के लिए मुस्कान आपको बधाई। क्या आप बता सकती हैं कि जब आपको पहली बार इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के बारे में पता चला, तो आपको कैसा लगा और आपके लिए इसका क्या अर्थ है?

मुस्कान : बधाई के लिए शुक्रिया!! मुझे यह रिसर्च ग्रांट मिली है, इसका जब मुझे ईमेल आया, तब से यह स्मृति मेरे मन में बनी हुई है। मुझे जो खुशी है, वह अथाह है। मैं वाकई बहुत खुश थी और ईमानदारी से कहूं, तो मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। एक पुरस्कार पाना अपने आप में एक बड़ा सम्मान है, लेकिन दो पुरस्कार पाना एक सपने के सच होने जैसा है। जब मैंने अपनी पी-एच.डी. शुरू की थी, तब मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे शोध को दुनिया भर में इतनी मान्यता मिलेगी। मैं इस अवसर पर अपनी गाइड डॉ. सुमन को एक गुरु और मित्र के रूप में हमेशा मेरे साथ रहने और मुझे कड़ी मेहनत और प्रेरित करने के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं। ये पुरस्कार जितने मेरे हैं, उतने ही उनके भी हैं। मैं भगवान शिव, अपने माता-पिता और अपने दोस्तों का उनके बिना शर्त समर्थन के लिए आभारी हूँ।

यह सब किसी सपने के सच होने से कम नहीं है। मुझे लगता है कि मेरी मेहनत और ईमानदारी सफल हो गई है। मैं बहुत अभिभूत हूं और भगवान की आभारी हूं। इन पुरस्कारों ने मुझे कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित किया है और दुनिया भर में हरियाणवी संस्कृति और समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत प्रेरित किया है। मुझे उम्मीद है कि मैं और भी अधिक मेहनत और बेहतर तरीके से काम करूंगी और आने वाले वर्षों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूंगी।

प्रश्न : हरियाणवी लोककथाओं के अनुवाद पर आपका शोध वाकई बहुत ध्यान आकर्षित करने वाला लगता है। क्या आप हमारे पाठकों को अपनी पी-एच.डी. थीसिस के बारे में थोड़ी जानकारी दे सकती हैं और यह रिसर्च ग्रांट, किंग्स कॉलेज लंदन और ब्रिटिश संग्रहालयों में अभिलेखागार तक पहुंचने में आपके काम का समर्थन कैसे करेगा?

मुस्कान : मेरी पी-एच.डी. थीसिस हरियाणवी लोककथाओं का अनुवाद करने पर केंद्रित है, जिसमें हरियाणवी अनुष्ठान जैसे अहोई अष्टमी, देव-उठान एकादशी और सांझी शामिल हैं और भौतिक संस्कृति जैसे हरियाणवी कपड़े और आभूषण। चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट ने यूनाइटेड किंगडम और इन संस्थानों में मेरी शोध यात्रा को सुविधाजनक बनाया है। इसने मेरी सभी लागतों को कवर करने के साथ-साथ मुझे पूर्व छात्रों के उनके विशाल नेटवर्क से भी जोड़ा है। यह प्रतिष्ठित रिसर्च ग्रांट पाना मेरे लिए वाकई सम्मान की बात है।

प्रश्न : इस रिसर्च ग्रांट के जरिए आप हरियाणवी कपड़ों और आभूषणों सहित उस क्षेत्र की भौतिक संस्कृति पर शोध करेंगी। आप इस सर्वेक्षण को हरियाणवी विरासत और इसके महत्व की बेहतर समझ में कैसे योगदान देते हुए देखती हैं?

मुस्कान : अपनी पी-एच.डी. के शुरुआती कुछ वर्षों के दौरान, मुझे एहसास हुआ कि दस्तावेजीकरण की कमी के कारण हरियाणवी सामग्री संस्कृति पर कम शोध किया गया है। चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट रिसर्च ग्रांट के लिए, मैंने यूनाइटेड किंगडम में अभिलेखों को देखा, मुख्य रूप से विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन में 1800 के दशक के पंजाब के वस्त्र, किंग्स कॉलेज लंदन में अविभाजित पंजाब (क्योंकि हरियाणा 1966 तक पंजाब का हिस्सा था) से संबंधित फोटो और वीडियो सहित

ऑडियो-विजुअल दस्तावेजीकरण, यूनाइटेड किंगडम के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले कई शिक्षाविदों से मिलना आदि। इसलिए, मैंने अनुवाद और हरियाणवी सामग्री संस्कृति के बीच संबंधों का विश्लेषण करने के लिए प्रासंगिक सांस्कृतिक-विशिष्ट अनुसंधान पद्धति तैयार की। चूँकि ये भौतिक वस्तुएँ सांस्कृतिक रूप से अंतर्निहित दृश्य और प्रदर्शनात्मक पाठ हैं, मेरा शोध उत्तर देता है कि डिजिटल युग में संस्कृति का अनुवाद कैसे किया जा सकता है। हमारी संस्कृति और हमारी विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए। आवश्यक दस्तावेजीकरण के अधीन होने पर ऐसा सांस्कृतिक संरक्षण हो सकता है, जो फिर से हरियाणवी संस्कृति की सूक्ष्म समझ को बढ़ावा देगा। यदि दस्तावेजीकरण नहीं किया गया, तो न केवल ऐसी वस्तुएं और परंपराएं नष्ट हो जाएंगी, बल्कि समुदायों की अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान तक पहुंच भी नहीं रह जाएगी। ऐसी लोककथाओं की परंपराओं का संरक्षण समुदाय के सदस्यों, कलाकारों और दर्शकों को भी सशक्त बनाता है, और इसलिए देश के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत करता है। इस प्रकार, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए लोककथाओं की परंपराओं को संरक्षित किया जाना चाहिए।

प्रश्न : चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट रिसर्च ग्रांट के अलावा, आपको शास्त्री इंडो-कैनेडियन MITACS ग्लोबलिंक रिसर्च अवार्ड भी मिला है। क्या आप हमें कनाडाई विश्वविद्यालय में अपने समय के दौरान हरियाणवी लोककथाओं की परंपराओं, अहोई अष्टमी और देव-उठान एकादशी पर अपने आगामी शोध के बारे में अधिक बता सकती हैं?

मुस्कान : शास्त्री इंडो-कैनेडियन MITACS ग्लोबलिंक रिसर्च अवार्डी के रूप में, मैं कनाडा में एक सेमेस्टर बिताऊंगी।

मैं हरियाणवी अनुष्ठानों-अहोई अष्टमी और देव-उठान एकादशी का दस्तावेजीकरण करूंगी, जैसा कि हरियाणवी इंडो-कैनेडियन द्वारा किया जाता है। हरियाणवी प्रवासी सहित दुनिया भर में भारतीय प्रवासी आबादी की विशाल उपस्थिति है। एक शोधकर्त्ता के रूप में उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान ने मुझे आकर्षित किया और मैं इन अनुष्ठानों को मनाने के विभिन्न तरीकों को समझने के लिए उत्सुक थी। आपको संक्षेप में बताने के लिए, मैं हरियाणवी इंडो-कनाडाई लोगों द्वारा किए जाने वाले इन अनुष्ठानों का दस्तावेजीकरण करूंगी और भारत और कनाडा में किए जाने वाले इन अनुष्ठानों का तुलनात्मक विवरण तैयार करूंगी। चूंकि ये अनुष्ठान महिलाओं द्वारा और उनके लिए किए जाते हैं, इसलिए मेरे अनुदान का उद्देश्य पहली और दूसरी पीढ़ी की हरियाणवी महिलाओं के बीच अनुष्ठानों के अंतर-पीढ़ीगत संचरण की जांच करना और परिणाम स्वरूप महिलाओं के बीच साझा संबंधों का पता लगाना है। मैं प्रवासी समुदायों को शिक्षित करने और हरियाणवी इंडो-कनाडाई महिलाओं के लिए पहचान निर्माण की सुविधा प्रदान करने में एक अभ्यास के रूप में अनुवाद और नृवंशविज्ञान की भूमिका की भी जांच करूंगी। यह शोध अवसर मुझे अन्य कनाडाई विश्वविद्यालयों में भी अपना शोध प्रस्तुत करने, शिक्षाविदों से मिलने की अनुमति देगा। जिनके पास कनाडा में अनुवाद और लोककथाओं में महान विशेषज्ञता है, और इस प्रकार वे मुझे एक शोधकर्त्ता के रूप में बेहतर ढंग से सुसज्जित होने की अनुमति देंगे।

प्रश्न : आखिरी सवाल, आप उन महत्वाकांक्षी शोधकर्ताओं और विद्वानों को क्या सलाह देंगी, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और अध्ययन करने के बारे में भावुक हैं, लेकिन इस बारे में अनिश्चित हो सकते हैं कि अनुदान और अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान अवसरों की दुनिया में कैसे नेविगेट किया जाए?

मुस्कान : मैं ऐसे इच्छुक शोधकर्त्ताओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध पत्र प्रस्तुत और प्रकाशित करके अपने विद्वतापूर्ण कार्य को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करूंगी। मेरी सलाह होगी कि वे अपने शोध क्षेत्र के लिए उपलब्ध अनुदानों पर शोध करके, समय-समय पर ऐसे अवसरों पर नजर रखते हुए, अपने शोध को अद्यतन करके और इसे मजबूत बनाकर स्वयं को शिक्षित करें। आपके शोध को उन शोध प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करना चाहिए जिनका दुनिया अभी अनुभव कर रही है। शोध जितना समसामयिक होगा, उतना अच्छा होगा। कृपया कड़ी मेहनत करने से न डरें और अपने शोध के प्रति आस्थावान रहें। लोग आपको नीचा दिखाएंगे और आपके हमेशा अच्छे दिन नहीं आएंगे, लेकिन किसी को अकेले चलने से नहीं डरना चाहिए। अनुसंधान कभी-कभी अकेला और अलग-थलग हो सकता है, इसलिए कृपया एक सहायता प्रणाली स्थापित करें। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, कृपया अपने प्रति ईमानदार रहें। दिन के अंत में, आप केवल स्वयं से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

जिस्मानी ताल्लुकों का रूहानी शायर–जॉन एलीया

जीवन है तो इसकी खूबसूरती और बदसूरती दोनों ही आगे-पीछे चलती हैं, इसलिए जीवन भर जीवन से ही परिचय चलता रहता है। परिचय के संकोच जिस्मानी ताल्लुकों की लंबी फेहरिश्त में दम तोड़ते हैं तो अनायास ही याद आती हैं ये पंक्तियाँ -

शर्म दहशत झिझक परेशानी
नाज से काम क्यूँ नहीं लेतीं
आप वो जी मगर ये सब क्या है
तुम मेरा नाम क्यूँ नहीं लेतीं

–जॉन एलिया

जॉन एलिया एक फकीरी का एहसास है जिसमें न तो कोई मंजिल है, न ही कोई सफर, एक ऐसी तीरगी है जो उजाले की ओर अग्रसर तो है मगर निहायत अपनी ही शर्तों पर। जॉन एलिया, यह नाम आजकल हिंदी-उर्दू शायरों की जमात में और किसी न किसी वजह से अच्छी शायरी में रुचि रखने वालों के बीच एक अनसुलझी सीधी सी पहेली की भांति विद्यमान है, एक पहेली जो बड़ी सहजता से अनेक जटिलताओं को समाहित किए हुए है। उनके शेरों, नज्मों, लहजे, लफ्जों की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी पहले थी। एक ऐसा शायर जिसने अपनी नाकामी का भी बेखौफ ढिंढोरा पीटा, उनका एक शेर है-

क्या तकल्लुफ करें ये कहने में
जो भी खुश हैं हम उस से जलते हैं

जॉन एलिया हिज्र का लेखन एक सदाबहार रुहानी दरिया हैं जिसमें चाहे अनचाहे जिस्म सरोबार है। एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी उदासी और दुःख में भी अनेक खूबसूरत सकारात्मक संभावनाओं का हठात् सृजन किया। उनकी शायरी उनकी उदासी थी जिसे वो हर वक्त अपने चेहरे पर मले, ओढ़े रहते थे और जीते रहते थे। उनकी बगावत अपने होने से है, जॉन एलिया एक चिराग है जो रोशनी तो फैला रहा है पर कहीं न कहीं अपने ही अंधेरों में जल भी रहा है।

जॉन ने जीवन और जीवन की सच्चाईयों को बहुत ही सहज-सरल भाषा में उनके मूल स्वरूप में पेश किया है या यूं कहे कि पेश भी नहीं किया बस बयां कर दिया है। उनका एक मौजूं शेर है जो बहुत ही व्यावहारिक है और मनोवैज्ञानिक वृत्तियों को दर्शाता है।

गर्म-जोशी और इस कदर क्या बात
क्या तुम्हें मुझ से कुछ शिकायत है
अब निकल आओ अपने अन्दर से
घर में सामान की जरूरत है

जॉन तीखी बातों को भी बहुत ही बेबाकी और सहजता के मिश्रण के साथ कहते थे-

उम्र गुजरेगी इम्तिहान में क्या
दाग ही देंगे मुझ को दान में क्या
मेरी हर बात बे-असर ही रही
नुक्स है कुछ मेरे बयान में क्या
मुझ को तो कोई टोकता भी नहीं
यही होता है खानदान में क्या

कदाचित् कई जाने-अनजाने या पारम्परिक आलोचना के घिसे-पिटे कारणों से उन्हें नकारात्मक शायर भी माना गया, परन्तु जॉन सकारात्मक, नकारात्मक, अच्छे, बुरे की परिभाषाओं की परिधि से परे के शायर थे। जॉन तथाकथित मान्यताओं को ठुकरा कर अपने लिए नए रास्ते खोजने वाले सृजनात्मक शायर हैं जो नए सृजन के लिए विध्वंस के लिए सहजता से राजी है, और स्वयं को जोशो-खरोश से पेश करते हैं।

मैं भी बहुत अजीब हूँ, इतना अजीब हूँ कि बस
खुद को तबाह कर लिया और मलाल भी नहीं

जॉन जब यह कहते हैं कि मलाल भी नहीं तो मनोवैज्ञानिक कसौटियों पर कसने के दृष्टिकोण से यह समझने के लिए एक गलियारा देते हैं कि हो सकता है कि मलाल तो है, मगर दुनिया के रंग-ढंग में न ढलने की एक जिद में जीतने का जुनून भी है। जॉन ने बचपन में अपने वालिद से कहा था कि अब्बू! मैं कभी बड़ा नहीं होना चाहता। जॉन के इस कथन में कहीं न कहीं एक

मासूमियत है जो अपने मूल स्वभाव को छोड़ने से कतरा रही है। राजेश रेड्डी साहब का एक शेर है कि–

यहाँ हर शख्स हर पल हादसा होने से डरता है
खिलौना है जो मिट्टी का फना होने से डरता है
मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम सा बच्चा
बड़ों की देख कर दुनिया बड़ा होने से डरता है

जॉन हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी के ज्ञाता थे, इतना पढ़ा-लिखा होना भी उनके लिए एक बोझ बन गया। जॉन का व्यक्तित्व शब्दों की परिधि से परे लगभग अबूझ केटेगरी का है। जॉन कभी नहीं चाहते थे कि उनके बारे में कोई राय बनाई जाए या उन्हें किसी ढाचे में ढाला जाए। उनके समकालीन जितने भी शायर रहे हैं, जैसे नसीम निखट, अंजुम रहबर सबकी शायरी, लेखन में एक सलीका, एक अनुशासन है पर जॉन की शायरी में एक सूफानी, कबीरी, फकीरी, अक्खड़पन, एक बेलौस, आवारगी की बेफिक्री है। जॉन अपने अंतिम समय में जब कैंसर जैसी विकट बीमारी से जूझ रहे थे तो भी उनका एक शेर था -

मेरे कमरे का क्या बयां करूं,
यहां खून थूका गया है शरारत में

जॉन ने अपना जीवन, जीवन और मृत्यु के मध्य महीन दहलीज की जद्दोजहद पर जिया। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जब देह बोध तिरोहित हो जाता है या जब इसकी नश्वरता का ज्ञान होता है तो इसे समाधि कहते हैं। जॉन की भी इस रूहानी जीवन में कोई रुचि कभी नहीं रही।

जॉन एलिया का जन्म उत्तर प्रदेश के अमरोहा में हुआ। विभाजन के वक्त उन्हें पाकिस्तान जाना पड़ा पर अमरोहा से उनका गहरा लगाव अंतिम समय तक रहा। जब भी वह अमरोहा जाते वहां की मिट्टी को चूमते, उसमें बच्चों की तरह लेट जाते। उनके अनेक शेर अमरोहा से उनकी जुदाई की घनीभूत पीड़ा को बयां करते हैं। उनके दो शेर हैं कि–

तेरे गुलाब तरसते हैं तेरी खुशबू को
तेरी सफेद चमेली तुझे बुलाती है
तेरे बगैर मुझे चैन कैसे पड़ता है
मेरे बगैर मुझे नींद कैसे आती है

जॉन एलिया के जीवन और उनकी लेखनी में बहुत बड़ा योगदान उनकी महबूबा फारिया का रहा जिनसे जॉन को बचपन में ही इश्क हो गया था। हालांकि यह किस्सा मुक्कमल न हो सका जिसका दुःख जॉन को ताउम्र रहा। उन्होंने ताउम्र अपने शेरों के माध्यम से फारिया से गुफ्तगू में व्यतीत की। उनके कुछ शेर जो आज भी बहुत प्रचलित हैं-

नया एक रिश्ता पैदा क्यूँ करें हम
बिछड़ना है तो झगड़ा क्यूँ करें हम
खामोशी से अदा हो रस्म-ए-दूरी
कोई हंगामा बरपा क्यूँ करें हम

फारिया का निकाह किसी और से हो गया जिस कारण जॉन ने अपने होने से ही बगावत शुरू कर दी। फारिया के निकाह के बाद फारिया जॉन के जीवन का केन्द्र बन गई। जॉन धीरे-धीरे अवसाद में जाने लगे और एक वक्त ऐसा आया जब उन्होंने खुद को एक कमरे में कैद कर लिया। अब तक जॉन मानसिक रोगी हो चुके थे। इस सब के बीच उनका निकाह जाहिदा हिना से हुआ जो पाकिस्तान की जानी-मानी लेखिका और स्कॉलर थी। जॉन अपने पारिवारिक जीवन और उससे जुड़ी जिम्मेदारियों के निर्वाह में असफल ही रहे। फारिया की यादें एक परछाई की भाँति जॉन से जुदा न हो सकीं। इसका नतीजा यह हुआ कि जाहिदा हिना से उनका तलाक हो गया और जॉन घर छोड़ कर चले गए। इसके बाद जॉन ने खुद को बर्बादी के चरम पर ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनका एक शेर है -

हो रहा हूँ मैं किस तरह बर्बाद
देखने वाले हाथ मलते हैं

नाते-रिश्तेदारों ने जॉन को संभालने का भरसक प्रयास किया पर जॉन अदाबत पर उतर आए थे। रिश्तों के बंधन को लेकर वे बड़ी संजीदगी से कहते थे कि-

अब जो रिश्तों में बँधा हूँ तो खुला है मुझ पर
कब परिंद उड़ नहीं पाते हैं परों के होते।

उनके एक-एक शेर पर दिल दाद देने को होता है। जीवन भर कटुताओं को पीते रहने वाले जॉन जीवन की सच्चाइयों के गहरे जानकार थे, तभी तो उन्होंने कहा कि -

अपना रिश्ता जमीं से ही रक्खो
कुछ नहीं आसमान में रक्खा।

।नमन।

–अनुग्रह रावत
कनिष्ठ सहायक
भौतिकी केन्द्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

वो लौट आए हैं

आज हस्तिनापुर के महल में अजीब सी शांति थी। भय, खामोशी, बैचेनी का संगम सन्नाटे का रूप धर रहा था। कुछ ऐसा ही सन्नाटा था आज महल के विराट कक्षों और गलियारों में। धृतराष्ट्र अपने कक्ष में विचलित बैठे हुए थे। इतनी देर में दासी आयी और धृतराष्ट्र के सामने व्यंजनों की थाल रख दी, और मिलावटी मधुर आवाज में कहा– महाराज की जय हो, कृपया भोजन ग्रहण करें। महाराज की जय हो कहते वक्त न ही उसने हाथ जोड़े और न ही सम्मान में झुकी, उसको पता था कि चक्षुहीनों का कक्ष है, किसी को क्या आभास हो रहा है। एक तो जन्म से ही अन्धा है और गांधारी ने परिस्थितियों की निर्मम सच्चाई से पलायन करते हुए अच्छी भली आंखों पर पट्टी बांध ली है। अपने मन में हारकर भी जीत गई थी, गांधारी। चक्षुहीन व्यक्ति से विवाह का सपना भले कौन देखता है। उसने कभी इस चीज की कल्पना भी नहीं की थी। दासियों की दबी मुस्कान, सहेलियों की तंज मिश्रित सांत्वना, सब कानों में निरंतर गूँजता रहता है उसके। सिर्फ मां ही थी उसकी जो उसका दुख समझती थी। मां ने विवाह के समय श्रृंगार करते वक्त, हथेलियों में गांधारी के गालों को रखकर बड़ी प्रसन्नता के स्वर में कहा था, मेरी बेटी हस्तिनापुर की महारानी होने जा रही है और यह कहते समय गांधारी और उसकी माता की आंखों में पीड़ा अनायास ही गलने लगी थी, दोनों एक दूसरे से लिपट कर रोने लगी। दोनों ही अपनी पीड़ा को छिपाना चाहती थीं, किंतु सावन में लदे मेघ और कुचले हुए सपनों के भग्नावशेष अश्रु कब रुक पाते हैं? गांधारी जीवित तो थी मगर अंदर से मृत थी। ईश्वर के नाम से घृणा हो गई थी। महल में होती तैयारियों को देखकर पल-प्रतिपल घुटती थी गांधारी। विवाह का समय निकट आते आते तन और मन से बिल्कुल सूख गई थी गांधारी। चेहरे पर नाम मात्र का ही तेज बचा था। अपनी बहन को पल प्रतिपल घुटते देख रहा था शकुनि। जिस बहन की एक इच्छा पूरी करने के लिए महल की सभी दासी दौड़ती-भागती रहती थीं, आज वो ही गांधारी इच्छाहीन हो गई है। जिस गांधारी की खिलखिलाहट से विराट कक्षों में प्रफुल्लता तैर जाती थी आज उस गांधारी के होंठों पर सिर्फ कंपन है, एक ऐसा भाव जो न व्यक्त करता है अपनी मन की पीड़ा और न किसी पर कोई क्रोध - सब कुछ स्वीकार कर लिया है। मांग में सिंदूर भरने के समय गांधारी की मां ने धृतराष्ट्र का आगे बढकर हाथ थामा, चक्षुहीन को चक्षुहीनता का एहसास न हो। मां ने गांधारी के माथे पर से घूंघट हटाया था। गांधारी की आंखों को देखकर भय से कांप गई थी उसकी मां। स्तंभित हो गई थी उस दृष्टि को देखकर। भगवान शिव के तीसरे नेत्र की भांति ज्वाला धधक रही थी गांधारी की आंखों में। एक पल को कदम पीछे हो गए थे उसकी मां के। भगवान शिव ने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म किया था। शिव की तपस्या में बाधा उत्पन्न जो कर रहे थे। परन्तु यहां गांधारी और उसकी मां दोनों ही भस्म हो गई थी, मां भस्म हो गई थी गांधारी की आंखों से निकलती पीड़ा की ज्वाला से और गांधारी अपने स्वप्नों की जलती चिता पर स्वयं जल कर राख हो रही थी। सखियों ने कैसे-कैसे कटाक्ष किए थे उस पर, कि अंधे से शादी हो रही है। अपने शैशव काल में मिट्टी के राजकुमार बनाया करती थी गांधारी। पिता से कहकर रोज नए वस्त्र मँगवाती थी अपने मिट्टी के राजकुमार को सजाने के लिए। घंटों सजाती थी इन मिट्टी के राजकुमारों को। माता को कक्ष से हाथ पकड़कर लाती थी अपने सजाए राजकुमार दिखाने। मां भी मोहित होकर कहती थी, कि सबसे सुंदर राजकुमार से ही विवाह होगा मेरी गांधारी का। परन्तु राजनीति सभी समीकरणों, इच्छाओं, परिस्थितियों को पल भर में बदल देती है। गांधारी का हस्तिनापुर में विवाह राजनीतिक कारणों से हुआ था।

गांधार हस्तिनापुर का प्रतिरोध करने का साहस नहीं कर सकता था। जिस हस्तिनापुर के पास गंगापुत्र भीष्म जैसा रक्षक हो, वहां शस्त्र से प्रतिकार साक्षात मृत्यु को गले लगाने जैसा है। गंगापुत्र के धनुष की टंकार शत्रु के मन को विचलित ही नहीं धाराशायी कर देती थी। जिस भीष्म के प्राण बाणों की शरशैय्या पर निकले, अपने जीवन काल में अनगिनत शत्रुओं के साक्षात काल बने थे।

सब कुछ एक झंझावात की तरह तैर रहा था गांधारी की

आंखों के सामने। इतने में दासी ने आकर प्रणाम किया, महारानी की जय हो! महाराज आपको याद कर रहे हैं।

झुँझला कर गांधारी ने कहा- जाकर कह दो महाराज से प्रतीक्षा करें।

दासी जाने को पलटी किंतु गाँधारी का स्वर गूंजा रुको! जाकर कह दो महाराज से, अभी आ रही हूँ। क्रोध को पी लिया था गांधारी ने। भगवान शिव ने सृष्टि को बचाने के लिए एक बार विषपान किया था परन्तु यहां गांधारी राजसी मर्यादा, और अपने अंदर धधकती ज्वाला को दबा कर पल-प्रतिपल विषपान कर रही थी। गांधारी की आंखों में मूक पीड़ा थी। उनमें आक्रोश भी था, प्रतिरोध भी और अपनी चुनी हुई असहायता की एक निरीह स्वीकृति भी।

कुंती अपने पांच बालकों के साथ हस्तिनापुर के विशाल द्वार पर खड़ी थी। सहदेव कुंती की गोद में थे, वे पांचों में सबसे छोटे थे। नकुल सहदेव से बड़े थे और कुंती का हाथ पकड़ कर खड़े हुए थे। पांचों बालक विस्मय से कभी मां को देख रहे थे, कभी हस्तिनापुर के विशाल द्वार को और कभी तलवार लिए हुए द्वार पर खड़े द्वारपालों को। द्वारपाल भी आश्चर्य से कुंती और उसके पांच पुत्रों को देख रहे थे। द्वारपाल ने सूचना भिजवा दी थी कि महारानी कुंती द्वार पर अपने पांच पुत्रों के साथ खड़ी हैं। उसे आगे के आदेश की प्रतीक्षा थी। सहदेव मां की गोद में बैठकर मां के बालों को अपनी नन्ही-नन्ही हथेलियों में फंसा रहा था, फिर एकदम से खींच लेता था हाथों को, कुंती के मुख से सहदेव जैसे ही निकलता, सहदेव हंसकर दोनों हथेलियों से कुंती का मुख पकड़ लेता। कभी कुंती के गले में पड़े रूद्राक्ष से खेलने लगता, कभी उसको खींचने लगता और कभी अपनी उँगलियों से मां की आंखों में डालकर देखना चाहता कि इनमें भीतर इतना गहरा क्या है? इतना सरल नहीं था कुंती की आंखों में झांकना। भीम महल की बाहरी प्राचीर को स्पर्श करके उत्साहित हो रहा था। धरती पर पड़े एक पत्थर को उठाकर भीम महल की प्राचीर पर अपना नाम लिखने लगा। आनंदित महसूस कर रहा था भीम। पहली बार वन से बाहर का जीवन देख रहा था भीम। मजबूत लाल पत्थरों से बनी प्राचीर को देखकर सबसे पहला विचार भीम के मन में उस प्राचीर को गिराने का ही आया। सृजन में विश्वास नहीं था भीम का। वह प्राचीर की मजबूती को अपने नन्हें हाथों से परख रहा था। प्राचीर की ईटों का दरदरापन, भीम को किसी रेशमी वस्त्र के स्पर्श से कम नहीं लग रहा था।

पीछे से कुंती ने पुकार - भीम क्या कर रहे हो वहां?

भीम ने सुनकर भी अनसुना कर दिया। भीम मां की हर समय के टोका- टाकी, उपदेशों से चिढ़ जाता था। भीम जानता था कि वह मां को नहीं समझा सकता कि वह कितना महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है? भीम ने चिल्लाकर कहा - अर्जुन - जाओ मां बुला रही हैं।

अर्जुन पेड़ पर बैठी चिड़िया को बड़े गौर से देख रहा था। बिल्कुल स्थिर खड़ा था अर्जुन, जैसे कोई हठ योग कर रहा हो। सांसें नियंत्रित, आँखें लक्ष्य पर, और ध्यान सिर्फ चिड़िया पर। हवा की गति को महसूस कर रहा था अर्जुन, अपनी उँगलियों में रक्त प्रवाहित होते हुए महसूस कर रहा था अर्जुन। पूरा शरीर धनुष की प्रत्यंचा की तरह तन गया था।

भीम और अर्जुन अपनी-अपनी साधनाओं में व्यस्त थे, युधिष्ठिर धीर गम्भीर भाव से आकाश की ओर देख रहा था। चेहरे पर एक विराट तेज, आंखों में एक विरल सा त्याग था। ऐसा लगता था जैसे इच्छाओं पर विजय पा ली है इस बालक ने। तभी युधिष्ठिर के कानों में सहदेव के रोने की आवाज आयी। सहदेव गोदी से उतरने की जिद कर रहा था।

युधिष्ठिर मां के पास आए और बोले सहदेव को मेरी गोदी में दे दीजिए मां, आप थोड़ी देर विश्राम कीजिए।

युधिष्ठिर की बात सुनकर कुंती ने दुलार से युधिष्ठिर के सिर पर हाथ फेरा। कितना गम्भीर था यह बालक?

इतनी देर में भीम दौड़ता हुआ आया और बोला मां घर चलो भूख लग रही है।

कुंती कुछ असहज हो उठी। कुंती को लगा उसकी आंखों में अश्रु भर आए हैं और यदि उसने स्वयं को नियंत्रित नहीं किया तो टपक पड़ेंगे। कुंती ने खुद को संभाला और बोली थोडी देर प्रतीक्षा करो पुत्र।

कितनी प्रतिक्षा करू मां? इतनी देर से यहां धूप में खड़े हैं। हम यहां क्यू आए हैं मां? चलो न वापस घर।

भीम वापस चलने का हठ करने लगा और मां का हाथ पकड़कर वापस वन की दिशा में खींचने लगा तब कुंती ने कहा- अब यही हमारा घर है पुत्र। कुंती की आंखों में एक अधिकार झलक रहा था।

भीम ने बड़ी प्रसन्नता और विस्मय से कुंती से पूछा- यह हमारा घर है?

कुंती ने मुस्करा कर समर्थन किया और नेत्रों से अश्रु धारा बह निकली।

यह समझ पाना कठिन था कि यह अश्रु अधिकार वापस पाने के हर्ष में हैं या इतने समय तक अधिकार से वंचित होने की पीड़ा के हैं?

पितामह भीष्म अपने कक्ष में ध्यानस्थ थे। भीष्म का कक्ष बड़ा ही साधारण सा था। राजसी सुख सुविधाओं का कोई नामो निशान नहीं था। धरती पर एक दरी पड़ी हुई थी जिस पर बैठकर वे ध्यान करते थे। दास कई बार आकर देख कर जा चुका था और प्रतीक्षा में था कि कब पितामह आंखें खोलें और उन्हें कुंती के आने का समाचार दें। समाचार महत्त्वपूर्ण था। मगर ध्यान में बाधा बनने का कोप भी नहीं झेलना चाहता था। तभी एक दूसरा दास वहां से गुजर रहा था। दिमाग में एक तरकीब दौड़ी, दास ने दूसरे दास से चिल्लाकर कहा पता है राजकुमारी कुंती पांच पुत्रों के साथ द्वार पर खड़ी हैं। यह कहकर जैसे ही वह पीछे मुड़ा, पितामह उसके सामने खड़े हुए थे, अपने इतने समीप पाकर दास लड़खड़ाया, और स्वयं को संतुलित करते हुए बोला- पितामह की जय हो, महारानी कुंती, राजकुमारों के साथ मुख्य द्वार पर प्रतीक्षा कर रही है।

भीष्म की आंखें छलछला उठीं। वह मुख्य द्वार की तरफ दौड़े। जाते-जाते उन्होंने दास को आदेश दिया- धृतराष्ट्र को सूचित करो, कुंती लौट आयी हैं। हुंकार, प्रसन्नता, उम्मीद, क्या नहीं था इस स्वर में- कदाचित अपराध बोध से मुक्ति भी?

धृतराष्ट्र अपने सिंहासन पर विराजमान थे। दुर्योधन अपने पिता के मुकुट को हाथ में लेकर, उसे अपने सिर पर लगाने का असफल प्रयास कर रहा था। मुकुट बड़ा था, दुर्योधन का पूरा चेहरा ही मुकुट के अंदर छिप जाता था। दुर्योधन ने अपने पिता से सवाल किया- पिताजी क्या मुकुट मस्तक पर रखने से आंखें बंद हो जाती है? बंद आंखों से मैं सभा को देखूगा कैसे? सभी को आदेश कैसे दूँगा? धृतराष्ट्र मुस्कुरा कर प्रफुल्लित होकर बोले जैसे मैं देता हूँ, वैसे तुम भी दिया करना। दुर्योधन को समझ नहीं आया कि पिताजी का क्या तात्पर्य है। दुर्योधन ने अगला प्रश्न किया, पिताजी मैं राजा कब बँनूगा? यह महल के दास और दासी मेरी बात नहीं मानते हैं। कल मैं छड़ी से माली को मार रहा था, वो हमें वृक्ष पर चढ़ने से मना करता है, तो उसने मेरे हाथ से छड़ी लेकर तोड़ दी। पिताजी आप उसको दण्ड दीजिए। धृतराष्ट्र अपने पुत्रों की बाल लीला का आनंद ले रहे थे। दुर्योधन को भावी राजा बनाने का स्वप्न चक्षुहीन काया से निरन्तर जपते थे धृतराष्ट्र। उन्होंने दुर्योधन से पूछा क्या दंड देना चाहते हो माली को? दुर्योधन ने दुःशासन की तरफ देखा। दोनों की आंखों में सहमति की चमक थी, फिर दोनों के मुख से एक साथ निकला मृत्युदंड।

तभी दास ने आकर धृतराष्ट्र को प्रणाम किया– महाराज की जय हो। महारानी कुंती, पांच पाण्डवों के साथ वन से लौट आयी हैं और मुख्य द्वार पर खड़ी हैं।

यह समाचार सुनते ही धृतराष्ट्र के चेहरे का रंग उड़ गया। चेहरे पर प्रफुल्लता की जगह खीझ और घृणा ने ले ली थी। चिंता की रेखाएं माथे पर स्पष्ट दिख रही थीं। तभी दुर्योधन के हाथ से मुकुट छूट गया और सिंहासन के सामने सीढ़ियों पर लुढ़कता हुआ धरती पर जा गिरा। मुकुट के गिरने की आवाज, धृतराष्ट्र को किसी अपशकुन के आगमन की चेतावनी सी लगी।

भीष्म व्याकुलता, उत्साह, प्रसन्नता, घबराहट में द्वार की ओर दोड़े चले जा रहे थे। वस्त्र हवा में उड़ रहे थे, केश माथे पर लहरों की तरह आ जा रहे थे। उनके पदचापों से महल के गलियारों में एक कंपन गुंजायमान हो रहा था। दास-दासी सभी किनारे हो गए थे। पितामह को कभी किसी ने इतना व्याकुल, हर्षाकुल, स्वागतोत्सुक नहीं देखा था।

पितामह को दौड़ते आते देख, द्वारपाल सावधान हो गए। पितामह चिल्लाते आ रहे थे, द्वार खोल दो। वो लौट आए हैं। वो लौट आए हैं।

–अनुराग रावत
कनिष्ठ सहायक, मैकेनिकल एवं
यांत्रिकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी शिक्षण विभाग,
भा.प्रौ.सं. मंडी

अ लेटर टू माय लॉन्ग डिस्टेंस गर्लफ्रेंड

डीयर स्वेतलाना,

उम्मीद करता हूँ कि ये लेटर तुम्हें होर्लोवो की सुरम्य सुंदरता के बीच, प्यार और खुशी के साथ गर्मजोशी भरे आलिंगन में मिलेगा। जब मैं यह लेटर लिखने बैठा, तो मैंने खुद को उन भावनाओं से अभिभूत पाया, जिन्हें मैं तुम्हारे साथ बांटना चाहता हूँ। जानती हो, तुम्हारे बिना दिन यहाँ, अनंत काल की तरह खिंचते चले जा रहे हैं और हर रात मैं खुद को सितारों की ओर देखता हुआ पाता हूँ। यह जानते हुए कि वे सितारे वही हैं, जो मॉस्को में तुम्हारे सामने चमक रहे हैं। हमारे बीच दूरियाँ बहुत हो सकती हैं, लेकिन हमारे प्यार की कोई सीमा नहीं है और हमारा प्यार हर गुजरते दिन के साथ और भी मजबूत होता जा रहा है।

यहाँ दिल्ली में पतझड़ का मौसम आ गया है। अक्सर गिरते पत्तों और उजाड़ मौसम को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। फिर सोचता हूँ कि ये दिन, मौसम, साल और कैलेंडर तो बस हम इंसानों की बाहरी दुनिया से ही वास्ता रखते हैं। वे जैसे अंदर की दुनिया से हमेशा मात खाते रहते हैं। जानती हो इस जिंदगी में हमें कुछ ऐसे लोग भी मिलते हैं, जिन्हें हम सिर्फ देखते ही नहीं हैं, बल्कि महसूस भी करते हैं, जिनका व्यक्तित्व एक प्रिय गीत की तरह हमारे मन और हृदय को छू जाता है और बहुत कम लोगों की आँखों मे बहुत कुछ देखा जा सकता है। उनसे कुछ समझा जा सकता है। उनसे कभी-कभी अधूरे गीत की तरह आभास मात्र मिलता है। शायद, तभी एक इंसान के लिए दूसरे इंसान का मन एक अँधियारा कमरा होता है। कई बार हम चाहते हैं कि मोमबत्ती ले जाकर झाँक आएं सामने वाले इंसान के मन में, मगर नहीं, ऐसी बेहूदगी करने की अनुमति इस संसार में किसी को नहीं है। कोई इंसान, दूसरे इंसान को ऐसी आजादी कभी नहीं दे सकता। हरेक इंसान के मन का यह अँधेरा ही तो उसका अपना होता है। वह बचपन से लेकर अपनी आखिरी साँस तक उसमें न जाने कितनी चीजें एकत्र करता रहता है। कभी-कभी तो मन के शांतचित्त में बैठकर हम ऐसी स्मृतियाँ बना लेते हैं कि न जाने क्यों ऐसा लगने लगता है कि कोई इंसान हमारे लिए समूचा संसार बन जाता है। उस समय ऐसा लगता है, हमारी सारी प्रसन्नता, हमारा सभी कुछ उस इंसान पर निर्भर है। हमारी जिंदगी, हमारी मुक्ति भी उस पर आधृत है।

शायद हम इंसानों के चारों ओर किला-बंदी होती है और हर इंसान उस किले के अंदर अपने को बुद्धिमत्तापूर्ण सुरक्षित समझता है। मगर एका-एक कोई दूसरा इंसान वह किला तोड़कर भीतर घुस आता है। हमारा अकेलापन गुम हो जाता है। ऐसा लगता है, वह सदा हमारे साथ है। जागने में, नींद में, खाते समय, काम करते समय, प्रतिफल वह हमारे साथ होता है। हम स्नान-घर में जाकर कपड़े उतारकर नंगे हो सकते हैं, पर कितने ही प्रयत्न क्यों ने कर लें, हम उस इंसान से दूर नहीं हो सकते। वह दूसरा इंसान हमारे इतने नजदीक आ जाता है कि हम उसकी साँस लेने की आवाज, उसके हृदय की धड़कनें, उसके शरीर की गंध, सब देख, सुन और सूँघ सखते हैं। सच तो यह है कि वह इंसान हमें अपने आपसे भी ज्यादा करीब लगता है, ज्यादा प्यारा लगता है। अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर करने को जी करता है। लगता है, वही सब कुछ है, उसके सिवाए संसार में और कोई नहीं है। तुम तो जानती हो, मेरी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा अँधियारे में खुद के साथ संघर्ष करते हुए निकल गया। प्रतिफल मेरे मन में यह विचार घूमते रहते हैं कि क्या इस जिंदगी का होना हमारे मरण तक, किसी इंसान के साथ से ही पूर्ण होना जरूरी होता है?

जब हम पहली बार मिले थे, तब उस मुलाकात के बाद तुमने ही कहा था कि मैं कितना निर्मोही, निर्लोप, रूखा और बेपरवाह इंसान हूँ। मुझे मालूम है, मुझे लोगों की दोस्ती स्वीकार करने में बहुत समय लगता है या कह सकता हूँ कि मैं एकदम से किसी पर विश्वास नहीं कर पाता, जिस कारण मेरी जिंदगी में

मित्रों की संख्या बहुत कम है, हाँ जो मित्र हैं उनपर मैं आँख बंद करके विश्वास कर सकता हूँ। मगर इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं कि मैं सभी को झूठा समझता हूँ। हाँ एक बार मैं हर एक बात को सच की निगाहों से जरूर देखना पसंद करता हूँ। और वैसे भी सच आखिर होता क्या है। बस सभी का अपना-अपना नजरिया है सच को लेकर। और इसके विपरीत सच्चाई की परिभाषा अलग जिसमें जो कुछ दिखता है, वही सच नहीं होता। हमारे भीतर बहुत कुछ गैस की तरह दबा रहता है, भरा पड़ा रहता है। हम सभी कुछ अपनी बाहों में नहीं भर सकते। बहुत कुछ यहाँ-वहाँ गिर जाता है, काल के गर्भ में गुम हो जाता है।

वैसे भी अगर हम अपने मन से पूछें कि हम इस दुनिया में कितने लोगों को सचमुच जानते हैं, तो हमें शायद इने-गिने नाम ही याद आएंगे। जिंदगी के हर मोड़ पर हमें कई लोग मिलते हैं। कुछ तो जिंदगी की राह पर अच्छा-खासा समय हमारे साथ होते हैं, मगर तुम ही बताओ उनमें से कितने कम लोगों को हम सही-सही पहचानते हैं। पति-पत्नी जिंदगी का पौना हिस्सा एक-साथ रहते हुए भी अक्सर एक-दूसरे के लिए बंद किताब की तरह रहते हैं। हाँ, कभी-कभी कोई भटकती हुई आत्मा, बिजली की तरह कौंधकर, सब कुछ दर्शाकर गायब हो जाती है। हालांकि, उस एक क्षण का संक्षिप्त दर्शन कई मौसमों तक हमारे साथ रहता है। और यह नियति द्वारा ही परिभाषित होता है कि हरेक इंसान के लिए उसका पूरक नियति ही बनाती है। कई बार हम उस पूरक को पहचानने और स्वीकार करने में बहुत देर कर चुके होते हैं। और कभी-कभी हम खुद को पहचानने में भी सफल नहीं होते।

याद है... मैंने उस रोज जेएनयू के ब्रह्मपुत्र में तुम्हें अपनी डायरी दिखाई थी। स्वेतलाना मैंने चौबीस साल तक डायरी लिखी है, इस उम्मीद के साथ कि मैं अपने दिल में कोई दीया जला पाऊँगा, इस उम्मीद के साथ कि मैं अपने आपको समझ सकूँगा, मगर चौबीस साल के संघर्ष के बाद भी मुझे ऐसा लगता है कि मेरे अंदर उतना ही अंधेरा है, जितना पहले था। मैंने अपनी जिंदगी के धागों को उलझाया है, सुलझाया नहीं है।

जानती हो... अक्सर संघर्ष करते हुए थक जाने पर जगजीत सिंह और नुसरत साहब को सुनता हूँ, तब मुझे बहुत सुकून मिलता है। ऐसा लगता है जैसे मैंने दुनिया का रहस्य जान लिया है। वह रहस्य जो मुझसे छिपा हुआ है, अज्ञात सूक्ष्म है। वह रहस्य मन को छू जाता है। मगर जैसे ही उस ग़ज़ल या कव्वाली का नशा टूटता है, तो दुनिया पहले सी ही दुर्गम और रहस्यमयी लगने लगती है। कभी-कभी तो पास बैठे हुए इंसान की साँस लेने की आवाज से लगता है कि यह दुनिया अभी जिंदा है। शायद यह जिंदगी लुकाछिपी का खेल है जहाँ हमारा मनमोहक कहीं अदृश्य हो जाता है और फिर हमारा दिल उसके वियोग में कभी सोचना चाहता है, कभी रोना चाहता है। और कभी-कभी शांत बैठे अपनी चुप्पी तोड़ने पर बढ़ा संकोच होता है। ऐसा लगता है जैसे किसी पवित्र-स्थान पर अपवित्र काम कर रहे हो। हमें क्यों बचपन से सिखाया जाता है कि जिंदगी में सुकर्म करोगे तो स्वर्ग मिलेगा और कुकर्म करोगे तो नरक में जाओगे। मुझे सच में पता नहीं, ये स्वर्ग और नरक कहाँ हैं। लेकिन इसी जिंदगी में, इसी संसार में, इसी जन्म में भी तो स्वर्ग और नरक हैं। मैंने तो वे दोनों देखे हैं साथ-साथ।

स्वेतलाना ना जाने क्यों कभी-कभी ऐसा लगता है, मेरे मन में इतने तूफान हैं, जितने तूफान शायद इस समूचे संसार में नहीं हैं। हमेशा तन और मन में अशान्ति रहती है। मेरी ऐसी अभिलाषा है कि मैं पर्वतीय झरने की तरह दिनोंदिन एक तालाब में बदल जाऊँ, जो महदूद है। और कुछ ही दिनों बाद फिर मेरी जिंदगी सांझ की तरह शांत हो जाए। मगर इस दुनिया ने मुझे भी रस्सियों से बांध रखा है। वैसे भी हर इंसान की थोड़ी सी आत्मा ही उसके व्यक्तित्व में बाहर रहती है। उस आत्मा का बढ़ा हिस्सा तो भीतर ही छुपा रहता है, कभी-कभार, क्षण दो क्षण के लिए दिख जाता है फिर गुम हो जाता है।

तुम्हें उत्तराखंड का वो पिथौरागढ़ गाँव याद है? जहां बर्फीले मौसम में हमने साथ में केंपिंग की थी। जानती हो, उस रोज उस बर्फीले 16000 फीट उप्पर पहाड़ पर पहुँच कर नीले अंतहीन आकाश, सुर्ख नीले रंग के पानी की झील, ठंडी-ठंडी हवाओं को महसूस करना मेरे लिए एक विचित्र अनुभव था। सबसे पहले तो मुझे डर लगा था, दिल बहुत जोरों से धड़क रहा था, फिर ऐसा लगा मैं अचानक निर्वस्त्र हो रहा हूँ, नग्न हो रहा हूँ, फिर ऐसा लगा जैसे मैं वापिस अपने किशोरावस्था में पहुँच गया हूँ, जहां किशोरावस्था में जन्मे प्रेम में अपनी प्रियतमा को चोरी चोरी निहारने में अजीब सा मजा आता है, फिर कुछ क्षण बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कोई शिशु बन गया हूँ जो अपनी माँ के आँचल में सिमटकर दूग्धपान कर रहा है, मगर शीघ्र ही मेरा शरीर भुनभुनाने लगा, मेरा मन और अवचेतन एकदम स्थिर हो गए, मैं केवल शून्य मात्र ही रह गया, मैंने अपनी आंखें बंद

करके अपने दोनों हाथ फैला दिए और शांतचित्त से वहाँ खड़ा हो गया, वहाँ मुझे बहुत पीछे छोड़कर शेष रह गई थी सिर्फ मेरी आत्मा। यही वजह थी कि मेरी आँखों में उस रोज आँसू थे, जिसे मैं तुम्हारे बार-बार पूछने पर भी नहीं बताया था कि मेरी आँख में आँसू क्यों हैं।

कैंपिंग से मुझे याद आया, तुम्हें बाली इंडोनेशिया याद है? जानती हो मेरे... लिए तुम्हारे हाथों में हाथ डाले बाली के उस समुन्द्रतट पर रात में टहलते हुए बहुत दूर तक निकल जाना बहुत सुखद अनुभव था। तुम्हें तो मालूम है मुझे शामें और एकांत कितना पसंद है। वहाँ सिर्फ तुम, मैं, समुन्द्र का किनारा और लहरें होती थीं। उस समय समुन्द्र की आवाज आसमान में फैल जाया करती थी। मैं तुम्हारे आलिंगन में सिमटा किसी बिन्दु की तरह उस अथाह कुदरत में गुम हो जाता था। जानती हो ऐसे में कभी-कभी सृष्टि में कितना बढ़ा आनंद आता मिलता है। वह दृश्य मेरे समूचे अस्तित्व को झकझोरकर रख देता था। तभी मैं तुम्हारे आलिंगन में सिमटा बिलकुल खामोश होकर उस सौंदर्य को देखा करता था। तुम्हें याद है न, जब सूरज ढलने के लिए होता था, तब हम खामोश होकर पश्चिम की ओर निहारा करते थे। उस समय मुझे ऐसा लगता था, जैसे मेरा अस्तित्व उस समय की हल्की गर्मी में गलकर स्वर्ण बन गया हो। ऐसा लगता था कि अगर इस जिंदगी का अंत मृत्यु ही है, तो वह आज क्यों नहीं आती। ऐसा लगता था कि मैं तुम्हारी गोद में सिर रख उस हृदयस्पर्शी शांति में कहीं खो जाऊँ। तुम्हें बाली की यात्रा का अंतिम दिन याद है? जब हम रात में एक नाव में बैठकर चाँदनी रात का मजा लेने समुद्र की ओर गए थे। तुम तो थोड़ी देर बाद थककर सो गई थीं। लेकिन मैं उस पूरी यात्रा के दौरान जागा रहा था। उस रात मेरी दृष्टि सामने क्षितिज की ओर गयी थी, उस ओर, जिस ओर नाव चल रही थी। पेड़ों से दूर मैदान के उस पार, आकाश के छोर पर कुछ घट रहा था। लग रहा था, कोई नाटक हो रहा था। धरती के भीतर से रोशनी फूट रही थी, बहुत हल्की, झीनी। परंतु वह रोशनी बढ़ती जा रही थी, चारों ओर धीरे-धीरे फैलती जा रही थी। ऐसा लग रहा था, किसी एक नए जन्म का उदय हो रहा था। मानव के जन्म में सुख-दुःख मिले होते हैं, परंतु चंद्र का उदय कितना शांत, सुंदर, सुखमय और मधुर था। वह अद्‌भूत दृश्य था। सच में, मैंने वैसा दृश्य अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा था। दोनों ओर पेड़ थे, काले-काले पेड़। उसके बाद मटियाला मैदान, कौसों तक फैला हुआ। और क्षितिज पर, जहां धरती और आकाश आलिंगनबद्ध थे, उनके प्रेम की निशानी चाँद, शीतल, सुंदर, धीरे-धीरे धरती के गर्भ से उठ रहा था और चारों ओर रोशनी फैल रही थी। मेरे मन ने अपनी सभी खिड़कियां और दरवाजे खोल दिए थे। मेरी आँखें ही नहीं, अपितु प्रत्येक अंग उस दृश्य में लीन हो गया था। मुझे लगा था, जैसे मैं भी उसी दिन इस संसार में जन्मा था। उससे पहले की समस्त मेरी जिंदगी बेकार थी। प्रकाश का एक शीतल जल-प्रपात मेरे हृदय में बहने लगा था। चाँद धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। धरती निर्वस्त्र नहा रही थी। पेड़ खामोश हो गए थे, जैसे भीतर ही भीतर कोई दुःख पी रहे हों। आकाश एक बड़ी झील हो गया था। उसका पानी ऐसे साफ था, जैसे नंगा चंद उसमे नहाते हुए पूरा दिखा था। क्या इस धरती पर इतनी सुंदरता हो सकती है! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। लगता था, चारों ओर सौंदर्य कूट-कूट कर भरा था, परंतु हमारा मन ही उसे ग्रहण करने में असमर्थ था। मैं वहाँ बैठा सामने देखने लगा था। पल-पल में दृश्य बदल रहे थे। मेरा शरीर, मेरी आत्मा अमृत रस पी रही थी। मुझे लग रहा था, मेरी जिंदगी में जो कुछ असुंदर है, स्वर-हीन है, वह उसमें धुल जाएगा। उसकी बजाय एक सौंदर्य, एक मधुर लय मेरे अन्तःकारण में जाग उठेगी। चाँद धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा था। अंधेरा मिट रहा था। रोशनी फैल रही थी। दोनों किनारे रूप और आकार पाने लगे थे। पेड़-पौधे खेत, छोटी झोंपड़ियाँ। नाम जो छिपे हुए थे, वे सब जाहिर होने लगे थे। मटियाला पानी चांदी की धारा में बदलने लगा था। आकाश के जो तारे वहाँ उस मेले में आकर एकत्र हुए थे, वे अब एक-एक होकर छिटकने लगे थे। ऐसा लग रहा था कि कोई एक कहीं बहुत दूर बीन बजा रहा था। उस बीन की हल्की-हल्की झीनी आवाज सृष्टि में फैल रही थी। पानी की लप-लप ध्वनि भी विचित्र लग रही थी। यह ध्वनि जैसे पाताल में से आ रही थी। यही एक वजह थी कि घर लौटने पर कई दिनों तक मेरा मन नहीं लगा था।

हमारे रिलेशनशिप को सात साल हो गए हैं और ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो जब किस्मत ने हमें मिलवाया था। मैं जानता हूँ हम मीलों दूर हैं। लेकिन तुम मेरे दिल में हो और तुम्हारा प्यार वह सहारा है, जो मुझे जमीन से जोड़े रखता है। जब भी मैं खोया हुआ महसूस करता हूँ, मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ और अचानक, दुनिया मेरे लिए एक बेहतर जगह बन जाती है। मैं कल रात हमारे पुराने किले वाली

फोटो देख रहा था, जिसे तुम्हारी कजिन जूलिया ने क्लिक किया था। फोटो देखते हुए मैं सोचने लगा कि मैं दिल्ली को कितने करीब से जानता हूँ? दिल्ली में जाड़ों के शुरुआती दिन बहुत प्यारे लगते हैं। ऐसा लगता है, जैसे तन में ताजगी भर रही हो और हम उम्र में छोटे हो गए हों। और वैसे भी कुछ जगह सपनों की तरह होती हैं, अस्पष्ट, सुंदर, वाचाल, गायक, समूचे अस्तित्व को हिला देने वाली! मुझे मालूम है तुम्हें दिल्ली बहुत पसंद है। तभी तो दिल्ली में इतने दिन रहने के बावजूद भी मैं उन जगहों को नहीं देखा जहां तुम घूम चुकी हो और मुझे तुमने घुमाया है। इतिहास की तुम्हारी समझ का मैं दीवाना हूँ। और जो तुमने दिल्ली के खण्डहरों से सदा ही प्रेम किया है, उसका मैं कायल हूँ। तुमने ही मुझे बताया था कि खण्डहरों में कई कहानियाँ सोई हुई रहती हैं। भटकते-भटकते अचानक ही कोई कहानी स्वयं बोलने लगती है। कहीं उसका केवल प्रारम्भ होता है, तो कहीं अंत। खण्डहरों में सम्पूर्ण कहानियाँ नहीं होतीं। कभी कोई गीत गूंज उठता है और एक ही पंक्ति के बाद खत्म हो जाता है। तुम्हारे वॉरसा लौटने पर मैंने दिल्ली जैसे बड़े शहर में, जहां केवल खण्डहर नहीं हैं, कला की कई और जगह भी छान मारीं। ऐसी जगह, जहां केवल आत्माएँ नहीं होतीं। ऐसा लगता है, वहाँ कला शताब्दियों से जागृत है। मैं एक बार खुद से एक खण्डहर में गया था। मैंने पाया कि कोई मेरे पार्श्व में आकर खड़ा है, किंचित स्पर्श से, दृष्टि से, मुस्कान से, अश्रु-आर्द्र मुख से अपनी-अपनी कहानी कह रहा है। उस समय वहाँ, कोई भी श्रोता स्वयं को भुलाकर स्वयंमेव को इतिहास का एक अध्याय बन जाता है।

तुम्हारे पास मेरे अंधेरे दिनों को उज्ज्वल बनाने वाली जादुई क्षमता है और मैं इसके लिए हमेशा आभारी हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि चाहे हम कितने भी दूर क्यों न हों, तुम मेरे अस्तित्व की धड़कन हो। मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ, जितना शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है और मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें अपने अस्तित्व के हर पहलू से प्यार करता रहूँगा, चाहे जिंदगी हमें कहीं भी ले जाए। तुम्हारा इंडिपेंडेंट अंदाज मुझे तुम्हारा मुरीद बनाता है। जब मैं तुम्हें देखता हूँ और बाकी औरतों को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि औरत एकाकी नहीं जी सकती? क्या उसका कोई अलग व्यक्तित्व, कोई निजी जिंदगी नहीं है? क्या यह आवश्यक है कि वह सदा किसी आदमी के साथ पल्लू में बंधकर उसके आगे-पीछे फिरती रहे? क्या इसके बिना औरत की गति नहीं है? मुक्ति नहीं हैं? मैं इसके लिए माफी चाहता हूँ, लेकिन स्वेतलाना, औरत कितनी भी बुद्धिमती हो, साहसी हो, परंतु जिंदगी के ऐसे अवसरों पर, जब वह किसी आदमी को चाहने लगती है, वह सब कुछ भुला बैठती है। वास्तव में, ऐसे अवसरों पर वह अपनी स्वामिनी स्वयं नहीं होती। बेबस कठपुतली की तरह चलती रहती है और उसे चलाने वाला होता है वह आदमी, जिसे वह उस समय भगवान से किसी प्रकार कम नहीं समझती है। अच्छा एक बताओ, हर औरत जिंदगी में सभी कुछ सम्पूर्ण चाहती है, मगर बातों में सब कुछ अपूर्ण ही छोड़ती है, बात करते-करते बातें छिपा जाना हर औरत की आदत होती है। और दूसरे के मन मे तृष्णा जगाकर दूर हो जाने में शायद औरत को आनंद आता है। उस रोज जब तुम एयरपोर्ट पर अंदर जा रही थीं, तब मैंने महसूस किया था कि अक्सर आंसुओं को रोकते और मुस्कुराने की कोशिश करते समय औरत के मुख पर एक तेज आ जाता है, जैसे एक दिया हो, जो जलना चाहता हो, मगर हवा के झोंके उसे भुजाने के लिए अग्रसर हो। एयरपोर्ट में भीतर जाने से पहले जब तुम मेरे सामने बैठी थीं, मैंने कुछेक पल तुम्हारे चेहरे की ओर देखा था, उस पर बेहद शांति थी, कोई चिंता, कोई उत्कंठा नहीं थी। अभी तक मानव के सभी भावों को भिन्न-भिन्न नाम नहीं मिले हैं। कम से कम मुझे मालूम नहीं हैं। जब तुम अचानक भीगी आँखों से मेरी ओर देखकर मुस्कुराइ थीं, यकीन मानो, तुम्हारी उस क्षणिक मुस्कान के लिए मैं न जाने क्या-क्या कुर्बान कर सकता हूँ।

जब तक हम दोबारा न मिलें, अपना ख्याल रखना और हाँ तुम हमेशा मेरे विचारों और प्रार्थनाओं में हो। हाँ एक बात और याद आई। इस पत्र में एक दबा हुआ डैफोडिल भी है, जो मुझे अपनी एक सैर के दौरान मिला था। मैंने सोचा कि यह तुम्हारी उस सुंदरता की याद दिला सकता है, जो हमारे आस-पास है, तब भी जब हम अलग होते हैं।

16 अगस्त, 2012

तुम्हारा

नीता

** मूल पत्र रूसी भाषा में लिखा था। यह उसका हिन्दी भावानुवाद है।*

नितिन सिंह तोमर
कनिष्ठ अधीक्षक-राजभाषा, भा.प्रौ.सं. मंडी

सूफी कविता : प्रेम और दर्शन

सूफी कविता में प्रेम और दर्शन का अनूठा संगम दिखाई पड़ता है। रूमी और खुसरो की कविताएं सूर और मीरा के पदों की भांति विरह और भक्ति से तो ओतप्रोत हैं ही, उनमें कबीर का रहस्यवाद और वेदांत का अद्वैत दर्शन भी है। प्रेम का पूर्ण होना ही सूफियों के लिए परम सत्य की प्राप्ति है। 'तलब' और 'इश्क़' सूफियों के पथ के साधन हैं। यही कारण है कि सूफी काव्य में प्रेम की परिभाषा समर्पण और भक्ति को भी समाहित करती है। सूफियों का प्रेम निर्गुण है। जिस प्रकार कबीर सच्चे प्रेम कि दुर्लभता को गाते हुए कहते हैं : कबिरा ये घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं, उसी प्रकार प्रसिद्ध सूफी कवि मंसूर प्रेम को समझाते हुए कहते हैं-

आशिकी दर नारे-उ-वा सोख्तन,

सोख्तन बर नारे-उ-वा सोख्तन।

(स्वयं को ईश्वर कि अग्नि में राख कर देना ही सच्चा प्रेम है, अन्यथा प्रेम का कोई अर्थ नहीं।)

मंसूर अरब में जन्मे थे और सूफी मार्ग पर चलते-चलते भारत आ पहुंचे। उनकी कविता में अद्वैत का गहरा प्रभाव है। यही कारण था कि उनका 'अन-अल-हक' का नारा उस समय के खलीफा को रास न आया और मंसूर ने असहनीय अत्याचारों को सहते हुए हँसते-हँसते मृत्यु को स्वीकार किया।

प्रेम के प्रति मंसूर सदृश विचार कश्मीरी सूफी ऋषि नन्द की इस कविता में भी देखने को मिलते हैं-

अश्ख सुय युस अश्कसं दजे,

सौन जन प्रजलस पननुय पान।

अश्कन नार येस वैंलिये सजे,

अद मलि वतिय सुय लामकान।।

(प्रेमी वही है जो प्रेमाग्नि में जलता है, जिसकी आत्मा स्वर्ण के समान चमकती है। जब व्यक्ति का चित्त प्रेम ज्वाला से प्रकाशित होता है तभी वह अनंत परमात्मा को प्राप्त करता है।)

जब सत्य दर्शन की तत्त्व-मीमांसा और मनोविश्लेषण के सिद्धांतों में उलझा दिखाई पड़ता है तब प्रेम उसकी सरलता और सौंदर्य का बोध साधक को कराने का सामर्थ्य रखता है। भक्तिमार्गी और सूफी कवि यह भलीभांति समझते थे। इसीलिए उन्होंने अपनी कविता में रूढ़ियों, परम्पराओं और द्वैत-अद्वैत की गुत्थियों पर जमकर चोट की और प्रेम की महत्ता को पुनर्प्रतिपाादित किया। कबीर ने पोथियाँ पढ़ने को व्यर्थ करार दिया और प्रेम का ढाई आखर पढ़ने की सलाह दी। बाबा बुल्लेशाह भी अपने कलाम में कहते हैं-

इलमुन बस करी ओ यार,

एको अलिफ तेरे दरकार।

जद मैं सबक इश्क दा पढ़या,

दरया देख वहीदत दा वरिया।।

चाहे सूफी कविता सूफियों के भक्ति और उन्मादपूर्ण चित्त से स्वतः प्रवर्तित हुई हो या प्रेम और दर्शन की समन्वयात्मक स्थापना हेतु लिखी गयी हो, संसार भर के लोगों को उनके अंतर्मन की गहराईओं में झाँकने को प्रेरित करती है। भ्रमित, परेशान मन को सुलझाती है और प्रेमी को सच्चे प्रेम के दर्शन कराती है।

इश्क अस्त दर आसमान परीदान।

सद परदा बाहर नफस दरीदान।।

(आकाशोन्मुखी होना, भ्रम के पर्दों को चीरते जाना ही प्रेम है।)

- मौलाना जलालुद्दीन रूमी

कुमार अभिनव मिश्रा, शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मंडी

समाज में तार्किक सोच की आवश्यकता

इन दिनों समाज में कुछ भी घटित होता है तो हम बिना कुछ सोचे-समझे प्रतिक्रिया देने लग जाते हैं। यह समझे बगैर कि इस नकारात्मक प्रतिक्रिया का समाज के अन्य वर्ग पर क्या असर पड़ेगा। लेकिन प्रतिक्रियाओं की मूल समस्याओं की जड़ सूचना का अंधा-धुंध तरीके से सोशल मीडिया के जरिए हमारे तक पहुँचना है। दुर्भाग्यवश सूचना के अन्य माध्यम विशेषकर समाचारपत्र के प्रति समाज में विशेषकर युवावर्ग में रुचि लगभग खत्म सी हो गई है। ये वर्ग तुरंत सूचना प्राप्त करने के लए सोशल मीडिया को माध्यम के तौर पर अपनाने पर अधिक बल दे रहा है। दुर्भाग्यवश मीडिया के इस माध्यम में फेक न्यूज की सेंध लग चुकी है। तथ्यों एवं विश्वास के आधार पर मिलने वाली खबर में आधार हीन, भ्रामक व भावनात्मक तड़के ने सटीक खबर की सत्यता पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया है जो समाज के लिए खतरा पैदा करता है।

सबसे चिंतनीय बात यह है कि समाज के हर वर्ग में सूचना के प्रवाह के माध्यमों के तरीकों में परिवर्तन के कारण फेक न्यूज बड़ी तेजी के साथ अपना काम कर रही है। सोशल मीडिया की प्रगति ने तो सूचना भेजने वाले और सूचना प्राप्त करने वाले के अंतर को लगभग खत्म कर दिया है। क्योंकि इस समय सूचना प्राप्त करने वाला हर तीसरा या चौथा इंसान स्वयं सूचना बना रहा है व भेज रहा है और अन्य वर्ग बिना किसी तार्किक सोच के उन संदेशों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों के जरिए आगे भेजने में लगा हुआ है। यही कारण है कि अंध सूचना प्रवाह के कारण समाज में हर प्रकार का द्वंद्व बढ़ता ही जा रहा है।

अगर मीडिया रेगुलेशन की बात करें तो प्रिंट मीडिया को प्रैस कांउसिल ऑफ इंडिया, निजी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया को न्यूज ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन रेगुलेट कर रहे हैं लेकिन वर्तमान में बेलगाम होते सोशल मीडिया का कोई रेगुलेटर नहीं है। जीवंत लोकतंत्र में 19(1) (ए) के तहत अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर सोशल मीडिया के दुरूपयोग ने लोकतंत्र को ही नीरस बना दिया है। कभी बढ़ती फेक न्यूज से मॉब-लिंचिंग शुरू हो जाती है तो कभी एक वर्ग दूसरे वर्ग के खिलाफ भ्रामक प्रचार सामग्री फैलाने लग जाता है। हालांकि फेक न्यूज के बढ़ते फैलाव के मद्दे नजर सर्वोच्च न्यायालय ने एक याचिका की सुनवाई करते हुए केन्द्र सरकार को सोशल मीडिया के दुरूपयोग को रोकने हेतु आवश्यक नियम बनाने का निर्देश दिया था। केन्द्र सरकार ने संज्ञान लेते हुए 25 फरवरी, 2021 को इंफोर्मेशन टैक्नोलॉजी (गाइड लाइंस फॉर इंटर मीडियरीज एवं डिटिटल एथिक्स कोड) रूल्स 2021 को अधिसूचित कया था। अगर अन्य नियमों की बात करें तो आई.टी. (संशोधित) एक्ट 2008 के दायरे के अंतर्गत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आते हैं जिसकी धारा 79 में कटेंट को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से संशोधित न करने का प्रावधान किया गया है। आई.पी.सी. की विभिन्न धाराओं 153 (ए) में धर्म, जाति, जन्म के आधार पर दुष्प्रचार, 295 में किसी के धार्मिक पूजा स्थान का अपमान, 499 में किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को बिना तथ्यों के धूमिल करने के खिलाफ मानहानि का प्रावधान किया गया है इन धाराओं के अंतर्गत जेल, मुआवजा या दोनों माध्यम से दंडित किया जा सकता है।

इसके साथ-साथ प्रैस कांउसिल ऑफ इंडिया द्वारा फेक न्यूज को मानहानिपरक लेखन के अंतर्गत रखा गया है। भारतीय सूचना व प्रसारण मंत्रालय द्वारा भी फेक न्यूज में संलिप्त पत्रकारों की मान्यता रद्द की जा सकती है। हालांकि इससे सबसे बड़ी दुविधा फेक न्यूज को जांचने की है। फेक न्यूज की परिप्रेक्ष्य में मीडिया लिट्रेसी पर अनुकरणीय संस्थानों को आगे आना होगा, ताकि कोई फेक फोटो, कंटेंट एवं वीडियो के माध्यम से लोकतंत्र के किसी भी स्तंभ को खोखला न कर सके। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न मंचों पर जनमानस विशेषकर नौजवानों में क्रिटिकल थिंकिग यानि की तार्किक सोच की अलख जगानी होगी, ताकि वे हेट स्पीच और गल्त सूचना के बहकावे में न आएं।

–डॉ. निधि शर्मा
सहायक प्रोफेसर
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी कॉलेज जालन्धर, पंजाब

हिमाचल प्रदेश की लाहौल जनजाति उनकी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और परंपरा

हिमाचल प्रदेश के मनोरम परिदृश्यों में बसी लाहौल जनजाति भारत की स्वदेशी संस्कृतियों की उल्लेखनीय विविधता और प्रतिक्षेप के प्रमाण के रूप में विद्यमान है। आधुनिक शहरी जीवन की हलचल से दूर, इस जनजाति ने लाहौल और स्पीति जिले की सुदूर घाटियों में अपना अद्वितीय अस्तित्व कायम रखा हुआ है। प्राचीन परंपराओं, भाषा और रीति-रिवाजों में गहराई से निहित इनकी जीवन शैली एक ऐसी दुनिया की मनोरम झलक पेश करती है, जो जितनी दिलचस्प है, उतनी ही प्रेरणादायक भी है।

लाहौल जनजाति के लोग, पीढ़ियों से, अपने चारों ओर फैले भव्य हिमालय से आत्मीय रूप से जुड़े हुए हैं। उनकी संस्कृति ऊबड़-खाबड़ इलाकों और क्षेत्र की चुनौतीपूर्ण जलवायु के प्रति सहजीवी प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुई है। इस जनजाति की जीवनशैली कृषि, पशुपालन और व्यापार जैसी आवश्यक प्रथाओं के इर्द-गिर्द घूमती है। इन सभी को उच्च ऊंचाई वाले वातावरण के अनुरूप अनुकूलित किया गया है, जिसे वे अपना घर कहते हैं।

लाहौल जनजाति की पहचान का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू उनका विशिष्ट पहनावा है, जो उनके इतिहास और सामाजिक भूमिकाओं के बारे में बहुत कुछ बताता है। जीवंत रंगों और हाथ की कढ़ाई से बने विस्तृत ऊनी वस्त्र न केवल लाहौल जनजाति के लोगों को कड़कड़ाती ठंड से सुरक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि उनकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी उन वस्त्रों को पहचाना जाता है। लाहौल जनजाति के पुरुष और महिला दोनों पंख और आभूषणों से सजे हुए हेडगियर पहनते हैं, जो उनकी सामाजिक और वैवाहिक स्थिति को दर्शाते हैं, जिससे उनकी पोशाक में एक रंगीन और सार्थक आयाम जुड़ जाता है।

विशिष्ट संस्कृति और जीवनशैली

लाहौल जनजाति की संस्कृति और जीवनशैली परंपरा, अनुकूलन और प्रतिक्षेप है। हिमालय की गोद ने सदियों से रह रहे लाहौल जनजाति के लोगों का जीवन जीने का अंदाज अनोखा है। इस जनजाति के लोग अपने शहर या जगह पर आए अतिथियों का आदर का करना बखूबी जानते हैं। अतिथियों को भी जो बात इस जनजाति के करीब लाती है, वह लाहौली लोगों की विशिष्ट संस्कृति और जीवनशैली है, उनका इतिहास, आध्यात्मिकता और दैनिक अस्तित्व है, जो लाहौल जनजाति को हिमाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री का एक जीवित प्रमाण बनाते हैं।

लाहौल के लोगों ने अपने पर्यावरण के बारे में गहरी समझ विकसित की है और इतनी ऊंचाई पर कृषि की कला में महारत हासिल की है। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद, वे पीढ़ियों से परिष्कृत पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके जौ, अनाज और मटर जैसी फसलों की खेती करते हैं। इसके अतिरिक्त, पशुपालन भी इनके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें याक, भेड़ और बकरियों को दूध, ऊन और मांस के लिए पाला जाता है, जिससे उनके भरण-पोषण में योगदान मिलता है।

लाहौल जनजाति के कपड़े उनके इतिहास और सामाजिक गतिशीलता की एक झलक हैं। हाथ की कढ़ाई वाले ऊनी परिधानों से सजे हुए, पुरुष और महिलाएं दोनों ऐसे कपड़े पहनते हैं, जो उनकी जीवंत संस्कृति को दर्शाते हैं। अक्सर पंखों और गहनों से सजी टोपी न केवल कड़कड़ाती ठंड से उन्हें बचाती है, बल्कि पहनने वाले की सामाजिक और वैवाहिक स्थिति का भी प्रतीक होती है। ये परिधान केवल व्यावहारिक नहीं हैं, वे सांस्कृतिक विरासत के भंडार हैं, जो उनके वंश-दर-वंश और अपनेपन की कहानियाँ बताते हैं।

लाहौल लोगों की आध्यात्मिकता तिब्बती बौद्ध धर्म और जीववादी मान्यताओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इनका

विश्वास मठ या गोम्पा जैसे आध्यात्मिक केंद्रो में होता है, जहां वे पूजा व अपने अनुष्ठान करने और सामुदायिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए इकट्ठा होते हैं। त्यौहारों के दौरान किए जाने वाले, मंत्रमुग्ध कर देने वाले चाम नृत्य, लाहौली लोगों की भक्ति और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एक दृश्य भी देखने को मिलता है, जो दिव्य और सांसारिक के साथ उनके गहरे संबंध की झलक पेश करते हैं।

लाहौल जनजाति का कैलेंडर उन त्यौहारों से सुसज्जित है, जो उनकी संस्कृति और आध्यात्मिकता का जश्न मनाते हैं। लोसर, तिब्बती नव वर्ष, जीवंत अनुष्ठानों, नृत्य और पारंपरिक मिष्ठान इसमें सबसे अहम हैं। साका दावा उत्सव के दौरान, योग्यता संचय करने के तरीके के रूप में उदारता और दयालुता के कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है। ये त्यौहार न केवल समुदाय को एक साथ लाते हैं, बल्कि उनकी प्राचीन परंपराओं के साथ उनके संबंधों को भी मजबूत करते हैं। यदि देखा जाए, तो लाहौल जनजाति की विशिष्ट संस्कृति और जीवनशैली प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने, प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुकूल होने और अपनी विरासत को संरक्षित करने की उनकी असाधारण क्षमता को दर्शाती है। जैसे-जैसे उनके आस-पास की दुनिया बदलती है, उनकी जड़ों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, जो उनके कपड़ों, रीति-रिवाजों और सामाजिक संरचना के माध्यम से प्रदर्शित होती है, स्थिर रहती है, जो प्रगति को अपनाने के साथ-साथ परंपरा को अपनाने के महत्त्व में सभी के लिए एक शिक्षा प्रदान करती है।

भाषा और संचार

लाहौली लोग अपनी मूल भाषा, लाहौल भोटी के माध्यम से संवाद करते हैं। लाहौल भोटी तिब्बती भाषा परिवार से संबंधित एक बोली है। यह भाषाई खजाना उनके अतीत के लिए एक पुल जैसा है, जो अपने साथ स्थानीय वनस्पतियों, जीवों और जीवित रहने की तकनीकों के बारे में पारंपरिक ज्ञान का भंडार रखता है। हालांकि, आधुनिक दौर में खुद परिवर्तित करने के लिए उन्होंने बाहरी प्रभावों के कारण हिंदी और अंग्रेजी को अपना लिया है। इन सभी परिस्थितियों के बावजूद भी लाहौल भोटी उनके पारस्परिक संचार और सांस्कृतिक संरक्षण का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

लाहौली लोगों के लिए लाहौल भोटी स्थानीय पर्यावरण, वनस्पतियों, जीवों और मौसम के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हुए स्वदेशी ज्ञान का भंडार है। वर्णनात्मक शब्दावली और मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के माध्यम से, लाहौल भोटी न केवल व्यावहारिक संचार में सहायता करती है, बल्कि जनजाति की अपने परिवेश के साथ व्याख्या करने और बातचीत करने के अनूठे तरीकों को भी समाहित करती है।

लाहौल भोटी बोली की मौखिक परंपरा में मिथकों, किंवदंतियों और लोककथाओं की झलक भी देखने को मिलती है, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं। इसमें रची-बुनी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि नैतिक शिक्षा, ऐतिहासिक घटनाएँ और आध्यात्मिक शिक्षाएँ भी देती हैं। लाहौल भोटी, लाहौली लोगों की सामूहिक स्मृति भंडार जैसी है, जिससे उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारीक-से-बारीक परिदृश्य को समझने में मिलती है।

हालांकि, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के युग में, लाहौल भोटी के संरक्षण को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन, यह समुदाय अपनी भाषा की सुरक्षा के महत्व को पहचानता है। अक्सर युवा पीढ़ी को भाषा सिखाने वाली शैक्षिक पहलों के माध्यम से इसे दस्तावेजीकृत करने और पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसा करके, वे सुनिश्चित करते हैं कि उनकी भाषाई विरासत आधुनिक दबावों के बावजूद भी जीवित रहे। इसलिए कह सकते हैं कि लाहौल जनजाति की भाषा और संचार केवल बातचीत के साधन से कहीं अधिक हैं, वे उनके प्रतिक्षेप, अनुकूलन क्षमता और अपनी पहचान बनाए रखने की प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। लाहौल भोटी केवल शब्दों का समूह नहीं है, यह संस्कृति का एक आयाम है, अतीत के लिए एक पुल है, और एक ऐसे भविष्य की ओर जनजाति का मार्गदर्शन करने वाला एक प्रकाशस्तंभ है, जहां परंपरा और प्रगति सामंजस्यपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व में हो सकती है।

पारंपरिक मान्यताएँ और अनुष्ठान

लाहौल जनजाति का आध्यात्मिक चित्रपट तिब्बती बौद्ध धर्म और प्राचीन एनिमिस्टिक मान्यताओं पर आधारित है, जो एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण बनाती है, जो उनके विश्वदृष्टि और अनुष्ठानों को आकार देती है। हिमाचल प्रदेश के सुदूर लाहौल और स्पीति जिले के निवासियों के रूप में, उनकी पारंपरिक

मान्यताएं और प्रथाएं उनके दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग हैं, जो उनकी भूमि और आध्यात्मिक विरासत से उनके गहरे संबंध को दर्शाती हैं। इसमें तिब्बती बौद्ध धर्म लाहौल समुदाय की रगों में प्रवाहित होता है, जिसमें मठ या गोम्पा आध्यात्मिक अभयारण्य जैसा है। पूजा-अर्चना के ये केंद्र न केवल प्रार्थना और ध्यान के स्थान हैं, बल्कि पवित्र ग्रंथों और शिक्षाओं के भंडार भी हैं। जटिल भित्तिचित्रों और थंगकाओं से सजे मठ, वास्तुशिल्प चमत्कार के रूप में खड़े हैं, जो देवत्व और मानव अस्तित्व की कहानियां सुनाते हैं।

लाहौल और स्पीति का परिदृश्य चॉर्टेंस, बौद्ध स्तूपों से सुशोभित है, जो ज्ञान और जीवन के चक्र का प्रतीक है। ये संरचनाएं, अक्सर हवा में लहराते रंगीन प्रार्थना झंडों के साथ, उनकी भक्ति और कल्याण की आशा का प्रतीक हैं। आस्था के इन प्रतीकों के सामने साष्टांग प्रणाम करना उनकी विनम्रता और श्रद्धा का परिचायक है। लाहौल और स्पीति में स्थानीय त्यौहार लाहौल यहाँ अलग ही रंग गड़ते हैं। यहाँ समारोहों के दौरान चाम नृत्य सबसे अहम होता है। ये अनुष्ठानिक मुखौटा नृत्य, जो अक्सर धार्मिक त्योहारों के दौरान किए जाते हैं, इसमें लाहौल लोगों की भक्ति और आध्यात्मिक शिक्षाओं का एक दृश्य अभिव्यक्ति हैं, जिसमें जटिल वेशभूषा और विस्तृत गतिविधियों से परिपूर्ण नृत्य, देवताओं, मिथकों और अच्छे और बुरे के बीच लड़ाई की कहानियाँ बताते हैं।

लोसर, तिब्बती नव वर्ष, लाहौल जनजाति के लिए उल्लास और जीवन में नयी चीजों का स्वागत करने का समय होता है। पारंपरिक भव्य मिष्ठानों, जीवंत जुलूस और कठिन अनुष्ठान इस अवसर की पहचान हैं। साका दावा, योग्यता का महीना, आध्यात्मिक योग्यता संचय करने के साधन के रूप में दयालुता और उदारता के कार्यों पर बल देता है। इस दौरान प्रकृति में निहित जीववादी मान्यताएं लाहौल जनजाति के अपने पर्यावरण के साथ आध्यात्मिक संबंध को रेखांकित करती हैं। पहाड़ों, नदियों और प्राकृतिक तत्त्वों को अक्सर पवित्र माना जाता है, जो आत्माओं का प्रतीक होते हैं, जो उनके जीवन को आकार देते हैं। प्रकृति के प्रति यह श्रद्धा एक सहजीवी संबंध को बढ़ावा देती है, जो उन्हें पृथ्वी की रक्षा करने की उनकी जिम्मेदारी की याद दिलाती है। कह सकते हैं कि तेजी से बदलती दुनिया में, लाहौल जनजाति की पारंपरिक मान्यताएं और रीति-रिवाज उनकी सांस्कृतिक पहचान को आधार प्रदान करते हैं। जैसे ही वे प्रार्थनाओं, नृत्यों और त्यौहारों में शामिल होते हैं, वे न केवल अपने पूर्वजों को श्रद्धांजलि देते हैं, बल्कि आध्यात्मिकता और प्रकृति के प्रति अपनी अद्वितीय मनोस्थिति भी दर्शाते हैं। ये प्रथाएं समय से परे हैं। इन प्रथाओं में प्राचीन ज्ञान की प्रतिध्वनि होती है, जो जीवन की यात्रा में लाहौली लोगों का मार्गदर्शन करती रहती है।

सामाजिक संरचना और समानता

लाहौल जनजाति का सामाजिक ताना-बाना मजबूती से बुना हुआ है, जो विस्तारित परिवारों और रिश्तेदारी की मजबूत भावना पर केंद्रित है। लाहौल जनजाति में बुजुर्गों को पूजनीय स्थान प्राप्त है। उनका न केवल उनकी उम्र के लिए सम्मान किया जाता है, बल्कि उनके संचित ज्ञान और जीवन के अनुभव के लिए भी उन्हें महत्त्व दिया जाता है। बुजुर्ग अक्सर मौखिक परंपराओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और ऐतिहासिक आख्यानों के संरक्षक होते हैं। उनका मार्गदर्शन निर्णय लेने, संघर्ष समाधान और पैतृक ज्ञान के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी प्रकार, लाहौल जनजाति में ऐतिहासिक रूप से बहुपतित्व की प्रथा रही है, यह एक अनूठी विवाह व्यवस्था है जहाँ कई भाई एक ही महिला से विवाह करते हैं। यह प्रथा व्यावहारिकता से पैदा हुई थी, क्योंकि इससे सीमित कृषि योग्य भूमि वाले क्षेत्र में भूमि और संसाधनों को समेकित करने में मदद मिली थी। हालाँकि, बदलती सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक स्थितियों के कारण, बहुपतित्व में धीरे-धीरे कमी आई है, और एकपत्नी विवाह अधिक आम हो गए हैं।

हाल के वर्षों में, लाहौल जनजाति को आधुनिकीकरण, प्रवासन और बदलते आर्थिक अवसरों के कारण उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। समुदाय के युवा सदस्य अक्सर शहरी क्षेत्रों में अवसरों की तलाश करते हैं, जिससे पारंपरिक सामाजिक गतिशीलता में बदलाव आता है। इन चुनौतियों के बावजूद, लाहौल के लोग अपनी सामाजिक संरचना के मूल मूल्यों को बनाए रखते हुए अनुकूलन के तरीके ढूंढते रहते हैं। लाहौल जनजाति की सामाजिक संरचना और रिश्तेदारी प्रथाएं उनके पर्यावरण के अनुकूल होने और समय के साथ विकसित होने में उनके लचीलेपन को दर्शाती हैं। हालाँकि परिवर्तन हो सकते हैं, विस्तारित परिवारों की नींव, बड़ों के प्रति

सम्मान और समुदाय की भावना स्थिर रहती है। ये तत्व न केवल उनकी सामाजिक एकजुटता में बल्कि बदलती दुनिया के बीच उनकी सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में भी योगदान देते हैं।

चुनौतियाँ

हिमाचल प्रदेश की सुदूर घाटियों में बसी लाहौल जनजाति ने आधुनिकीकरण, बाहरी प्रभावों और बदलती सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के कारण उभरी विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में उल्लेखनीय प्रतिक्षेप प्रदर्शित किया है। जैसा कि यह प्राचीन समुदाय 21वीं सदी की जटिलताओं से जूझ रहा है, उनकी अनूठी संस्कृति और पहचान को संरक्षित करते हुए अनुकूलन करने की उनकी क्षमता उनकी स्थायी ताकत के प्रमाण के रूप में खड़ी है। मौजूदा समय में आधुनिकीकरण और शहरीकरण की बढ़ती पहुंच के कारण पारंपरिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों का धीरे-धीरे क्षरण हो रहा है। बुनियादी ढांचे के विकास, पर्यटन की आमद और मुख्यधारा के मीडिया के प्रसार ने बाहरी विचारों और मूल्यों को पेश किया है जो कभी-कभी जनजाति की स्वदेशी जीवन शैली के साथ संघर्ष करते हैं। लाहौल जनजाति की युवा पीढ़ी अक्सर एक अलग जीवन शैली को अपनाने के कारण शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और नौकरी के अवसरों की तलाश करती है। यह प्रवासन उनकी सांस्कृतिक परंपराओं और भाषा की निरंतरता के लिए एक चुनौती है, क्योंकि समुदाय के भीतर ज्ञान और प्रथाओं को लगातार प्रसारित नहीं किया जा रहा है।

लाहौल के लोग जलवायु परिवर्तन से सीधे प्रभावित हो रहे हैं, मौसम में बदलाव से उनकी कृषि पद्धतियाँ और पशुधन पालन प्रभावित हो रहा है। अप्रत्याशित मौसम की स्थिति और कम बर्फबारी उनकी पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखने की क्षमता को चुनौती देती है। हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद, लाहौल जनजाति ने उल्लेखनीय प्रतिक्षेप का प्रदर्शन किया है। उनकी भाषा, संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने के प्रयासों में तेजी आई है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि युवा पीढ़ी अपनी विरासत से जुड़ी रहे, स्थानीय पहल, सांस्कृतिक उत्सव और शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं।

पर्यटन के संभावित लाभों को पहचानते हुए, समुदाय ने स्थायी पर्यटन प्रथाओं को अपनाया है, जिससे वे अपने जीवन के तरीके को बनाए रखते हुए अपनी संस्कृति को दुनिया के साथ साझा करते हैं। यह दृष्टिकोण उनके पर्यावरण और सांस्कृतिक अखंडता की रक्षा करते हुए आर्थिक विकास को सक्षम बनाता है। लाहौल के लोगों की समुदाय की भावना और सामूहिक कार्रवाई उनके प्रतिक्षेप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वे चुनौतियों का समाधान करने, निर्णय लेने और अपनी पहचान और कल्याण की रक्षा करने वाली पहलों को लागू करने के लिए एक साथ आते हैं। इसलिए, कह सकते हैं कि लाहौल जनजाति की यात्रा चुनौतियों, अनुकूलन और प्रतिक्षेप का मिश्रण है। अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए आधुनिक दुनिया की जटिलताओं से निपटने की उनकी क्षमता प्रेरणा का स्रोत है। बाधाओं को दूर करने के अपने दृढ़ संकल्प के माध्यम से, लाहौली लोग इस बात का एक बेहतरीन उदाहरण हैं कि कैसे स्वदेशी समुदाय परंपरा और प्रगति के बीच की खाई को पाट सकते हैं, जिससे उनका जीवन और उनके आसपास की दुनिया दोनों समृद्ध हो सकती हैं।

संदर्भ

1. ओस्मैस्टन, एच. ए. (1992). अ गाइड टू द फीपल एंड प्लेसेज ऑफ द लाहौल-स्पीति डिस्ट्रिक्ट ऑफ द हिमाचल प्रदेश, इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन
2. जीना, प्रेम सिंह. (2004). द आर्ट एंड कल्चर ऑफ लाहौल. इंडस पब्लिशिंग
3. कपडिया, हरिश. (1999). स्पीति : एडवेंचर्स इन ट्रांस-हिमालय, इंडस पब्लिशिंग
4. बनर्जी, अरुण कुमार. (2005), द तिब्बतन लामास ऑफ द हिमाचल प्रदेश. मित्तल पब्लिकेशन्स

–वंदना

यूथ ऐनिमेटर, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल ट्रस्ट, लोधी रोड, नई दिल्ली

ई-मेल : *tomarvandy@gmail.com*

भवजाल

सर्द ऋतु की गुनगुनी धूप जब हर की पौड़ी के चारों ओर दूर-दूर तक फैल गई तो गंगा में डुबकी लगाने वालों की भीड़ बढ़ती चली गई। दूर-दराज से आये भगतगणों ने पवित्र गंगा मैया में स्नान करने का असीम उत्साह ठाठें मारता हुआ नजर आने लगा था। मोक्षदायनी, पापनाशिनी गंगा में डुबकी लगाने के बाद लोग हर-हर गंगे कहते हए गंगा के उजले घाट पर आकर बैठ जाते और एक-दूसरे से हँसते हुए बतियाने लगते। स्नान के बाद उनके चेहरों पर परम संतोष और आनंद की अनुभूति साफ झलकने लगती। जैसे उनकी कोई दबी-छिपी साध लम्बे इन्तजार के बाद पूरी हो गई हो।

युगों-युगों से कल-कल बहती पुण्य सलिला गंगा के घाट पर यकायक वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद जब दोनों सहेलियां मिली तो पहले तो एक दूसरे के गले लगकर खूब रोई फिर गुजरे वक्त का भोगा हुआ सुख दुःख कुछ तो उनकी जुबान से और कुछ उनकी आँखों की नमी से झरने लगा था। वर्षों के बाद अचानक अपने इस मिलन को दोनों सहेलियां गंगा मैया द्वारा किया गया महान् उपकार मान रही थीं तभी तो दोनों बार - द्वारा किया बार श्रद्धा से हर की पौड़ी की तरफ हाथ जोड़ कर नमन कर रही थी। दोनों लगभग 20 वर्षों के बाद मिली थी। मैंने तो सुभदा स्वप्न में भी न सोचा था की तुम से इस बाकी बचे जीवन में मुलाकात भी होगी। शादी के बाद जब तुमसे और गाँव से सदा-सदा के लिए विदा हुई तो जानती हो कुछ ही वर्षों के बाद गृहस्थी के घराट में वे बचपन की सहेलियां जिनके साथ गाँव के खेत खलियानों में, मैं गाय बकरियां चराती थी, सब एक-एक करके मेरे दिमाग से बिसरती चली गई। अम्मा बाबू जी के स्वर्ग सिधारने के बाद जब दोनों बेटों ने पुश्तैनी घर मिल कर बेच दिया तो गाँव जाने की सही आश भी जाती रही। गाँव जाती तो भला किस के पास? एक गहरा निस्वास छोड़ते हुए मंगला ने विषाद में डूबी हुई आवाज में कहा।

उधर घाट पर एक औरत ने अपनी छोटी सी बच्ची को दोनों हाथों से पकड़कर गंगा में डुबकी मारी तो बच्ची डर और ठण्ड के कारण पंचम सुर में रोने लगी। पास खड़े बच्ची के पिता ने कसते हुए उसे उसकी मां से पकड़ा और उसे पुचकारने लगा। कुछ देर बाद बच्ची चुप हो गई। लेकिन गंगा के बहते जल को सहमे-सहमे से देखने लगी।

सुभदा और मंगला लगभग एक की वय की थी। दोनों अब जिंदगी की उस ढलान पर खड़ी थी। जहां घर गृहस्थी के झमेलों से ऊब कर किसी तीर्थ स्थान में शान्ति से दो चार हफ्ते काटने को दिल करता है।

दोनों सहेलियां विवाह के बाद ऐसी बिछुड़ी कि फिर कभी दोनों का मिलना संभव ही न हो पाया। दोनों से गाँव ऐसे छूटा जैसे भीड़ भरे मेले में किसी बच्चे का अपनी मां से हाथ छूट जाता है। दोनों का मिलन आज उस समय हुआ जब बुढ़ापे ने दोनों के दरवाजे पर दस्तक दी। सुभदा ने मंगला का झुर्रियों भरा

हाथ अपने हाथों में लिया और उसे सहलाने लगी। जैसे वह बचपन की दोस्ती की उष्मा को टटोल रही हो। सुभदा ने प्रेम के अतिरेक में गद-गद होकर कहा- "सच मानों मंगला तुमसे यूँ अचानक मिलने से मेरा तो तीर्थ सफल हो गया। अच्छा यह तो बताओ तुम कितनों की दादी बनी और कितनों की नानी?"

मंगला ने शरारत से आँखें नचाते हुए कहा ज्यादा नहीं! केवल दो की दादी बनीं हूँ और एक की नानी! फिर दोनों सहेलियां खिलखिला कर हंसने लगी। उनकी हंसी में आज किसी दुःख या पीड़ा की टिस नहीं थी, दोनों दिल खोलकर हंसने लगी थीं। तुम पर वह जमींदार का फिल्मी हीरो कितनी जान छिड़कता था तुम भी कुछ-कुछ .....।

"बस-बस। जाने भी दो इन बातों को। उम्र के गुजरने के बाद तो बुढ़ापा आता ही है। सदा बसंत थोड़ी ही रहता है। मंगला ने प्यार से झड़कते हुए सुभदा से कहा।"

"बसंत तो अब भी खिला है। सुभदा ने मंगला की नजरों में गहरे झांकते हुए शरारत से कहा तो मंगला के पोपले गालों में पल भर के लिए शर्म से लाली तैर गई उसने बनावटी गुस्से का इजहार करते हुए सुभदा को हाथ से ठेल दिया।"

"छी,...। यहाँ ये बातें नहीं करते सुभदा। ये गंगा मैया का पावन धाम है, पाप लगेगा।"

'अच्छा बाबा। क्या सब बच्चों की शादी कर दी?

'अरे कहाँ। उनके गुजरने के बाद बेटों ने तो जैसे किनारा ही कर लिया बड़ी कठिनाई से उनकी पेंशन से अपना और बेटी का पेट पाल रही हूँ। बेटी के हाथ पिले हो जाएँ तो समझो मेरे सारे तीर्थ घर बैठे हो जाये। उसकी शादी की चिंता मुझे रात दिन होती रहती है। घर में विवाह योग्य बेटी की चर्चा से मंगला की आंखों में बर बस आंसू उमड़ पड़े।

"रो मत बहना। जब बेटी का संजोग आएगा तो उसकी शादी भी अपने आप हो जाएगी। वक्त से पहले कुछ नहीं होता बेशक इंसान जितना चाहे हाथ पैर मार ले। चिंता चिता के समान होती है।"

कुछ देर तक दोनों सहेलियाँ चुपचाप सामने के घाट पर हो रहे अस्थि विसर्जन का दृश्य देखती रहीं। शायद जजमान मोटी आसामी था इसलिए पंडा बड़े उत्साह और लगन से पंचम सुर में मंत्रोउच्चारण करके अंतिम कर्मकांड की रस्मे पूरी कर रहा था। अपने परिवार के किसी अजीज सदस्य की अस्थियां विसर्जित करने की गहरी पीड़ा उस जजमान के बुझे चेहरे पर दूर से देखी जा सकती थी।

एक गहरा निश्वास छोड़ती हुई मंगला बोली, 'पता नहीं बेचारा किस की अस्थियां प्रवाहने हरिद्वार आया है- बड़ा दुःखी दीखता है।' घड़ी भर के लिए मंगला अपना दुःख भूल गई। मानव स्वभाव ही ऐसा है कि दूसरों को दुःखी देख कर अपने दुःख का प्रभाव कुछ कम जान पड़ता है।

'अच्छा मंगला यह बताओ तुम्हारी बेटी की उम्र क्या होगी? सुभदा ने बड़ा सूत्र पकड़ते हुए कहा।

"यही कोई चौबीस वर्ष।"

"कितना पढ़ी-लिखी है? सिलाई कढ़ाई भी जानती है या नहीं?"

"उसने एम. ए. की है गुजारे लायक सिलाई कढ़ाई भी कर लेती है। पर यह सब क्यों पूछ रही हो? क्या कोई लड़का है तुम्हारी नजरों में?"

"है तो है, पर लड़के वालों को पूछ कर तुम्हें शीघ्र सूचित करुँगी। उन्होंने हाँ कर दी तो तुम शादी के लिए इंकार न करना, समझी।"

"जरूर खबर देना। लड़की के हाथ पीले हो गए तो मैं गंगा मैया की सौगंध खाती हूँ कि जन्म-जन्मांतर तक तुम्हारा एहसान न भूलूंगी।" मंगला ने एहसान मैं डूबते हुए कहा।

"अच्छा अब चलते हैं। साथ के लोग इन्तजार करते होंगे।"

दोनों सहेलियां एक बार फिर गले मिलीं और डबडबाई आँखों से एक दूसरे पर स्नेह बरसाती हुई दोबारा मिलने का वादा करते हुए विदा हो गयीं।

घाट पर श्रद्धालुओं कि भीड़ बढ़ जाने से पंडों कि पारखी नजरें बड़ी तेजी से अपने जजमानों को तलाश कर रही थीं। दोपहर की धूप में काफी गर्माहट आ जाने से लोग दोगुने उत्साह से गंगा मैया में डुबकी लगा रहे थे।

घर पहुँचकर सुभदा ने सबको बताया कि जब उसे वर्षों के बाद बचपन कि सहेली हरिद्वार मैं अचानक मिलीं, तो जैसे उसको तीर्थ पर आने का सारा पुण्य मिल गया था। फिर उसने मंगला से हरिद्वार में हुई बातों का सिलसिलेवार ब्यौरा सबको बता दिया।

"तुमने वहीं मंगला को हाँ क्यों न कह दी? अपने बेटे को इससे अच्छा रिश्ता कहाँ मिलेगा, भला।" सुभदा को विश्वास

नहीं हो रहा था कि उसका पति मंगला कि बेटी से अपने लाडले बेटे कि शादी का प्रस्ताव रखते ही मान जाएगा। वह खुशी से फूली नहीं समा रही थी। मंगला से उसके सबंध मैत्री की सीमा को लाँघ कर परिवारिक रिश्ते के पवित्र बंधन में बंधने जा रहे थे।

एक तरफ सुभदा को अपने बेटे के लिए अच्छे कुल की सुयोग्य कन्या मिल गई थी, दूसरी तरफ अपनी प्यारी सहेली को बेटी के ब्याह की चिंता से वह मुक्त करके खुश हो रही थी।

बड़े उत्साह और गुदगुदाहट से उसने दूसरे ही दिन मंगला को यह अति शुभ समाचार देने का निर्णय किया। अगले दिन उसने पत्र लिखा–

मेरी प्यारी बहन,

मैं यहाँ राजी खुशी से पहुँच गयी थी। तुम्हें यह जान कर अत्यंत हर्ष होगा कि मैंने अपने बेटे के लिए तुम्हारी लड़की का चुनाव कर लिया है। मेरा बेटा सरकारी नौकरी करता है तुम्हारी बेटी मेरे बेटे जैसा पति पाकर निराश नहीं होगी, ऐसी मुझे आशा है। हरिद्वार में मैंने तुम्हें इसलिए न बताया क्योंकि मैं पहले अपने पति की इस बारे रजामंदी लेना चाहती थी। उन्होंने अब इस रिश्ते पर अपनी स्वीकृति कि मोहर लगा दी है। शादी कि तारीख निश्चित करके तुम जल्दी से जल्दी हमें सूचना भेजो। दहेज के हम सब सख्त खिलाफ है।

तुम्हारी सहेली,

सुभदा..

सुभदा ने पत्र लिखा और उसे लिफाफे में डाला लेकिन जब पत्र पर मंगला का पता लिखने लगी तो एकाएक भौचक सी रह गई थी और बंगले झाँकने लगी। मंगला का तो उसके पास पता ही नोट न था, पत्र डाले तो किस पते पर डाले।

हरिद्वार में दोनों सहेलियां अंतरंगता की बातों में इतनी डूबी कि वे एक - दूसरे का पता तक नोट करना भी भूल गई। दोनों भावना के गहरे सागर में डूब कर वहां जैसे दुनिया जहां से बेखबर हो गई थी।

सुभदा के चेहरे पर दुःख और पश्चाताप की रेखाएं घिर आयी थीं। निपट निराशा के भवर में डोलते हुए उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ी और उसके होठों से स्वतः ही अस्फुट से वाक्य निकले 'राम जाने अब मंगला से कैसे मिलना होगा। मेरे तो भाग्य ही फूट गए।'

सारी रात बारिश होने के कारण सुबह ठंड काफी बढ़ गई थी। चारों तरफ धुंध की गहरी चादर फैली होने के कारण धूप पूरी तरह न खिली थी। सुभदा सामने दूर पहाड़ के शिखर पर मचलते मेघ खण्डों से आँख मिचोली करते हुए सूर्य को एकटक निहारती जा रही थी और उसकी आँखों में आंसुओं की अविरल धारा भी बहती जा रही थी।

प्रेषक

तेजेंदर शर्मा

234/5 पैलेस कॉलोनी मंड

पिन कोड 175001

(हि.प्र.) मो. नं.- 9418890450

नशा निवारण

आज का हमारा यह विषय बस एक प्रतियोगिता का विषय नहीं है। इस विषय की सार्थकता उन करोड़ों माताओं से पूछो जिनका इकलौता बेटा, इकलौता वारिस नशे का आदी होने के कारण पल-पल मृत्यु की ओर बढ़ता चला जा रहा है। नशा रूपी धीमा जहर उनकी रगों में दौड़ता चला जा रहा है। इस नशे की दीवानगी तो देखिए क्या महिला, क्या पुरुष, क्या अमीर क्या गरीब हर कोई इसके आगोश में समाता चला जा रहा है। देश के प्रधानमंत्री देश के युवाओं की आँखों में देश का भविष्य ढूँढ रहे हैं, देश का अक्ष ढूँढ रहे हैं, परन्तु परिस्थितियों का विरोधाभास तो देखिए वही युवा पीढ़ी अब नशे की आदी होती जा रही है नशा रूपी जहर उनकी रगों में दौड़ता जा रहा है। बूढ़े माँ-बाप अपने बच्चों की खुशियों के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं, परन्तु उन्हें यह पता ही नहीं चलता कि उनके लाडले किस दिशा की ओर बढ़ रहे हैं और अब तो इस दानव रूपी नशे ने स्कूली छात्र-छात्राओं को भी अपना ग्रास बनाना शुरू कर दिया है दिल दहल जाता है जब हम अपने युवा साथियों को लाचार, असहाय और विनाश के इस रास्ते की ओर बढ़ता हुआ देखते हैं। अब हम यूँ ही हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकते। इसीलिए हम सभी को मिलकर इस नशे के विरुद्ध कदम बढ़ाना है, जिन नन्हें हाथों को पकड़कर उन्हें चलना सिखाया है, उन्हीं हाथों को पकड़कर उन्हें इस मृत्यु के दल-दल से वापिस लाना है।

इस कार्य को पूरा करने के लिए हमारे समाज एवम् परिवार के सदस्यों का सहयोग अति आवश्यक होता है जिसे पूरा करने के लिए हमें दोनों का सहयोग चाहिए। समाज का एक जागरूक नागरिक होने के कारण हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने आस-पास होने वाली गतिविधियों पर नजर रखें और किसी भी प्रकार की नशे से जुड़ी या फिर अन्य आपत्तिजनक गतिविधि को देखकर युवाओं को रोकना चाहिए न कि उन्हें नजरअंदाज करना, अथवा हमें उन्हें समझाना चाहिए तथा उन्हें इस बुरी आदत को छोड़ने में उनकी सहायता करनी चाहिए। एक परिवार का सदस्य होने के कारण हम सभी को अपने परिवार के सदस्यों एवम् खास तौर से युवाओं पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए, ताकि हम अपने परिवार के सदस्यों को रोक सके और नशे जैसी हानिकारक आदतों से दूर रख सकें। नशा न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, परन्तु यह हमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक रूप से कमजोर बनाता है तथा हमारे बौद्धिक स्तर को भी कम करता है

नशा न केवल हमें कष्ट पहुँचाता है, परन्तु हमारे परिवार के सदस्यों को भी कष्ट पहुँचाता है। इसलिए हमारे समाज व परिवार को भी अपना सहयोग देना चाहिए। एक प्रकार से हमारे समाज व परिवार की सहायता इस नशे की रोकथाम में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। अब मैं अपने विचारों को विराम देती हई आपके साथ कुछ पंक्तियाँ साझा करना चाहूँगी, जो इस प्रकार हैं:-

रोकनी होगी नशे की आदत,
सबको आगे है आना
नशा है एक बहुत बुरी लत,
हमें नशा मुक्त भारत है बनाना

–सुभाषिनी
कक्षा- नवमी, केन्द्रीय विद्यालय मण्डी
पता. 151/1, जवाहर नगर, खलियार, मण्डी
दूरभाष न. 94598499952

मेरी प्यारी बिटिया 'आन्या'

प्यार, खुशी और यादों के धागों से बुनी मेरी जिंदगी की कशीदाकारी में, आन्या नाम का एक चमकता सितारा चमकता है। वह मेरी दो साल की अनमोल बेटी है, एक उपहार जो हमारी शादी के काफी लंबे समय के बाद हमारे घर आया। उसके आगमन ने हमें खुशी और आनंद की दुनिया प्रदान की है और वह हमारे पूरे परिवार की आँखों का तारा बन गई।

आन्या, एक ऐसा नाम जो हमारे दिलों में राग की तरह गूंजता है, वह सिर्फ एक बच्ची नहीं है; वह साकार हुए सपनों का प्रतीक है, उस प्यार का जीवंत प्रमाण है जो हमारे परिवार को एक साथ बांधता है। आन्या का जन्म, लंबे इंतजार के बाद प्रकाश की किरण, हमारे लिए अपार खुशियाँ लेकर आया, जैसे कठोर सर्दी के बाद खिलता हुआ कोई फूल हो।

जैसे ही मैं उसकी मासूम आँखों को देखता हूँ, मुझे अपने पिता की याद आती है, जो अब परलोक में रहते हैं। वह भी अपनी सुबह की शुरुआत मेरी बेटी पर स्नेह बरसाकर करते थे। मैं अभी भी उसकी आँखों में गर्माहट को अच्छी तरह से याद कर सकता हूँ, जब मेरे पिताजी ने उसे पहली बार अपनी गोद में लिया था, धीरे से उसे अपने हाथों में झुला रहे थे। मुझे इससे सांत्वना मिलती है कि मेरे पिताजी की आत्मा आन्या के ऊपर प्यार बरसा रही है।

आन्या ने अपनी मासूम हँसी से हमारे जीवन को रोशन कर दिया है, उसके पहले कदम ने न केवल हमारे जीवन को रोशन किया, बल्कि हमारी खुशियों का केंद्र भी बन गई है। उसकी उपस्थिति में, हर छोटी चीज फीकी लगने लगती है, और जीवन को अपना वास्तविक अर्थ मिल जाता है।

आन्या का हमारे जीवन में होना एक ऐसी जिज्ञासा रखती है, जिसकी कोई सीमा नहीं है। जब वो अपने छोटे-छोटे हाथों को आगे बढ़ाते हुए, हर चीज पकड़ने की कोशिश करती है, तब मन करता है उन पलों को हमेशा के लिए कैद कर लूँ।

हमारे जीवन के बगीचे में, वह सबसे नाजुक और सुंदर फूल है। उसके पहले शब्दों से लेकर उसके पहले क्रेयॉन स्ट्रोक्स तक, वह जो भी करती है, वह हमें बेहद गर्व और उपलब्धि की भावना से भर देता है।

आन्या, तुम वह पुल हो जो हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ता है। तुम्हारी उपस्थिति पीढ़ियों को बांधे रखती है, हमें याद दिलाती है कि प्रेम का चक्र अटूट है। तुम्हारी मासूम आंखों में, मैं हमारी आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिबिंब देखता हूं। तुम हमारी खुशी, हमारी हँसी और हमारी विरासत हो।

जैसे तुमने हमारे दिलों को रोशन किया है, वैसे ही तुम हमारे जीवन को रोशन करते रही। आन्या, हम तुम्हें शब्दों से कहीं अधिक प्यार करते हैं। और तुम हमेशा हमारे जीवन में प्यार और खुशी का अवतार बनी रहोगी।

सुनील चौहान
कनिष्ठ अधीक्षक (वित्त एवं लेखा),

नदी गायब है

एस.आर. हरनोट

टीकम हाँफता हुआ घर के नीचे के खेत की मुँडेर पर पहुँचा और जोर से हाँक दी,

पिता! दादा! ताऊ! बाहर निकलो। नदी गायब हो गई है।

हाँक इतने जोर की थी कि जिस किसी के कान में पड़ी वह बाहर दौड़ा आया था।

टीकम अब खेत की पगडंडी से ऊपर चढ़ कर आँगन में पहुँच गया था। उसका माथा और चेहरा पसीने से भीगा हुआ था। चेहरे पर उग आई नर्म दाढ़ी के बीच से पसीने की बूँदें गले की तरफ सरक रही थीं। आँखों में भय और आश्चर्य पसरा हुआ था जिससे आँखों का रंग गहरा लाल दिखाई दे रहा था।

उसका पिता और दादा सबसे पहले बाहर निकले और पास पहुँच कर आश्चर्य से पूछने लगे, "टीकू बेटा क्या हुआ? तू ऐसे क्यों चिल्ला रहा है? सुबह-सुबह क्या गायब हो गया?" उसकी साँस फूल रही थी। होंठ सूख रहे थे। जबान जैसे तालू में चिपक गई हो। कोशिश करने के बाद भी वह कुछ बोल नहीं पा रहा बस होंठ हिल रहे थे। तभी उसकी अम्मा हाथ में पानी का लोटा लिए उसके पास पहुँच गई। स्नेह से उसके बाल सहलाते हुए लोटा उसकी तरफ बढ़ा दिया। टीकम ने झपट कर ऐसे लोटा छीनकर पूरा पानी गटक गया मानों बरसों का प्यासा हो। कुछ जान में जान आई थी। अब तक कुछ और घरों के लोग भी आँगन में इकट्ठे हो गए थे और पूरी बात जानना चाहते थे।

बरसात के शुरुआती दिन थे। सुबह के तकरीबन सात बजे का समय होगा। इस वक्त तक पूर्व के पहाड़ों के पीछे से सूरज की किरणों की उजास गाँव पर सुनहरी चादर बिछा देती थी। पर आज उन पर काले बादलों का डेरा था। पहाड़ आसमान का हिस्सा लग रहे थे। उत्तरी छोर के पर्वतों के ऊपर बादलों की कुछ डरावनी आकृतियाँ थीं। हवा के साथ पूर्व के बादल कभी छितराते तो भोर की लालिमा ऐसे दिखती मानो भयंकर आग में बादल जल रहे हों। इसी बीच कई धमाके हुए और आँगन में खड़े सभी लोग चौंक गए। समझ नहीं आया कि यह बिजली चमकी है या कुछ और है। कई घरों की खिड़कियों के शीशे टूट गए थे। गोशाला से पशुओं और भेड़-बकरियों के रंभाने-मिमियाने की आवाजें आने लगी थीं।

टीकम कुछ सहज होकर सभी को बता रहा था।

"मैं रोज की तरह नदी किनारे घराट में पहुँचा। गेहूँ-फफरा की बोरी एक किनारे उतार कर रख दी और चक्की चलाने को कूहल फेरने चला गया। लेकिन उसमें पानी नहीं था। मैंने सोचा कूहल कहीं से टूट गई होगी। मैं नदी की तरफ हो लिया। वहाँ पहुँचा तो हतप्रभ रह गया। कुछ समझ नहीं आया कि जिस नदी का पानी कभी सूखा ही नहीं वह रात-रात में कैसे सूख गई। कुछ देर मैं ऐसे ही खड़ा रहा। कई बार आँखें मली कि धोखा तो नहीं हो रहा है। लेकिन नहीं पिता, नहीं दादा, वह धोखा नहीं था। नदी सचमुच गायब हो गई है। उसका पानी सूख गया है।"

टीकम की बातें सुन कर सभी सकते में आ गए थे। उसकी माँ उसके पास आकर उसे समझाने लगी थी,

"देख टीकू! तू न रात को बहुत देर तक जागता रहा है। कितनी बार बोला कि टेलीविजन इतनी देर तक मत देखा कर। तेरी नींद पूरी नहीं हुई है न। फिर मैंने तेरे को तड़के-तड़के अधनींदे जगा दिया था। जरूर कुछ धोखा हुआ होगा।"

इसी बीच देवता का पुजारी भी आ पहुँचा था। उसे टीकम की बातों पर कुछ विश्वास होने लगा। उसने सभी को समझाया कि यहाँ आँगन में बहसबाजी करने से क्या लाभ? सभी चल कर

अपनी आँखों से देख लेते हैं कि क्या बात है। पुजारी की बात मान कर सभी नदी की ओर चल पड़े।

थोड़ी देर में सभी नदी के किनारे पहुँच गए। टीकम की बात सच निकली। नदी खाली थी। मानो किसी ने पूरे का पूरा पानी रात को चुरा दिया हो। किसी को कुछ समझ नहीं आया कि क्या करें। इसी बीच नीचे की ओर से भी लोग ऊपर को आते दिखे। वे भी इसी उधेड़ बुन में थे कि नदी का पानी आखिर कहाँ गया?

लोग नदी के किनारे-किनारे से पहाड़ की ओर चढ़ने लगे। वहाँ से नदी नीचे बहती थी। नदी छोटी थी लेकिन आज तक कभी उसका पानी नहीं सूखा था। कितनी गर्मी क्यों न पड़े, उसका पानी बढ़ता रहता। वह जिन ऊँचे पर्वतों के पास से निकलती थी वे हमेशा बर्फ के ग्लेशियरों से ढके रहते थे। उन पहाड़ों पर कई ऐसे हिमखंड थे जो सदियों पुराने थे। इस छोटी-सी नदी से कई गाँवों की रोजी-रोटी चलती थी। इसी के किनारे किसानों के क्यार थे, जिसमें वे धान, गेहूँ बीजते और सब्जियाँ उगाते। अभी भी पहाड़ों के इन गाँवों में कोई पानी की योजना नहीं थी, इसलिए लोगों ने जरूरत के मुताबिक गाँवों को छोटी-छोटी कूहलों से पानी लाया था। लेकिन आज तो जैसे उन पर पहाड़ ही टूट गया हो।

अभी तकरीबन एक किलोमीटर ही सब लोग ऊपर पहुँचे थे कि तभी इलाके का प्रधान पगडंडी से नीचे उतरते दिखाई दिया। उसके साथ कुछ अनजाने लोग थे जो पहाड़ी नहीं लगते थे। लोगों ने उसे देखा तो कुछ आसरा बँधा। वही तो उनके इलाके का माई-बाप है। इतने लोगों को साथ देखकर वह पल भर के लिए चौंक गया। फिर पुजारी से ही पूछ लिया,

"पुजारी जी! सुबह-सुबह कहाँ धावा बोल रहे हो। खैरियत तो है न।"

पुजारी के साथ लोगों ने जब प्रधान को देखा तो थोड़ी जान में जान आई। पुजारी कहने लगा,

"प्रधान साहब! अच्छा हो गया कि आप यहीं मिल गए। क्या बताएँ आपको? देखो न हमारी नदी का पानी ही सूख गया। पता नहीं कहीं देवता हमसे नाराज तो नहीं हो गया है?"

पुजारी के कहते ही प्रधान की हँसी फूट पड़ी थी। उसके साथ जो अजनबी थे वे भी हँस पड़े। किसी और को उनकी हँसी में कुछ न लगा हो पर टीकम को हँसी अच्छी नहीं लगी। उसमें जरूर कुछ ऐसा था जो उसको भीतर तक चुभ गया। वैसे भी वह इक्कीस बरस का जवान मैट्रिक पढ़ा था और पुलिस में नौकरी के लिए हाथ-पाँव मार रहा था। गरीब परिवार से था इसलिए पढ़ने कॉलेज शहर नहीं जा सका। पर घर रह कर ही पत्रचार से बी.ए. की पढ़ाई कर रहा था। वैसे भी गाँव के लोग उसे प्रधान ही कहा करते क्यों कि वह हर समय लोगों के लिए कुछ न कुछ करता रहता। कभी किसी की अर्जी-चिट्ठी लिख देता। कभी किसी का कोई काम कर देता। लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बताता रहता। बोल-चाल में भी उसका कोई मुकाबला नहीं था। लोग तो उसे इलाके के भावी प्रधान के रूप में देखने लगे थे, परंतु उसका इस तरफ कोई ध्यान नहीं था। उसे पता नहीं क्यों पुलिस की नौकरी का शौक था।

प्रधान ने जेब से सिगरेट निकाली और लाइटर से सुलगा कर पुजारी से बतियाने लगा,

"बई पुजारी जी, सुबह-सुबह इतने परेशान होने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी नदी कहीं नहीं गई। अब वह बिजली बन गई है। इलाके में बिजली बन कर चमकेगी। तुम्हारे लिए नए-नए काम लाएगी। गाँव के लोग मेरे को हमेशा बोलते थे न कि प्रधान ने कुछ नहीं किया। आज हर घर से एक आदमी को कंपनी काम दे रही है। मैं तो इसलिए ही तुम्हारे पास आ रहा था।"

"मतलब...।"

टीकम ने बीच में ही प्रधान को टोक लिया। प्रधान हल्का-सा सकपकाया। उसे टीकम कभी फूटी आँख नहीं सुहाया था। सुहाता भी क्यों, पढ़ा लिखा समझदार था। प्रधान के लिए खतरे की घंटी कभी भी बजा सकता था।

"मतलब यह बचुआ कि तू तो पढ़ा लिखा है रे। अखबार नहीं पढ़ता क्या? सपने तो ठाणेदार बणने के देखता है। बई पुजारी जी! पहाड़ के साथ जो दूसरा जिला लगता है न उसकी सीमा पर पिछले दिनों हमारे मुख्यमंत्री ने बिजली की नई योजना का उद्घाटन किया है। तुम्हारी वह नदी एक सुरंग से वहीं चली गई है। वहाँ उसकी जरूरत है। वह वहाँ बिजली तैयार करेगी।"

"पर हमारा क्या होगा प्रधान जी। इतने गाँवों के खेत-क्यार सूख जाएँगे। घराट बंद हो जाएँगे।"

"पानी रहेगा पुजारी जी। रहेगा। बरसात का पानी इसी में रहेगा। बई वह पहाड़ पर तो नहीं चढ़ेगा न। फिर अब

घराट-घरूट कौन चलाता है। बिजली से चक्कियाँ चलेंगी। क्यों रे टीकम, क्यों नहीं लगाता एक दो चक्कियाँ। सरकार लोन दे रही है। काहे को पुलिस की नौकरी के चक्कर में पड़ा है।"

इतना कह कर प्रधान ने वहाँ से खिसकना ही ठीक समझा। टीकम भले ही सारी बातें समझ गया हो पर लोगों की समझ में कुछ नहीं आया था। टीकम ने ही सभी को समझाया था कि इस पहाड़ी नदी को एक सुरंग से दूसरी तरफ ले जाया गया है और अब वह यहाँ लौटेगी नहीं। उधर उसके पानी से बिजली पैदा होगी।

नदी गायब होने के साथ उनके गाँव पर एक और संकट खड़ा हो गया था। उनका गाँव ऐसे पर्वतों की तलहट्टी में था जहाँ ग्लेशियरों के गिरने का खतरा हमेशा बना रहता था। अब रोज डायनामाइटों के धमाकों से टनों के हिसाब से उस नदी में चट्टाने गिरनी शुरू हो गई थीं और नदी के किनारे जो घराट थे वे तो पूरी तरह नष्ट हो गए थे। जिस नदी में नीला साफ पानी बहता रहता उसमें मिट्टी पत्थर भरने लगे थे। सबसे ज्यादा खतरा टीकम के गाँव को ही था। लोग जानते थे कि धमाकों के शोर से पहाड़ पर सदियों से सोया ग्लेशियर जाग गया तो उनके गाँव को लील लेगा। इसलिए उन्हें कुछ करना होगा। इस योजना का जितना काम हो गया वह ठीक है पर इससे आगे होने से रोकना होगा।

टीकम ने गाँव के लोगों की एक समिति का गठन किया था और एक आवेदन पत्र बना कर उस पर सभी के हस्ताक्षर करवाए थे। उसका मानना था कि प्रधान के पास जाने से कोई फायदा नहीं होगा। उन्हें विधायक और मुख्यमंत्री से मिलना होगा। इसलिए सबसे पहले दस-बीस लोग टीकम की अगवाई में पहले विधायक को मिले। लेकिन विधायक ने बजाय उनकी तकलीफ सुनने के उलटा विकास का लंबा-चौड़ा भाषण दे दिया था। जब वहाँ बात न बनी तो वे लोग जैसे-तैसे मुख्यमंत्री के पास गए और अपना दुखड़ा रोया। लेकिन वहाँ से भी खाली हाथ लौटना पड़ा था।

निराश-हताश वे लौटकर गाँव चले आए थे। बिजली योजना का काम जोरों पर था। अब तो गाँव के नीचे से एक सड़क भी निकल रही थी जिसकी खुदाई और ब्लास्टों से उनके गाँव के नीचे की पहाड़ी धँसने लगी थी। कई बीघे जमीन तो धँस गई थी। अब इस काम को रोकना उनकी प्राथमिकता थी।

सभी जानते थे कि प्रधान और विधायक से लेकर ऊपर तक कोई उनकी मदद नहीं करेगा। क्योंकि जिस कंपनी को वह काम मिला था वह बहुत बड़ी कंपनी थी जिसने अरबों रूपए इस योजना के लिए लगा दिए थे। उन्हें इससे कोई मतलब न था कि उनके काम से नदी गायब हो रही है, या जंगल नष्ट हो रहे हैं या गाँव की जमीन धँस रही है या गरीबों की रोजी-रोटी छीनी जा रही है। उनके लिए तो पहाड़ सोना थे और प्रदेश की सरकार विकास के नाम पर उस कंपनी पर बहुत ज्यादा मेहरबान भी थी। मगर लोगों के पास अब कोई रास्ता न बचा था। पुजारी ने ही लोगों को सुझाया कि क्यों न देवता का आशीर्वाद लिया जाए। वैसे भी उनके गाँवों के देवता की दूर-दूर तक मान्यता थी। यहाँ तक कि चुनाव होने से पहले मुख्यमंत्री तक वहाँ माथा टेकना नहीं भूलते थे। वह प्राचीन मंदिर था जिसकी भव्यता देखते ही बनती थी। दो मंजिलें इस मंदिर की एक मंजिल जमीन के नीचे थी जिसमें लाखों-करोड़ों का साज-सामान रखा हुआ था। मंदिर के तकरीबन सभी कलश और मूर्तियाँ सोने की थीं। किवाड़ों पर गजब की नक्काशी थी। यानी उस इलाके का वह सर्वाधिक भव्य मंदिर था। देवता भी शक्तिशाली था।

देव पंचायत ने देवता का आह्वान किया तो देवता नाराज हो गया। प्रधान, विधायक और मुख्यमंत्री पर बरस पड़ा। विनाश की बातें होने लगी। निर्णय हुआ कि विधायक को यहाँ बुलाया जाए। देवता की तरफ से फरमान जारी हुआ लेकिन विधायक नहीं आया। फिर मुख्यमंत्री को फरमान गया। मुख्यमंत्री ने सहजता से उत्तर भी दिया कि वे देवता का अपार आदर करते हैं लेकिन विकास के मामले में देवता को बीच में लाना कोई विपक्षी राजनीति है। लोग निराश हो गए।

अब निर्णय हुआ कि मिलकर इस लड़ाई को लड़ा जाए। कंपनी का काम रोका जाए। इसीलिए उस गाँव के साथ कई दूसरे गाँव के लोग भी इकट्ठे हो गए और बड़े समूह में विरोध करते हुए कंपनी के काम को रोक दिया गया। लोग वहीं धरने पर बैठे रहे। दूसरे दिन उन्हें भनक लगी कि शहर से हजारों पुलिस जवान आ रहे हैं। टीकम पुलिस की ज्यादतियों से वाकिफ था। विचार-विमर्श हुआ। तय किया गया कि देवता का सहारा लिया जाए। कुछ लोग वापस लौटे और देवता का पारंपारिक विधि-विधान से शृंगार किया गया। उनके पास यह अपने गाँव, नदी और जमीन को बचाने का आखिरी विकल्प था।

देवता अपने बजंतर के साथ पहली बार एक अनोखे अभियान के लिए निकला था, विरोध के लिए निकला था। आज न कहीं देव जातरा थी और न कोई देवोत्सव, न किसी के घर कोई शादी-ब्याह था, न किसी की इच्छा ही पूरी हुई थी। दोपहर तक देवता विरोध स्थल पर पहुँच गया। देवता के साथ असंख्य लोग थे। सौ से ज्यादा लोग तो पहले ही कंपनी के काम को रोके बैठे थे। देवता और सरकारी पुलिस तकरीबन-तकरीबन एक साथ पहुँचे थे। लोगों को विश्वास था अब कोई ताकत उनके विरोध को कुचल नहीं सकती। उनके साथ देवता है। उसकी शक्ति है।

स्थिति गंभीर बनती जा रही थी। लेकिन कंपनी अपने काम को किसी भी तरह से रोकने के पक्ष में नहीं थी। यदि सड़क निर्माण का यह काम रुक गया तो अरबों का नुकसान हो सकता था। इसलिए सरकारी आदेश भी ऐसे थे कि किसी तरह से लोगों को वहाँ से भगाया जाए।

पुलिस के एक बड़े अधिकारी ने लाउडस्पीकर पर कई बार हिदायतें दीं कि लोग पीछे हटते जाएँ। लेकिन लोगों का जुलूस देवता के सान्निध्य में बढ़ता चला गया। सबसे आगे देवता का रथ था। सोने-चाँदी की मोहरों से सजा हुआ। साथ उसके निशान थे। बाजा-बजंतर था। स्थिति जब नहीं सँभली तो पुलिस को लाठी चलाने के आदेश दे दिए गए। वे शिकारी कुत्तों की तरह लोगों पर टूट गए। उस विरोध में मर्द, औरतें, जवान, बूढ़े और बच्चे भी शामिल थे।

लोगों की भीड़ पर पुलिस की लाठियाँ बरस रही थीं। पर लाठियों का असर कोई खास नहीं हो रहा था। पहाड़ी शरीर, मिट्टी-गोबर से पुष्ट उन देहातियों पर जब लाठियाँ असरदार नहीं रहीं तो बंदूकें तन गईं। फिर एकाएक गोलियाँ चल पड़ीं। पहली गोली देवता के एक बुजुर्ग कारदार को लगी थी। वह पहाड़ी से लड़खड़ाता नीचे गिर गया। दूसरी गोली पुजारी को लगी। वह जोर से चीखा। उसके हाथ से फूल-अक्षत और सिंदूर की थाली नीचे गिर गई और बेहोश हो गया। लोग बहुत घबरा गए थे। अब गोलियों का सामना करना कठिन हो रहा था। वे पीछे हटने लगे, भागने लगे। लेकिन उनका भागना बेअसर साबित हुआ। रास्ता संकरा था जिससे ऊपर भागने में कठिनाई हो रही थी। आर-पार ढाँक थे। दाईं तरफ गहरी खाई। नीचे असंख्य पुलिस वाले हाथों में लाठियाँ और बंदूके ताने ऊपर की ओर बढ़ रहे थे। दो युवाओं को भी गोली लगी थी। उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया था। एक लड़की अंतिम साँसे गिन रही थी। कई लोग घायल हो गए थे। रास्तों और झंखाड़ों में गिरे-पड़े थे।

टीकम जैसे-तैसे देवता को बचाने में लगा था। रथ का मुँह पीछे मोड़ कर कारदारों को वहाँ से भागने के लिए चिल्ला रहा था। देवता शृंगार में था। लोगों के कंधों पर था। उनके न रथ छोड़ते बन रहा था और न भागते हुए। देवता भी लाठियाँ-गोलियाँ नहीं रोक पाया। अपने हक की लड़ाई में लोग अपार विश्वास और आस्था के साथ उसे अपने साथ लाए थे। देवता के साथ यह अपनी तरह का अनूठा विरोध था पर गोलियों के आगे वह भी असहाय हो गया था। देवता के साथ लाने से लोगों में एक अतिरिक्त उत्साह पैदा हो गया था। उनके साथ देवता की शक्ति थी। कोई उनका कुछ नहीं कर सकता था। उनकी यह सोच गलत साबित हुई थी। देवता चुपचाप देखता रहा। गूर में कोई देवछाया नहीं आई। सहायक गूर भी नहीं खेले। पंचों की कोई पंचायत नहीं हुई। ढोल-नगाड़े पहाड़ियों से नीचे लुढ़क गए। देवता न गोलियाँ रोक पाया, न अपने कारकुनों व लोगों का जीवन बचा सका। कुछ युवाओं ने हिम्मत दिखा कर मरे हुए लोगों की लाशें उठा ली थीं।

लोग निराश हताश लौट रहे थे। घरों में औरतें और बच्चे इंतजार कर रहे थे। मुश्किल से लोग गाँव तक पहुँचे थे। उनके साथ एक कारदार, पुजारी और दो युवाओं की लाशें देख सभी का कलेजा मुँह को आ गया था। इस हादसे ने पूरे गाँव और इलाके को दहला दिया था। देवता के गूरों और कारदारों को कुछ नहीं सूझ रहा था। युवा आक्रोश में थे। उन्होंने देवता के रथ को कारदारों से छीन लिया और मंदिर के प्रांगण में रख दिया। साथ बचे हुए ढोल, नगाड़े, करनाले और दूसरे वाद्य भी। एक युवा घर से मिट्टी का तेल ले आया। देवता के रथ को जलाने में अब कुछ ही देर थी। लेकिन टीकम ने उन्हें समझा-बुझा कर रोक दिया था। जैसे-तैसे लोग शांत हुए तो देवता को कोठी में बंद कर दिया गया। यह अविश्वास की पराकाष्ठा थी। आज कई भ्रम टूटे थे। आस्थाएँ मरी थीं। देवता मंदिर में चुपचाप शक्ति विहीन पड़ा था। कहाँ गई उसकी शक्ति। क्यों उसने सहायता नहीं की। क्यों कोई चमत्कार नहीं हुआ। क्यों उसने अपना विराट रूप नहीं दिखाया। फिर किस लिए उसका बोझ गाँव-परगने के लोग सदियों से ढोते रहे...? ऐसे

अनेकों प्रश्न थे जो लोगों के दिल में बार-बार उठ रहे थे।

बात आग की तरह पूरे इलाके में फैली गई थी। पुलिस की ज्यादतियों से लोग खिन्न थे, आश्चर्य चकित थे। देवता के होते हुए जो कुछ हुआ उसे देख कर हतप्रभ थे। जब देवता कुछ नहीं कर सका तो उनका कौन अपना होगा? हताशाएँ चारों तरफ थीं। अंधकार चारों तरफ था। परियोजना की बलि चढ़ जाएगा उनका गाँव। न पशुओं को पानी, न खेतों को पानी, न जंगल की हरियाली, न नदी का शोर, कुछ भी नहीं। शेष रह जाएगा तो डायनामाइटों का शोर...। गिरते-दरकते पहाड़। पिघलते ग्लेशियर...।

पुलिस वाले अब निश्चिंत हो गए थे। उनकी गोलियों के आगे देवता की भी नहीं चली। वे मस्ती में खा पी रहे थे। उन्होंने सरकार के साथ कंपनी के अफसरों को भी खुश कर दिया था। बकरे कट रहे थे। कंपनी के लोगों ने सारे इंतजाम उनके लिए किए थे। पुलिस और कंपनी के लोग पहले देवता के नाम से अवश्य डरते थे। उसके सुने हुए चमत्कारों से डरते थे। लेकिन अब महज ये किंवदंतियाँ ही थीं। जब पुलिस ने गोलियाँ दागीं तो वही परम शक्तिशाली देवता लोगों की पीठ पर भाग खड़ा हुआ था।

लेकिन अगले ही दिन यह समाचार सुर्खियों में था कि उस रात इस हादसे के शिकार हुए ग्रामीणों ने रात को शराब और मांस के उत्सव में मदहोश हुए पुलिस व कंपनी के लोगों पर धावा बोल दिया था और सुबह तक उनका वहाँ कोई नामोनिशान नहीं था। मौका-ए-वारदात से महज कुछ बंदूकें, दस-बीस लाठियाँ, दर्जनों शराब की टूटी हुई बोतलें, बकरों के कटे सिर और उधड़ी खालें और फटी हुई वर्दियों के टुकड़े बरामद हुए थे। शायद जिस देवता को पुलिस के आतंक ने भगोड़ा बना दिया था वहीं ग्रामीणों में सामूहिक रूप से प्रकट हो गया था और ग्रामजनों ने अपने आक्रोश से शासन की दमनकारी शक्तियों को तहस-नहस कर दिया था।

राष्ट्रीयता

गणेशशंकर विद्यार्थी

देश में कहीं-कहीं राष्ट्रीयता के भाव को समझने में गहरी और भद्दी भूल की जा रही है। आये दिन हम इस भूल के अनेकों प्रमाण पाते हैं। यदि इस भाव के अर्थ भली-भाँति समझ लिये गये होते तो इस विषय में बहुत-सी अनर्गल और अस्पष्ट बातें सुनने में न आतीं। राष्ट्रीयता जातीयता नहीं है। राष्ट्रीयता धार्मिक सिद्धांतों का दायरा नहीं है। राष्ट्रीयता सामाजिक बंधनों का घेरा नहीं है। राष्ट्रीयता का जन्म देश के स्वरूप से होता है। उसकी सीमाएँ देश की सीमाएँ हैं। प्राकृतिक विशेषता और भिन्नता देश को संसार से अलग और स्पष्ट करती है और उसके निवासियों को एक विशेष बंधन-किसी सादृश्य के बंधन-से बाँधती है। राष्ट्र पराधीनता के पालने में नहीं पलता। स्वाधीन देश ही राष्टों की भूमि है, क्योंकि पुच्छ-विहीन पशु हों तो हों, परंतु अपना शासन अपने हाथों में न रखने वाले राष्ट्र नहीं होते। राष्ट्रीयता का भाव मानव-उन्नति की एक सीढ़ी है। उसका उदय नितांत स्वाभाविक रीति से हुआ। योरोप के देशों में यह सबसे पहले जन्मा। मनुष्य उसी समय तक मनुष्य है, जब तक उसकी दृष्टि के सामने कोई ऐसा ऊँचा आदर्श है, जिसके लिए वह अपने प्राण तक दे सके। समय की गति के साथ आदर्शों में परिवर्तन हुए। धर्म के आदर्श के लिए लोगों ने जान दीं और तन कटाया। परंतु संसार के भिन्न-भिन्न धर्मों के संघर्षण, एक-एक देश में अनेक धर्मों के होने तथा धार्मिक भावों की प्रधानता से देश के व्यापार, कला-कौशल और सभ्यता की उन्नति में रुकावट पड़ने से, अंत में धीरे-धीरे धर्म का पक्षपात कम हो चला और लोगों के सामने देश-प्रेम का स्वाभाविक आदर्श सामने आ गया। जो प्राचीन काल में धर्म के नाम पर कटते-मरते थे, आज उनकी संतति देश के नाम पर मरती है। पुराने अच्छे थे या ये नये, इस पर बहस करना फिजूल ही है, पर उनमें भी जीवन था और इनमें भी जीवन है। वे भी त्याग करना जानते थे और ये भी और ये दोनों उन अभागों से लाख दर्जे अच्छे और सौभाग्यवान हैं जिनके सामने कोई आदर्श नहीं और जो हर बात में मौत से डरते हैं। ये पिछले आदमी अपने देश के बोझ और अपनी माता की कोख के कलंक हैं। देश-प्रेम का भाव इंग्लैंड में उस समय उदय हो चुका था, जब स्पेन के कैथोलिक राजा फिलिप ने इंग्लैंड पर अजेय जहाजी बेड़े आरमेड़ा द्वारा चढ़ाई की थी, क्योंकि इंग्लैंड के कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, दोनों प्रकार के ईसाइयों ने देश के शत्रु का एक-सा स्वागत किया। फ्रांस की राज्यक्रांति ने राष्ट्रीयता को पूरे वैभव से खिला दिया। इस प्रकाशमान रूप को देखकर गिरे हुए देशों को आशा का मधुर संदेश मिला। 19वीं शताब्दी राष्ट्रीयता की शताब्दी थी। वर्तमान जर्मनी का उदय इसी शताब्दी में हुआ। पराधीन इटली ने स्वेच्छाचारी आस्ट्रिया के बंधनों से मुक्ति पाई। यूनान को स्वाधीनता मिली और बालकन के अन्य राष्ट्र भी कब्रों से सिर निकाल कर उठ पड़े। गिरे हुए पूर्व ने भी अपने विभूति दिखाई। बाहर वाले उसे दोनों हाथों से लूट रहे थे। उसे चैतन्यता प्राप्त हुई। उसने अँगड़ाई ली और चोरों के कान खड़े हो गये। उसने संसार की गति की ओर दृष्टि फेरी। देखा, संसार को एक नया प्रकाश मिल गया है और जाना कि स्वार्थपरायणता के इस अंधकार को बिना उस प्रकाश के पार करना असंभव है। उसके मन में हिलोरें उठीं और अब हम उन हिलोरों के रत्न देख रहे हैं। जापान एक रत्न है - ऐसा चमकता हुआ कि राष्ट्रीयता उसे कहीं भी पेश कर सकती है। लहर रुकी नहीं। बढ़ी और खूब बढ़ी। अफीमची चीन को उसने जगाया और पराधीन भारत को उसने चेताया। फारस में उसने जागृति फैलाई और एशिया के जंगलों और खोहों तक में राष्ट्रीयता की प्रतिध्वनि

इस समय किसी न किसी रूप में उसने पहुँचाई। यह संसार की लहर है। इसे रोका नहीं जा सकता। वे स्वेच्छाचारी अपने हाथ तोड़ लेंगे– जो उसे रोकेंगे और उन मुर्दों की खाक का भी पता नहीं लगेगा- जो इसके संदेश को नहीं सुनेंगे। भारत में हम राष्ट्रीयता की पुकार सुन चुके हैं। हमें भारत के उच्च और उज्ज्वल भविष्य का विश्वास है। हमें विश्वास है कि हमारी बाढ़ किसी के रोके नहीं रुक सकती। रास्ते में रोकने वाली चट्टानें आ सकती हैं। बिना चट्टानें पानी की किसी बाढ़ को नहीं रोक सकतीं, परंतु एक बात है, हमें जान-बूझकर मूर्ख नहीं बनना चाहिए। ऊटपटाँग रास्ते नहीं नापने चाहिए। कुछ लोग 'हिंदू राष्ट्र' -'हिंदू राष्ट्र' चिल्लाते हैं। हमें क्षमा किया जाय, यदि हम कहें-नहीं, हम इस बात पर जोर दें - कि वे एक बड़ी भारी भूल कर रहे हैं और उन्होंने अभी तक 'राष्ट्र' शब्द के अर्थ ही नहीं समझे। हम भविष्यवक्ता नहीं, पर अवस्था हमसे कहती है कि अब संसार में 'हिंदू राष्ट्र' नहीं हो सकता, क्योंकि राष्ट्र का होना उसी समय संभव है, जब देश का शासन देशवालों के हाथ में हो और यदि मान लिया जाय कि आज भारत स्वाधीन हो जाये, या इंग्लैंड उसे औपनिवेशिक स्वराज्य दे दे, तो भी हिंदू ही भारतीय राष्ट्र के सब कुछ न होंगे और जो ऐसा समझते हैं - हृदय से या केवल लोगों को प्रसन्न करने के लिए - वे भूल कर रहे हैं और देश को हानि पहुँचा रहे हैं। वे लोग भी इसी प्रकार की भूलकर रहे हैं जो टर्की या काबुल, मक्का या जेद्दा का स्वप्न देखते हैं, क्योंकि वे उनकी जन्मभूमि नहीं और इसमें कुछ भी कटुता न समझी जानी चाहिए, यदि हम यह कहें कि उनकी कब्रें इसी देश में बनेंगी और उनके मरिसेये - यदि वे इस योग्य होंगे तो - इसी देश में गाये जाएँगे, परंतु हमारा प्रतिपक्षी, नहीं, राष्ट्रीयता का विपक्षी मुँह बिचका कर कह सकता है कि राष्ट्रीयता स्वार्थों की खान है। देख लो इस महायुद्ध को और इंकार करने का साहस करो कि संसार के राष्ट्र पक्के स्वार्थी नहीं है? हम इस विपक्षी का स्वागत करते हैं, परंतु संसार की किस वस्तु में बुराई और भलाई दोनों बातें नहीं हैं? लोहे से डॉक्टर का घाव चीरने वाला चाकू और रेल की पटरियाँ बनती हैं और इसी लोहे से हत्यारे का छुरा और लड़ाई की तोपें भी बनती हैं। सूर्य का प्रकाश फूलों को रंग-बिरंगा बनाता है पर वह बेचारा मुर्दा लाश का क्या करें, जो उसके लगते ही सड़कर बदबू देने लगती है। हम राष्ट्रीयता के अनुयायी हैं, पर वही हमारी सब कुछ नहीं, वह केवल हमारे देश की उन्नति का उपाय-भर है।

मौन

मौन है ये सारी धरती, मौन में है ये गगन,
मौन हैं ये वृक्ष सारे, मौन से बहती पवन।
मौन से बहती नदी, मौन में है सब शिखर,
मौन है ये चाँद और मौन में है ये दिनकर।
मौन में है सभा सारी, हर महारथी मौन है,
द्रौपदी की इस दशा का एक कारण मौन है।
कौन है वो पार्थ और कौन है वो गदाधारी,
रक्षा की भीख माँगती जिनसे इक अबला नारी।
कौन हैं वो धर्मराज जो सब को दाँव लगाते हैं,
सबको दास बनाकर जो खुद को हार जाते हैं।
मौन है हर कोई वहाँ बोलती केवल द्रौपदी,
और सुनाई देती सबको कुछ निर्लज्जों की हँसी।
एक पापी वस्त्र खींचे एक पापी जंघा पीटे,
बाल पकड़कर भरी सभा में द्रौपदी को घसीटे।
हर कोशिश नाकाम हो गयी जब द्रौपदी की,
याद आयी फिर उसको वासुदेव कृष्ण की।
वस्त्र खिंचता एक तरफ से और बढ़ता एक तरफ से,
एक तरफ निर्लज्ज दुःशासन और नारायण हैं एक तरफ से।
समय बदला है केवल, हकीकत आज भी वही है,
बस वस्त्र बढ़ाने वाला कोई वासुदेव नहीं है।

–ए.के. शुक्ला

नाम : अनुज कुमार शुक्ल

ई-मेल आईडी : t22103@students.iitmandi.ac.in

ग़ज़ल

मैं रुक गया हूँ जिंदगी, मैं थक गया हूँ जिन्दगी
बीच हार के और जीत के, अटक गया हूँ जिंदगी

न फासलों का अंत है, न कोई छोर दिख रहा
है हर तरफ धुआँ घना, न कोई और दिख रहा

हूँ भीड़ में दबा हुआ, नाकामियों से सना हुआ
हूँ हर नज़र के आसरे के बोझ में लदा हुआ

लहक रहा हूँ लौ सा मैं, है हर दिशा तमस लिए
शायद उजाला हो कभी फिर, ये उम्मीद बस लिए

है इंतज़ार सूर्य का, है आश नवप्रभात की
इक किरण का आसरा, और तमस की मात की

पता है, आज हो या कल, पर जीतना है तय मेरा
विजयतिलक की थाल ले, मैं लड़ रहा हूँ जिंदगी

- अमित मेंदोला
बी.टेक., कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग, भा.प्रौ.सं. मंडी
ई-मेल आईडी : t22103@students.iitmandi.ac.in

हिन्दी की जीवन यात्रा

माँ भारती का आँचल ओढ़
माता संस्कृत के घर जन्म हुआ
पिता हिमालय के दुलार पली
ऋषि-मुनियों के आँगन खेली रमीं यों
बेटी हिन्दी का लालन हुआ

तात-तुलसी घर गई जब
रामचरित सी रमणी हुई
कबीर-काका करघे कट
निर्मल झीनी चदरिया हुई

मीरा मासी ने महल बुलाया
प्रेम भक्ति दीवानी बनी
सूरदास ने भक्ति करी तब
बंशीधर की सखा बनी

रसखान-खान से रत्न चुने जब
वृंदावन रज लता बनी
नानक की गुरु बानी सुनी तब
इक ओंकार गुरु शब्द बनी

मुंशी निराला ढिक बैठी जब
नीम का पेड़, गोदान बनी
दिनकर से दिनकर सा ओज लिया
छाया श्रृंगार कर महादेवी बनी

अब हिन्दी प्रौढ़ हो गई
गरिमा उसकी गौढ़ हो गई
बिन बोले कोने में पड़ी रहे
मौन हो सब कुछ सही रहे

परिवार सारा बिखर गया
महल, वन, आँगन, सब दरक गया
दुर्बल निराश्रित छोड़ चले
पश्चिम के मोह में दौड़ चले

फिर भी आश लिए मुस्कुराती है
बेटों को अपने जो निहारती है

विश्वास है कि कुमार कोई आएगा
खोया वैभव लौटाएगा

पुनः सज सँवर वो जाएगी
अपनी गरिमा को पाएगी

पीताम्बर के पीत से बची द्रौपदी लाज
हिन्दी चीर हरण पर है क्यों मौन समाज

थी बेटी कुलीन घर की अब असहाय हो गई
बिन ब्याहे ही हिन्दी घर, घर अपने ही पराई हो गई।

–आशीष श्रीवास्तव,
अतिथि गृह, प्रबंधक-आशीष श्रीवास्तव

बिटिया

दुनिया का ये दस्तूर है दुजा,
तू ही बता ये क्या है खुदा,
लक्ष्मी सरस्वती की चाह सभी को
क्यों दुआ न कहीं इक बेटी की?

उसी दर्द से मैं जन्मी,
उसी दर्द से भाई,
भाई दुलारा आँख का तारा
माँ! फिर क्यों बेटी धन पराया?

एक कदम में आगे बढ़ती
एक कदम में पीछे हट जाती,
बेटी की राहों में दुनिया,
कई मोड़ अटकाती।

सारे व्रत, उपवास तेरे लिए
भैया तुझे मेरी उम्र लगे
मुझे मारने इस दुनिया में
जीवन भर यमदूत चलें।

पढ़ना लिखना मैं भी चाहूँ
पापा मुझको पढ़ने दो,
भाई के जैसे ही पढ़ लिखकर
मुझको कुछ बनने दो।
बी.ए. की विदेश ब्याही
माँ न पूछे हाल,
चक्की के पहियों में आटा पिसकर
बेटी है बेहाल।

बेटी के फिर जन्मी बेटी
माँ बैठी उदास
सबके मन में बस
पुत्र जन्म की आश

सुन ले ऐ तू, बेटे के लोभी
बेटी पालन नहीं तेरे बस की बात
खुदा भी तुझे कैसे बक्शे
बेटी बहुत छोटी है तेरी औकात।

दुनिया का ये दस्तूर है दुजा
तू ही बता ये क्या है खुदा
लक्ष्मी सरस्वती की चाह सभी को,
क्यों दुआ न कहीं इक बेटी की?

आशु
सफाई कर्मचारी, भा.प्रौ.सं. मंडी

मातृ भाषा, मात्र एक भाषा

लाचार सी संवेदित सी लड़खड़ाती सी चल रही हूँ मैं,
बस एक दिन के इंतजार में घुट घुट कर जी रही हूँ मैं।

संस्कृत मेरी जननी, मैं शिष्टाचार बन कर रह गयी,
मातृ भाषा राज भाषा, मात्र एक भाषा बन कर रह गयी।

हिन्दी दिवस दिन हिन्दी, फिर अंग्रेज बन जाता हूँ,
अगले दिन अंग्रेजी बोल, हिंदी प्रेमी कहलाता हूँ...।

अब वो दिन दूर नहीं, ढलती हुई शाम हो जाऊँगी
ओढ़ कर एक विदेशी चादर, गहरी नींद सो जाऊँगी,

नाराज नहीं हूँ कुंठित हूँ, हर वक्त शिकायत रहती है,
है सब कुछ तुझमें वैसा ही, क्यों तिरस्कार में रहती है?

आत्म सम्मान चोट, ये लिंग भेद के जाल में,
पढ़े लिखों के बीच में दूभर है जीना इस हाल में,

हिन्दी की जो निन्दा करते, वे लोग बड़े नादान हैं,
हैं तो प्यारी सभी भाषाएँ पर हिन्दी देश की शान है।

तिलक राज
कनिष्ठ अधीक्षक, भा.प्रौ.सं. मंडी

बचपन बीत गया

बीत गया है वह दिन,
जब खेला करते थे रात-दिन
कितने खुश लगते थे तब
न आएगा वह पल लौटकर अब।

मन में झिझक थी
न थी कोई उलझन
खुशियों से फूलीं नहीं समाती
जिंदगी प्यारी कितनी लगती थी।

बचपन के नज़ारे थे कितने हसीन
थे बहुत कमसिन
कैसे बीत गया वह वक्त
लगती है आज जिंदगी बहुत ही सख्त।

जीते थे सबके साये में
बैठाए रखते थे सब पलकों पर
न पता था क्या होता है गम
खुशी पसरी रहती हर दम

धीरे-धीरे बीतता गया बचपन
रह गया बस अपनापन
आज भी दिखाई देता है वह पल,
पलट कर जब देखती हूँ गुजरा हुआ कल।

देवाश्रिता रॉय चौधरी,
वेब कंटेन्ट डेवलपर, भा.प्रौ.सं. मंडी

कर्त्तव्य

प्रकृति की विपदा से हुई ग्रस्त
हिम आँचल की व्याकुल दसों दिशाएँ
आओ इस विकट समय में
हम अपना कर्त्तव्य निभाएँ

अतिवृष्टि के वज्रपात से
शांत हिमालय त्रस्त हो चुका
नित कल-कल बहने वाली नदियों का भी
रौद्र रूप सर्वनाश कर चुका
माना संकट का यह समय अकाट्य
पर हम भी निज साहस दिखलाएँ
आओ इस विकट समय में
हम अपना कर्त्तव्य निभाएँ

आज असंभव सा तो लगता
होगा फिर पहले सा सब सुनियोजित कैसे?
नया रूप धरेगा जर्जर जड़ क्षत-विक्षत पुरातन कैसे?
पर अडिग अटल संकल्पों से
रीत चुके इस प्रचण्ड विनाश में
हम करें पुनः बस्तियां बसाने की आशाएँ
आओ इस विकट समय में
हम अपना कर्त्तव्य निभाएँ

बीते विनाश से सीख लें हम
माँ प्रकृति से तालमेल बिठायें
अपनी संस्कृति से कुछ सीखें
पनपी विकृतियों को हटाएँ
देवधरा को माता मानें
भौतिकता ने तो सुखचैन गवाए
मनु की पावन धरती को
पुरुषार्थ कर फिर से स्वर्ग बनाएँ
आओ इस विकट समय में
हम अपना कर्त्तव्य निभाएँ

मानव का धर्म यही है
बेसहारा, टूटे लोगों को संबल दें
माना कार्य अति दुष्कर है अब
पर पुनः भगीरथी प्रयासों से
प्रकृति से संतुलन बिठाकर
नव सृष्टि का निर्माण करें
जो बीत गया उसे भुलाकर
ले कर मन में नई आशाएँ
आओ इस विकट समय में
हम अपना कर्त्तव्य निभाएँ।

–नेहा जसवाल
अनुक्रमाँक-डी 22011
मोबाईल 9805898850
प्रबन्धन शैक्षणिक विभाग, भा.प्रौ.सं. मण्डी

अंतिम मुलाकात

मैं शांत और स्तब्ध खड़ा
समय की रफ़्तार को देख रहा था
सब कुछ पीछे छूट रहा था
और मैं चलते चले जा रहा था
अंतिम मुलाकात कैसे और कहाँ होगी
कोई नहीं जानता?
तेरे शहर में एक बार फिर आएँगे
कब और कहाँ कोई नहीं जानता
कल्पनाओं के चित्र चारों तरफ मंडरा रहे थे
कुछ धुँधले तो कुछ बहुत दूर
और मैं चलते चले जा रहा था
अंतिम मुलाकात कैसे और कहाँ होगी
कोई नहीं जानता?
सूरज की रोशनी मेरे बदन से टकरा कर
तेरे शहर को जगमगा रही थी
यह वही महक और खुशबू थी
जो तुझे महका रही थी
और मैं चलते चले जा रहा था
अंतिम मुलाकात कैसे और कहाँ होगी
कोई नहीं जानता?

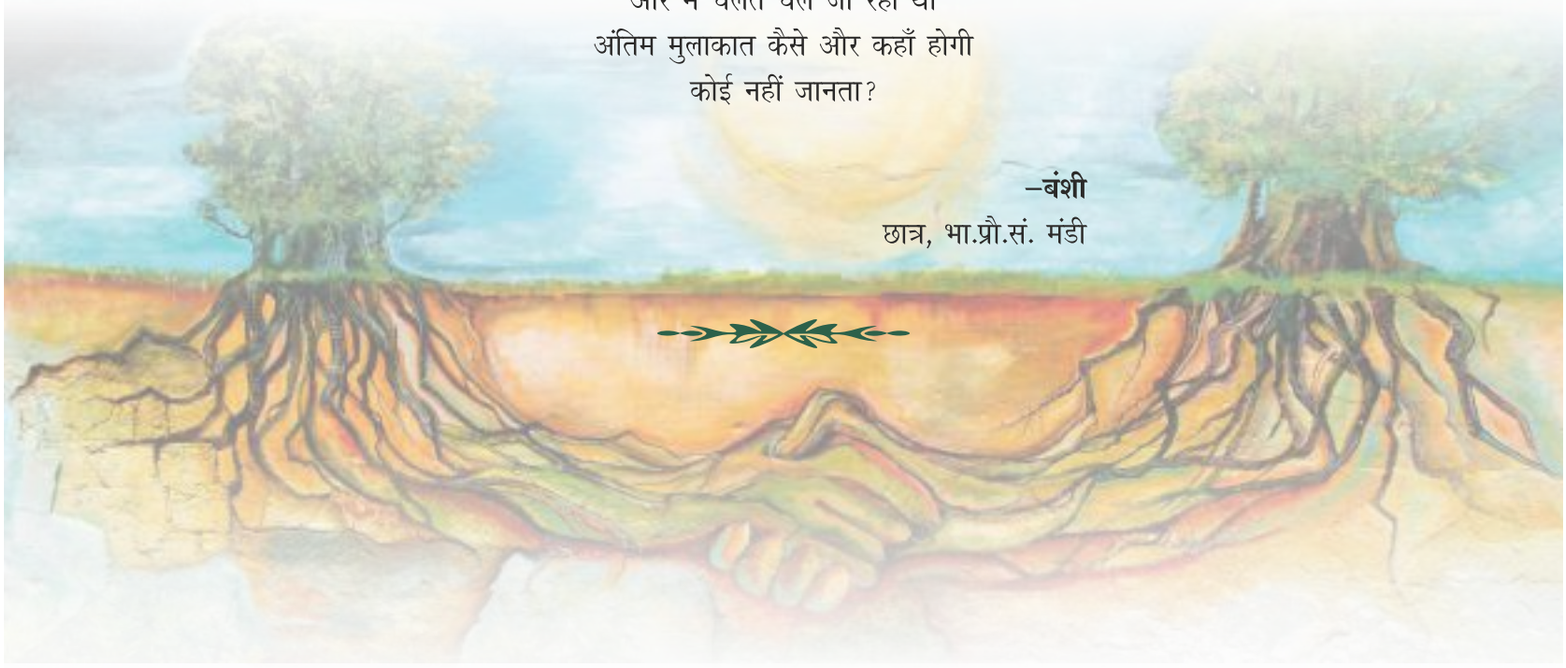

–बंशी
छात्र, भा.प्रौ.सं. मंडी

भूल चुकी है वो

रोती तो नहीं है अब वो,
मुस्कुराहट क्या है बस ये भूल चुकी है वो।

एक जिन्दगी है उसके पास,
पर जीना कैसे है बस ये भूल चुकी है वो।

खोई सी रहती है किसी सोच में,
बातें क्या होती है बस ये भूल चुकी है वो।

किसी से कोई शिकायत भी नहीं उसे,
कोई है उसका अपना ये भी भूल चुकी है वो।

ख़्वाब बने हकीकत उसके भी,
पर ख़्वाब देखना भी भूल चुकी है वो।

खुशियाँ बेगानी रही उससे सदा,
जिन्दगी से उम्मीद रखना भी भूल चुकी है वो।

–मिन्नी कौर
एक्सेक्यूटिव,
भा.प्रौ.सं. मंडी कैटेलिस्ट

जोशीमठ

आदि-शंकराचार्य ने महातप के बाद
जब खोले होंगे चक्षु
वेदांत के अलावा देखा होगा एक और भी सत्य
वह ये कि जोशीमठ डूबेगा...
जरूर डूबेगा जोशीमठ!

पर ये बताया नहीं किसी को
इस दूसरे सत्य में शिष्यत्व की सम्भावना नहीं थी क्या...
ना कोई विजयी भाव
फिर शायद बौद्ध मतावलंबियों को भी
इस दूसरे सत्य की भनक रही हो
गुरु परलोक सिधार गए
अपने साथ वह दूसरा सत्य लेकर
कि जोशीमठ डूबेगा...उनके आप्त वचनों में
नहीं था उन दोपहरियों का निदाघ
जिनमें डायनामाइट की थाप पर
जोशीमठ की डूब होगी...

उन रात्रियों की वेदना जब
भूमि पर दरारें कड़केंगी और
बींध जाएंगी बस्तियों को

पर सत्य तो था ही
आदि प्रवर्तक ने नहीं कहा तो क्या

सभ्यता विकसित हुई
गुरु के उस सत्य ओट कर के
जिसे उन्होंने देखा था...पर कहा नहीं था...

अधूरे सत्य ने पंथों को जन्म दिया
पंथ मठों में पथरा गए

मठों पर बिराजे मठाधीश
मठाधीशों के आगे बिछ गए अनुयायी
और अनुयायियों ने
गुरु की झिझक पर नगर-तीर्थ बना दिए!

वह भय जो कुछ वेदांती-कुछ बौद्ध दोनों था
कि जोशीमठ डूबेगा...
डूब गया एक मूर्ख आत्मविश्वास के तले

धर्मों ने इस तरह समय-समय पर
अपने हिस्से के सत्य तो कहे
पर अपनी आशंकाएँ छुपा ले गए

धर्म बिना संदेह के महज आस्था था
जोशीमठ आस्था की राह में पड़ने वाला एक पड़ाव

फिर भी सत्य था, तो उसे गुरु अपने साथ तो नहीं ले जा सकते थे
सो उसकी पुड़िया बनाकर
एक भोटिया तिजारती के झोले में डाल दिया!

भोटिया से उसे
एक तिब्बती लामा ने कोई दुर्लभ जड़ी-बूटी
जानकर कर खरीदा
और अपने देस ले गया
जब उसके मठ के अन्य लामाओं ने
उस दुर्लभ सी दिख रही चीज को सूंघा
उन्हें सुनाई पड़ा
कि कारकोरम, पामीर और किलियाँ के पहाड़ भी डूबेंगे!
और वे सन्नाटा खा गए

उन लामाओं ने तुरन्त उस सत्य को
आचार्य रिंपोछे यानी गुरु पद्मसंभव के चरणों पर
छोड़ आने के लिए कहा

यह सत्य कि जोशीमठ डूबेगा
उन्हें एक नए संघात के साथ प्रतिध्वनित हुआ था
जैसे तरंग कटोरी से टंकृत होता हुआ

जोशीमठ डुबोया जाएगा!!
जोशीमठ डुबोया जाएगा!!

ठीक उस वक्त जब पद्मसंभव के चरणों पर
उस सत्य का चढ़ावा हो रहा था
रिवालसर तीरे बैठे थे भाऊ चन्द्रकीर्ति जाधव
बाबा साहब के बुद्ध को ढूँढते-ढूँढते महायान की गलियों में
कहीं खो से गए थे

लम्बे समय तक
घनघोर उपेक्षाएँ झेलने के बाद
अब घर जाने को थे...

जाते-जाते सोचा भाऊ चन्द्रकीर्ति जाधव ने
क्यों ना गुरु के पास से कोई स्मृति-चिह्न लेता चलूँ
कोई चिन्हानी-कोई प्रतीक...
वो धर्म जो आश्रय ना दे सका...ना अपनेपन का भाव
पर कहीं ना कहीं प्रेरणा तो रहा ही है
उनकी अपनी...उनके भीम की
उन्होंने पद्मसंभव के चरणों से
पुड़िया में फड़फड़ाता वो सत्य उठाया
और महायान को सलाम ठोंक कर
नवयान के पास विदर्भ लौट पड़े

खचाखच भरी रेलगाड़ी में
खिड़की से बाहर देख रहे
भाऊ चन्द्रकीर्ति जाधव ने धुंआई और मोटे पेण्ट से पुती
लोहे की छड़ों के पार जब विदर्भ की दाहती धरती को
देखा

उनकी आँखों में आँसू नहीं आए,
ताप वलयें उठीं!
भट्टे से निकली ईंट जैसा उनका तमतमाता मुख
उस अस्ताचलगामी से मुखातिब था
तभी उन्हें अपनी काली बण्डी की बाईं जेब में
कुछ महसूस हुआ
हाँ, वह पुड़िया जो वे पद्मसंभव के चरणों से उठा लाए थे

उनके खुरदुरे स्पर्श से पुड़िया कुछ सिहरी
और उसने वह सत्य बक दिया जो उसके
अंदर गुड़मुड़ाया हुआ सो रहा था

सत्य क्या था

यह क्षिति पावक में भस्म होगी!
विदर्भ की धरती फटेगी!

पर यह कोई खुलासा नहीं था
भाऊ चन्द्रकीर्ति जाधव के लिए
बल्कि उन्हें तो इस सत्य के पीछे का सत्य
कि यह धरणी हव्य बनेगी!!
पहले से पता था...

उन्होंने उस पुड़िया को
हवा में सिरा दिया...
सिरा क्या दिया जैसे लुटा दिया
यह एक कोरा सत्य था उनके लिए
गुरु पद्मसंभव से उन्हें
इससे ज्यादा चाहिए था कुछ...

ओंगोल के तटवर्ती शहर से आए
विदर्भ की तृषित भूमि पर भटक रहे
अबू-असलम के नमक से पपरियाए माथे पर
वह पुड़िया खुलकर यूँ चिपक गई
जैसे कोई इश्तेहार हो!

ट्रेन की मथित-उत्थित हवा में चक्कर खाती

वह पुड़िया बलखाती
भाऊ चन्द्रकीर्ति जाधव की
प्राचीन उँगलियों से निकल कर
अबू असलम की पेशानी पर चस्पाँ हो गई थी!

वक्त बीता कि सपना था
पर नमक की लकीरों से बात करते उस सत्य ने
अबू-असलम की पेशानी से कहा
मछलीपत्तनम-विशाखापत्तनम में भूचालती लहरें
किनारे लील जाएंगी!
और इतना ही नहीं
गड़गड़ाते-ट्रॉलर और समुद्र का सीना दलते जहाज
सोख लेंगे वो मीन सम्पदा जिसके
मुस्तफीद और सरपरस्त दोनों
अबू-असलम के दादा-परदादा रहे आए हैं!!
यह सुनना ना था, कि अबू-असलम को
अमीना की बात याद हो आई
जो सदा कहा करती थी
ये मछलियाँ, पसलियाँ हैं लहरों की
जैसे-जैसे कम होंगी
खत्म होता जाएगा लहरों का रसाव

बेकाबू लहरें खदेड़ देंगी हमें
मुल्क के भीतर...और भीतर
जहाँ खुद मछलियाँ होंगे हम...तड़पती-भटकती, अंतर्धाराओं से
सतह पर आकर उथलाई हुई मछलियाँ!
अबू-असलम, नहीं, अबू-असलम कंस्ट्रक्शन मजदूर ने
एक तटीय आह भरी
और पसीने में गल रही उस पुड़िया को
जमीन पर गिरा दिया
जमीन पर धीमे-धीमे उतरती उस पुड़िया के पार्श्व में
उसने देखी अपनी पिंडलियाँ, जिनसे वह मछलियाँ गायब थीं
जिनको उसकी बीवी ने जी-जान से प्यार किया था
थी तो बस चूने-गारे की
एक धूमिल सी लार

और वह टीसता हुआ सत्य,
'जोशीमठ डूबेगा' की एक और पराध्वनिक कोर
टूटेंगे कगार!
साहिल आत्मघात करेगा!!

सुना है वह पुड़िया
फिर सुंदरबन की बाघ-विधवाओं तक पहुँची
नेपाल की एक विकरालती झील के किनारे किसी दमाईं को मिली
कानपुर में मोहनलाल निषाद की
बिवाई पर चिपक गई
जब वे कीचड़-कहल गंगा से अपनी नाव निकाल रहे थे!

फिर बंबई की बाढ़ में, खैरपुर नाथन शाह में
घूमती रही वह-घूमती रही
घूमता रहा वह सत्य
और डूबता रहा जोशीमठ अपनी ही मिट्टी में!!

गुरु के नहीं बताए हुए सत्य के हिस्से का
मानचित्र है यह देश
धाम हैं-तीर्थ हैं
तीर्थयात्री-कल्पवासी-कारसेवक हैं
पर डूब रहे हैं तीर्थ,
भोगते हुए अपने तीर्थ होने का अभिशाप!

गड़ागड़ निकल रही हैं कारें, पहुँच रहे हैं हवाई जहाज
सीधे दर्शन को, सीधे प्रभु से मुखातिब, वीआईपी दर्शन की लालसा लिए
और विशाल-खस्ताहाल गैरेजों में बदल रहे हैं
तमाम-तमाम जोशीमठ!
उस सत्य को
सलीब की तरह पहने हुए जिसे अगर
आदिगुरु पूरा-पूरा कह देते
तो वह पारिस्थितिक होता
धार्मिक नहीं!

सभ्यता की कामना में थे

या शास्त्रार्थ के मोह में
शायद भूल गए थे गुरु
तीर्थ सुलभ होता जाएगा!
सत्य धुँधला और भक्त उतावले!

कैमरे पहुँच जाएंगे गुफाओं में!
चोटियों पर बनेंगे हेलीपैड!
सीमाएँ खिंच जाएंगी धरती के सीने पर!
सड़कों और सुरक्षा का कारोबार फूलेगा-फलेगा!

उनके कहे हुए सत्य से दुई के
सैकड़ों बिलबिलाते कीड़े निकल कर आएंगे
और चाट जाएंगे प्रबोधन की सभी संभावनाओं को!!

पता नहीं गुरु अपने कहे हुए सत्य की नियति
जानते थे या नहीं
पर उस नहीं कहे हुए सत्य के सामने
पहले की
निस्सारता क्या छुपी रही होगी उनसे?

क्या पता देख लिया हो उन्होंने
कि यह छुपा हुआ सत्य धर्मगुरु नहीं
वे ही जानेंगे जो इसे वहन करेंगे
सभ्यता को हॉण्ट करते वे प्रेत
जो समाज और जंगल के बीच रहते आए हैं

जो जानते रहे हैं हमेशा से,
वे लामा,
वे चन्द्रकीर्ति जाधव,
वे अबू-असलम,
की
कुछ भी नहीं डूबता खुद से
कुछ भी टूटता-जलता-दरकता-चित्थाड़ नहीं होता
किसी नियम के तहत
निर्दोष नहीं होता नदियों का सूखना
जंगलों का दावानलों की भेंट चढ़ जाना

धरती के काँप-काँप उठने में भी
सिर्फ धरती की मर्जी नहीं होती!!

जोशीमठ डूब रहा है
डूब रही हैं वे तमाम-तमाम जगह
जिन पर समय-समय पर सत्य की डींग हुई थी!

कभी धर्म-
कभी सत्ता-
कभी विज्ञान
के ठौर बने थे जहाँ!

जोशीमठ डूब रहा है
जैसे चेर्नोबिल में नाभिकीय विध्वंस हुआ था!

जोशीमठ डूब रहा है जैसे
हिरोशिमा-नागासाकी पे
बम गिरे थे!

इस डूबने में शंघाई और दिल्ली की
हवा की गंध है!

इस डूबने में श्रीलंकाई समुद्र पर
तैर रहे तेल की लसलाहट है!

गुरु का नहीं कहा हुआ सत्य
अब उजागर हो चुका है!

जाने-बूझे-अन्वेषित-प्राप्त किए सभी सत्य-सारा विवेक
अब उसके सामने फीके
बहुत फीके पड़ते जा रहे हैं!

डॉ. सौम्य मालवीय
सहायक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल
भा.प्रौ.सं. मंडी

पिता की सीख

जब मेरे मन में बाहर पढ़ने का ख्याल आया
तो मैंने अपना यह विचार पापा को बतलाया।

तो उन्होंने पूछा कि
बाहर क्यों जाना चाहता है
तो इस छोटे से दिल से बस यही निकला
कि ये दिल कुछ बड़ा करना चाहता है।

पर आखिर करना क्या चाहता है
ये तो उनके लिए अभी भी सवाल था।
हम बता भी सकते थे
पर हमें अपनी अनिश्चितता का ख़्याल था।।

तो वो बोले जो करना है वो करो
पर उससे पहले मेरी कुछ बात सुनो।।

मेरे बेटे!
यदि तुम चाहते हो सफल होना
तो सबसे पहली बात
अपने अंदर कोई बुरी आदत ना लगाना।

मेरे बेटे!
वहाँ तेरा कोई अपना नहीं होगा जो तुझे देखेगा।
वहाँ तू अपने विवेक से जीवन जीयेगा।।

मेरे बेटे!
अपनी मेहनत में तू कभी कमी मत छोड़ना।
और परिणाम के लिए कभी परेशान मत होना।।

मेरे बेटे!
और यदि कभी परिणाम तेरे अनुकूल न हो
तो भी तू कभी हिम्मत मत हारना।

मेरे बेटे!
यदि कभी निराश होकर तेरे मन में
जीवन छोड़ने का ख्याल आये।
तो एक बार शांत मन से
हमारे बारे में सोचना।।

मेरे बेटे!
तू कभी व्यर्थ में जीवन मत त्यागना।
तू अपने सपनों को जीना।।

मेरे बेटे!
और जब सारी दुनिया तेरे खिलाफ हो जाए
तो एक बार तू मेरी ओर देखना
मैं हमेशा तेरे साथ मिलूँगा।।

और अंत में सिर्फ इतना कि
मेरे बेटे!
मैं अपना कर्म करूंगा।
तू अपना कर्म करना।।

सुदामा बाबू सिंघल
छात्र, एमएससी व्यावहारिक गणित, भा.प्रौ.सं. मंडी

आन बान और शान

आन बान और शान है,
तिरंगा ही पहचान है,
बाजुओं में जो जोश भरे,
वो प्यारा हिन्दुस्तान है!!

देश का शौर्य वो,
हर पल है बता रहा,
शान से तिरंगा अपना,
हर घर में लहरा रहा!!

गगन चुंबन करता हुआ,
तिरंगा है फहरा रहा,
मन में शांति, तन में उमंग,
गर्वानुभूति करवा रहा!!

भावनाओं के उद्वेग में,
कुछ समझ न आ रहा,
कविता के लिए सिर्फ एक शब्द,
हिन्दुस्तान जबाँ पर आ रहा!!

देशप्रेम से हो ओत-प्रोत,
भारत माँ का वंदन करते हैं,
की जिन्होंने जान न्यौछावर,
उन वीरों को नमन करते हैं!!

मन के हमारे ज्ञान चक्षु,
आज भी फरियाद करते हैं
लौट आओ भगत, शेखर, बोस
हम सब आपको याद करते हैं!!
लक्ष्मीबाई के जज्बे को,
हम दिल से सलाम करते हैं,
तिलक, पटेल, बिस्मिल की सौम्यता को,
नित नमन हो प्रणाम करते हैं!!

सुखदेव, राजगुरु, बिरसा के शौर्य का,
रोज हम बखान करते हैं,
आजादी के जननायक मंगल पाण्डेय का,
हम दिल से सम्मान करते हैं!!

कंधों पर देश की जिम्मेदारी ले,
विश्वगुरु स्वप्न साकार करते हैं,
शहीदों को याद करके 'हेमन्त',
देश विरोधी ताकतों का बहिष्कार करते हैं!!

विकास में हो अपनी भागीदारी,
काम असरदार करते है,
15 अगस्त के बाद भी सम्मान हो ध्वज का,
ऐसे हम जिम्मेदार बनते हैं!!

–हेमन्त लाटा
एमएससी रसायन शास्त्र, भा.प्रौ.सं. मंडी
कोर टीम सदस्य : राइटिंग क्लब, भा.प्रौ.सं. मंडी

दो ग़ज़लें

कैद क्या है? आज़ाद क्या है!
नज़र का खेल है, खिलौना है।

सोया है टाट पर भी, बादशाह कोई।
साहब को नींद नहीं है, पर बिछौना है।

रेत को मुट्ठी में लेना छोड़ दूँ, बस।
थार लंबा है, हाथ बौना है।

घड़े की कारीगरी समझनी है।
मेरे आँगन की मिट्टी सोना है।

वो है बीमार, फिर भी उठ के खीर बनाती है।
अब समझ आया, माँ मीठा कहाँ से लाती है।

मैं था बीमार, तो दौड़ के घर को आया था।
है माँ बीमार, वो कौन से घर को जाती है??

पापा कहते हैं, घर पर काम ही क्या करती हो तुम??
उनको कहना था। माँ खण्डहर को घर बनाती है।

मुझे गुरूर था, मैंने काफी किताबें पढ़ लीं!
पर मेरे कमरे का बल्ब, वो अपनी उम्र से जलाती है।

–हिमांशु पन्त
शोधार्थी
भौतिक विज्ञान स्कूल
भा.प्रौ.सं. मंडी

किस्सा

बैठा रहा इक तरफ मैं
वो इंतजार में पड़ी रही
मैं उसके सहारे डटा रहा
वह मुझको ताके खड़ी रही
एक खामोशी मैं सिलता रहा
वह भाप सी पिघलती गई
मैंने बहुत देर न देखा उसको
वह धीमे से रंग बदलती रही

मेरा जहाँ चिरागों से रौशन
उसका दामन कुछ अंधेरा था
मैं अपने मान में अड़ा रहा
भूल बैठा कि वही तो एक मेरा था
आख़िर फेरकर नज़रें अपनी
हमने उस पर हाथ सहलाया
फीका पड़ा बदन था उसका
पर मिलाकर नज़रें वह मुस्कुराया
थोड़ा पछताता खुद को मैं खुद से
फिर उसको चाव से उठाया
लगाकर होंठों से, हुए चूर महल मेरे मान के
जिन्हें बड़ी शिद्दत से था मैंने सजाया
"मैं घमण्डों में ऐंठा करता रहा नज़र अंदाज तुझे
मगर तू फरिश्ता है जो सारा सफ़र साथ निभाया"
न है यह कोई कुंठित प्रेमी
न पीड़ित किसी सताए का
यह तो किस्सा है जो सुनाया मैंने
मेरा, मेरी ठंडी पड़ी चाय का।

–भूपेन्द्र सिंह
निवासी मंडी

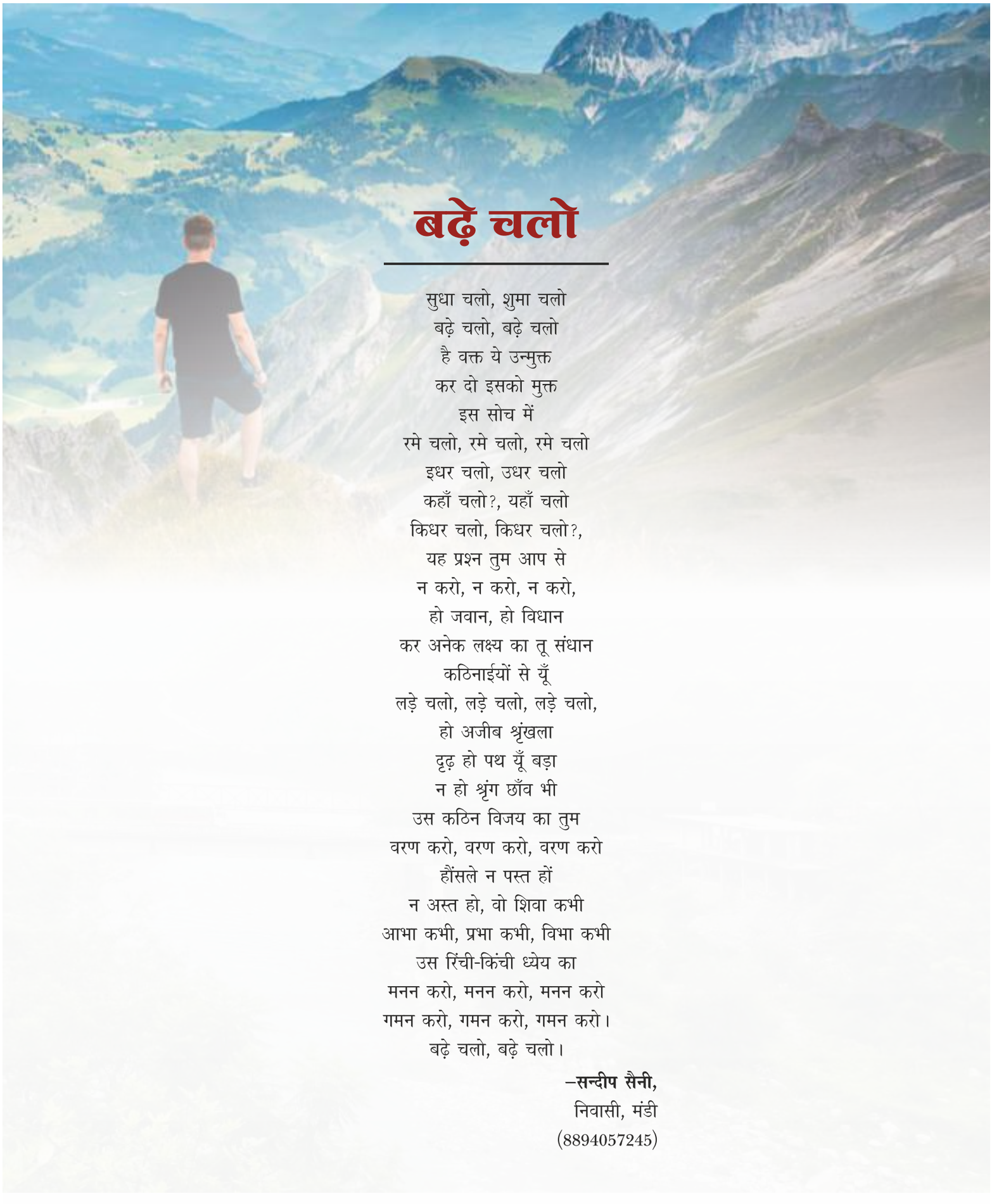

बढ़े चलो

सुधा चलो, शुमा चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो
है वक्त ये उन्मुक्त
कर दो इसको मुक्त
इस सोच में
रमे चलो, रमे चलो, रमे चलो
इधर चलो, उधर चलो
कहाँ चलो?, यहाँ चलो
किधर चलो, किधर चलो?,
यह प्रश्न तुम आप से
न करो, न करो, न करो,
हो जवान, हो विधान
कर अनेक लक्ष्य का तू संधान
कठिनाईयों से यूँ
लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो,
हो अजीब श्रृंखला
दृढ़ हो पथ यूँ बड़ा
न हो श्रृंग छाँव भी
उस कठिन विजय का तुम
वरण करो, वरण करो, वरण करो
हौंसले न पस्त हों
न अस्त हो, वो शिवा कभी
आभा कभी, प्रभा कभी, विभा कभी
उस रिंची-किंची ध्येय का
मनन करो, मनन करो, मनन करो
गमन करो, गमन करो, गमन करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

–सन्दीप सैनी,
निवासी, मंडी
(8894057245)

हाय सरकार!

जनता जनादेश जनहित का
लेकर प्रखर आधार
जन-जन हर जनमानस से
बहु अर्जित कर वो प्यार
अरसों बाद यह कृपा हुई
जो मत का मिला अधिकार
हृदय कमल मन गदगद भए
सुन प्रतिनिधियों के नेक विचार
हाय सरकार! हाय सरकार!

आम जनमानस से उभर आए जो
फिर निभाने सत्ता किरदार
झगड़ा भूख गरीबी भ्रष्टता का
करने चले वह देखो संहार
रोचक नुस्खों, नवीन वादे, मजबूत इरादे लेकर
बना देते उम्मीद के नए संसार
बिना लपट की मशाल उठाए
हर चौराहे का वह मिटाते अंधकार
हाय सरकार! हाय सरकार!

अब से न कोई रोना सूखे का रोएगा
ना झुग्गीवाला बिना कपड़े कभी भूखा सोएगा
राजपुरुषों के भव्य छायाचित्रों से भरा पड़ा अख़बार
जनमानस की दलील छपाने न बना कागज़ी आकार
संविधान के मुखपृष्ठ पर आभा लोकतंत्र की आती है
तिमिर में पन्ने रौंदे जाते, धारा जो भी सत्ता पाती है
चार सौ बार गिना देते वह किए काम जो चार
भरी निगाहें जेबें खाली बस ताकती जनता लाचार
हाय सरकार! हाय सरकार!

सालों बाद नायक जो रूबरू हुए
जताने जमघट का आभार
पुष्प मालाओं में डूबी शिरोधारा उनकी
जुड़े उठते हाथ इनके, झुकते रहते बारम्बार
"हम जनता के सेवक है।" कहकर
मिल जाता जनसेवा का उपहार
राजगद्दी पर अपना पाँव धरते ही
भूल जाते वह जन उपकार
वाह सरकार! वाह सरकार!

इस दल ने शेखी बघाड़ी
सुना उस दल का भी विचार
अंधों बहरों की दौड़ में फलता
यह शासन पद्धति का बाजार
या तो कोई चमत्कार हो जाए
या हरि विष्णु स्वयं धरो अवतार
इस कोरे कागज़ पर बाण चलाता
सुर्ख : जनदूत रचनाकार ये बेरोजगार
हाय सरकार! हाय सरकार!

–सतीश कुमार (भबु)
निवासी मंडी

मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको

अदम गोंडवी

आइए महसूस करिए जिन्दगी के ताप को
मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको

जिस गली में भुखमरी की यातना से ऊब कर
मर गई फुलिया बिचारी एक कुएँ में डूब कर

है सधी सिर पर बिनौली कंडियों की टोकरी
आ रही है सामने से हरखुआ की छोकरी

चल रही है छंद के आयाम को देती दिशा
मैं इसे कहता हूँ सरजूपार की मोनालिसा

कैसी यह भयभीत है हिरनी-सी घबराई हुई
लग रही जैसे कली बेला की कुम्हलाई हुई

कल को यह वाचाल थी पर आज कैसी मौन है
जानते हो इसकी खामोशी का कारण कौन है

थे यही सावन के दिन हरखू गया था हाट को
सो रही बूढ़ी ओसारे में बिछाए खाट को

डूबती सूरज की किरनें खेलती थीं रेत से
घास का गट्ठर लिए वह आ रही थी खेत से

आ रही थी वह चली खोई हुई ज़ज्बात में
क्या पता उसको कि कोई भेड़िया है घात में

होनी से बेखबर कृष्णा बेखबर राहों में थी
मोड़ पर घूमी तो देखा अज़नबी बाहों में थी

चीख निकली भी तो होठों में ही घुट कर रह गई
छटपटाई पहले फिर ढीली पड़ी फिर ढह गई

दिन तो सरजू के कछारों में था कब का ढल गया
वासना की आग में कौमार्य उसका जल गया

और उस दिन ये हवेली हँस रही थी मौज में
होश में आई तो कृष्णा थी पिता की गोद में

जुड़ गई थी भीड़ जिसमें जोर था सैलाब था
जो भी था अपनी सुनाने के लिए बेताब था

बढ़ के मंगल ने कहा काका तू कैसे मौन है
पूछ तो बेटी से आखिर वो दरिंदा कौन है

कोई हो संघर्ष से हम पाँव मोड़ेंगे नहीं
कच्चा खा जाएँगे जिन्दा उनको छोड़ेंगे नहीं

कैसे हो सकता है होनी कह के हम टाला करें
और ये दुश्मन बहू-बेटी से मुँह काला करें

बोला कृष्णा से बहन सो जा मेरे अनुरोध से
बच नहीं सकता है वो पापी मेरे प्रतिशोध से

पड़ गई इसकी भनक थी ठाकुरों के कान में
वे इकट्ठे हो गए थे सरचंप के दालान में

दृष्टि जिसकी है जमी भाले की लम्बी नोक पर
देखिए सुखराज सिंग बोले हैं खैनी ठोंक कर

क्या कहें सरपंच भाई क्या जमाना आ गया
कल तलक जो पाँव के नीचे था रुतबा पा गया

कहती है सरकार कि आपस मिलजुल कर रहो
सुअर के बच्चों को अब कोरी नहीं हरिजन कहो

देखिए ना यह जो कृष्णा है चमारों के यहाँ
पड़ गया है सीप का मोती गँवारों के यहाँ

जैसे बरसाती नदी अल्हड़ नशे में चूर है
हाथ न पुट्ठे पे रखने देती है मगरूर है

भेजता भी है नहीं ससुराल इसको हरखुआ
फिर कोई बाँहों में इसको भींच ले तो क्या हुआ

आज सरजू पार अपने श्याम से टकरा गई
जाने-अनजाने वो लज्जत जिंदगी की पा गई

वो तो मंगल देखता था बात आगे बढ़ गई
वरना वह मरदूद इन बातों को कहने से रही

जानते हैं आप मंगल एक ही मक्कघर है
हरखू उसकी शह पे थाने जाने को तैयार है

कल सुबह गरदन अगर नपती है बेटे-बाप की
गाँव की गलियों में क्या इज्जत रहेगी आपकी

बात का लहजा था ऐसा ताव सबको आ गया
हाथ मूँछों पर गए माहौल भी सन्ना गया था

क्षणिक आवेश जिसमें हर युवा तैमूर था
हाँ, मगर होनी को तो कुछ और ही मंजूर था

रात जो आया न अब तूफान वह पुर जोर था
भोर होते ही वहाँ का दृश्य बिल्कुल और था

सिर पे टोपी बेंत की लाठी संभाले हाथ में
एक दर्जन थे सिपाही ठाकुरों के साथ में

घेरकर बस्ती कहा हलके के थानेदार ने -
'जिसका मंगल नाम हो वह व्यक्ति आए सामने'

निकला मंगल झोंपड़ी का पल्ला थोड़ा खोलकर
एक सिपाही ने तभी लाठी चलाई दौड़ कर

गिर पड़ा मंगल तो माथा बूट से टकरा गया
सुन पड़ा फिर 'माल वो चोरी का तूने क्या किया'

'कैसी चोरी, माल कैसा' उसने जैसे ही कहा
एक लाठी फिर पड़ी बस होश फिर जाता रहा

होश खोकर वह पड़ा था झोंपड़ी के द्वार पर
ठाकुरों से फिर दरोगा ने कहा ललकार कर -

"मेरा मुँह क्या देखते हो! इसके मुँह में थूक दो
आग लाओ और इसकी झोपड़ी भी फूँक दो"

और फिर प्रतिशोध की आँधी वहाँ चलने लगी
बेसहारा निर्बलों की झोंपड़ी जलने लगी

दुधमुँहा बच्चा व बुड्ढा जो वहाँ खेड़े में था
वह अभागा दीन हिंसक भीड़ के घेरे में था

घर को जलते देखकर वे होश को खोने लगे
कुछ तो मन ही मन मगर कुछ जोर से रोने लगे

"कह दो इन कुत्तों के पिल्लों से कि इतराएँ नहीं
हुक्म जब तक मैं न दूँ कोई कहीं जाए नहीं"

यह दरोगा जी थे मुँह से शब्द झरते फूल से
आ रहे थे ठेलते लोगों को अपने रूल से

फिर दहाड़े, "इनको डंडों से सुधारा जाएगा
ठाकुरों से जो भी टकराया वो मारा जाएगा

इक सिपाही ने कहा, "साइकिल किधर को मोड़ दें
होश में आया नहीं मंगल कहो तो छोड़ दें"

बोला थानेदार, "मुर्गे की तरह मत बाँग दो
होश में आया नहीं तो लाठियों पर टाँग लो

ये समझते हैं कि ठाकुर से उलझना खेल है
ऐसे पाजी का ठिकाना घर नहीं है, जेल है

पूछते रहते हैं मुझसे लोग अक्सर यह सवाल
"कैसा है कहिए न सरजू पार की कृष्णा का हाल"

उनकी उत्सुकता को शहरी नग्नता के ज्वार को
सड़ रहे जनतंत्र के मक्कार पैरोकार को

धर्म संस्कृति और नैतिकता के ठेकेदार को
प्रांत के मंत्रीगणों को केंद्र की सरकार को

मैं निमंत्रण दे रहा हूँ—आएँ मेरे गाँव में
तट पे नदियों के घनी अमराइयों की छाँव में

गाँव जिसमें आज पाँचाली उघाड़ी जा रही
या अहिंसा की जहाँ पर नथ उतारी जा रही

हैं तरसते कितने ही मंगल लंगोटी के लिए
बेचती है जिस्म कितनी कृष्णा रोटी के लिए!